

श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित  
सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ संलग्न (पी.यू./पी.एन./ए.सी./१८९-२००२)



## शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय

रामचंद्र पाटील औटी कनिष्ठ महाविद्यालय

| कला | वाणिज्य | विज्ञान |

डुडुळगाव (आळंदी), जि. पुणे.



नट नाट्य कळाकुसरी  
नाना छंदे नृत्य करी  
टाळ मृदंग सभोवती  
उपांग तो हुंकारे!

ऐसा सर्वांगे सुंदरु  
सकळ विद्यांचा आगरु  
त्यासी माझा नमस्कारु  
साष्टांग भावे...!

विद्यार्थ्यांच्या सुप्त गुणांना उजळविणारा

# ज्ञानदीप

स्मरणिका

२०१९-२०

व २०२०-२१

वर्ष : २० वे

अंक : १०-११



### संस्थेविषयी

|  |    |
|--|----|
| संस्थेची थोडक्यात ओळख व संस्थेचे ध्येय... धोरण -     | ६  |
| महाविद्यालयाची दृष्टी व धोरणे -                      | ७  |
| श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ : शाखा विस्तार | ८  |
| संस्थेची उद्दिष्टे + संपादकीय मंडळ -                 | १० |
| प्राचार्यांचे मनोगत डॉ. हंसराज थोरात                 | १२ |
| कार्यकारी संपादकाचे मनोगत डॉ. पांडुरंग मिसाळ         | १३ |

### शब्दप्रवाह (मराठी लेख)

|                                      |                     |    |
|--------------------------------------|---------------------|----|
| स्त्रीजन्म म्हणवुनि न व्हावे उदास    | प्रतिक्षा शिवरकर    | १६ |
| कोरोनामुळे शिक्षणाची दैना            | साक्षी चौधरी        | १८ |
| कोरोना व्हायरस                       | गणेश पठारे          | २२ |
| जग पुढे...शिक्षण मागे                | उमेश ढमाले          | २४ |
| विचार बदला                           | गौरी ठाकूर          | २४ |
| वाणिज्य मंडळे                        | वैष्णवी तावरे       | २५ |
| लेक लाडकी माहेरची                    | वेदांत घाडगे        | २६ |
| कोरोना : अस्तित्वाची नवी लढाई...     | वैभव वाघमारे        | २७ |
| कोरोनाचे परिणाम व उपाय               | राहुल गुप्ता        | २८ |
| वाणिज्य                              | अमोल कोथाळकर        | ३३ |
| मित्र                                | श्रीनिवास चौरे      | ३४ |
| कोरोना... एक मोठे संकट               | स्नेहा बोंबले       | ३५ |
| कोरोना : भारतीय संस्कृती आणि व्यवसाय | प्रथमेश बोटवे       | ३६ |
| ऑनलाईन बिनलाईन                       | गौरव बारी           | ३७ |
| कोरोना काळातील शिक्षण                | धनश्री वाजे         | ३८ |
| भटकी कुत्री                          | प्रज्वल कासार       | ३९ |
| कोरोना : एक मागोवा                   | सोनाली वाघमारे      | ४० |
| कोरोनाबद्दलचा... माझा अनुभव          | गौरी ताते           | ४१ |
| प्रगतशील शेतकरी                      | प्राजक्ता घोडके     | ४२ |
| नव्या प्रवासाचा आरंभ                 | गोपाल घुगे          | ४३ |
| मुलगी                                | स्वाती सगरे         | ४३ |
| प्रेम                                | राजू बाठे           | ४३ |
| पुन्हा येतील का ते दिवस....          | पुरुषोत्तम सुत्रावे | ४४ |
| कोरोनामुळे काय झाले?                 | संजीवनी मोरे        | ४५ |
| साधेपणा                              | लक्ष्मी रेचे        | ४६ |
| जीवन                                 | धिरज वहिले          | ४६ |
| आयुष्यातील ओळख                       | पूजा घुंडरे         | ४६ |
| सुंदर विचार                          | तेजस्विनी चव्हाण    | ४६ |



## शब्दफुलोरा (मराठी कविता)

|                       |                       |    |
|-----------------------|-----------------------|----|
| चहा की कॉफी           | मनिषा गरगटे           | ४८ |
| नजर                   | योगिता घुंडरे         | ४८ |
| रावण कोरोना           | साक्षी जगताप          | ४८ |
| व्यथा शेतकऱ्याची      | निलेश पगार            | ४८ |
| कोरोना आला घरी दारी   | आम्रपाली बवले         | ४८ |
| माणसातला माणूस        | निलेश शिंदे           | ४९ |
| हा माझा अंत नाही      | रोहित पवळे            | ४९ |
| जीवनाचे मोल           | अश्विनी कपले          | ४९ |
| आईची आठवण             | प्रा. करिष्मा सातपुते | ४९ |
| लेक                   | प्रिया रेड्डी         | ५० |
| बापाला बघितलं आहे का? | प्रेरणा शंभुदास       | ५० |
| कोरोना आणि माणूस      | श्वेता भांडवलकर       | ५० |
| कुणी नसतं कुणाचं      | अभिषेक भोसले          | ५१ |
| शाळा                  | साक्षी वहिले          | ५१ |
| दिली एक कऱ्या         | अंजली कांबळे          | ५१ |
| कोरोना                | पूजा घुंडरे           | ५२ |
| प्रेम                 | अश्विनी होले          | ५२ |
| जीवनाची चारोळी        | दैवशाला डोंगरे        | ५२ |
| आयुष्य                | पूनम शिरोडकर          | ५२ |
| यालाच प्रेम म्हणावं   | आकाश भडगावी           | ५२ |
| जगायचं असतं           | निकीता गावडे          | ५३ |
| आई बाबा               | राधिका वहिले          | ५३ |
| नशीब                  | योगिता गावडे          | ५३ |
| प्रेम कुणावर करावे    | कांचन तुपे            | ५३ |
| मैत्रीचे नाते         | ज्ञानेश्वर गवळी       | ५४ |
| हे जग कोरोनाचे        | प्रतिभा शेळके         | ५४ |
| पंढरीची (कोरोना) वारी | ज्ञानेश्वर पागिरे     | ५४ |
| कोरोनाला इशारा        | नम्रता ठाकूर          | ५५ |
| कोरोनाबरोबर युद्ध     | तुषार टाले            | ५५ |
| कोरोना विषाणू         | तन्वी कुन्हाडे        | ५५ |
| कोरोनाच्या राज्यात    | तेजल चव्हाण           | ५६ |
| कोरोना                | गणेश रेड्डी           | ५६ |
| मायलेक                | प्रिया झाल्टे         | ५६ |
| सुंदर विचार           | मनिषा गरगटे           | ५६ |
| आयुष्य                | प्रतिक्षा बवले        | ५७ |



### शब्दफुलора (मराठी कविता)

|                   |                |    |
|-------------------|----------------|----|
| ध्येय             | ऋतुजा संगवे    | ५७ |
| काय रे.... कोरोना | वैष्णवी घोरपडे | ५७ |
| हवं तसं           | वैष्णवी पाटील  | ५७ |
| लढाई              | ऋतुजा संगवे    | ५७ |
| माणूस कधी शिकंल?  | दिव्या गरुड    | ५८ |
| माझे कॉलेज        | वैशाली जाधव    | ५८ |
| ऑनलाईन            | लक्ष्मी रेचे   | ५८ |
| माझं अस्तित्व     | शिवानी इंगोले  | ५८ |
| कोरोनाला हरवा     | अमोल कोथाळकर   | ५९ |
| Thank You Google  | स्नेहल भोईर    | ५९ |
| कोरोनाशी युद्ध    | बळवंत मोरे     | ५९ |
| ऑनलाईन शाळा       | गोपाल घुगे     | ५९ |
| आई                | शितल काकडे     | ५९ |

### शब्दबूंद (हिंदी लेख)

|                               |              |    |
|-------------------------------|--------------|----|
| जिंदगी और कोरोना              | दिनेश उकाते  | ६१ |
| कोरोना वायरस                  | उन्नती खोंड  | ६२ |
| कोरोना पर भारतवासियों का ऐलान | मुकेश चव्हाण | ६२ |

### हिंदी कविता विभाग

|                     |                  |    |
|---------------------|------------------|----|
| शहीद का संदेश       | आकाश भडगावी      | ६३ |
| भारतीय सेना         | सोनाजी टिळेकर    | ६३ |
| माँ-बाप             | हर्षवर्धन खुटवड  | ६३ |
| अदृश्य कोरोना       | छाया आरण         | ६३ |
| जीवन की सच्ची बातें | सुप्रिया यादव    | ६३ |
| मेरा कॉलेज          | सौरभ धांडेकर     | ६४ |
| एक पिता का संदेश    | प्रसाद भोळे      | ६४ |
| चार लाईनें          | प्रतिक्षा शिवरकर | ६४ |
| अग्निपथ             | हरिवंशराय बच्चन  | ६४ |

### द वर्ड रेन (इंग्रजी लेख)

|                                      |                     |    |
|--------------------------------------|---------------------|----|
| Journey of Discovering Me :          |                     |    |
| While Knowing Me                     | Sonal Sonawane      | 66 |
| Good Thoughts                        | Prof. Prerana Patil | 66 |
| India Fight Against Covid-19         | Prathamesh Swami    | 66 |
| What Quarantine has Made Me Realize? | Harshada Jambhale   | 67 |
| Incredible India                     | Rohini Mahadik      | 68 |
| Let's Come TOGETHER                  | Dinesh Ukate        | 69 |
| The Magical bottle                   | Ashwini Wagh        | 70 |
| A Mother Amidst Chaos                | Kinny Gupta         | 71 |
| International Yoga Day               | Ashwini Wagh        | 72 |

# I N D E X

|  |                 |    |
|--|-----------------|----|
| Growing Friendship                         | Laxmi Reche     | 72 |
| About Friends                              | Shrinivas Coure | 72 |
| Importance of Motivation                   | Rutuja Patil    | 72 |
| Life Analysis of Young Generation          |                 |    |
| FROM REEL TO REAL.                         | Hrushikesh Raut | 73 |
| COVID-19's Effects on Students             | Aarti Jaiswal   | 74 |
| Effects of COVID-19 Pandemic in Daily Life | Sahil Pathan    | 75 |
| Lockdown at Home                           | Yash Gore       | 75 |

## इंग्रजी कविता विभाग

|                                      |                   |    |
|--------------------------------------|-------------------|----|
| I call Him Dad....                   | Anuja Alhat       | 76 |
| Love                                 | Divyanshu Bhatiya | 76 |
| Nature Trail                         | Karan Gawade      | 76 |
| Life                                 | Rohan Shinde      | 76 |
| Oh Mother....                        | Ujwla Kathale     | 76 |
| My Teacher                           | Ashwini Kapale    | 76 |
| Quarantine                           | Roshani Pagar     | 77 |
| What is Maturity ?                   | Prathamesh Botwe  | 77 |
| The Key To My Mind                   | Shrinivas Choure  | 77 |
| My Little Brother                    | Vinayak Bharti    | 77 |
| We                                   | Neetu Sharma      | 77 |
| Hope                                 | Neetu Sharma      | 77 |
| 10 Lessons from Rich Dad to Poor Dad | Hrushikesh Kale   | 77 |
| Love                                 | Neha Tamboli      | 77 |
| Corona is Waiting Outside            | Rakesh Mali       | 78 |
| Money Can not Buy Man                | Laxmi Reche       | 78 |
| Corona Time I Saw                    | Amita Vasave      | 78 |

|                           |                |    |
|---------------------------|----------------|----|
| विविध समित्या व पदाधिकारी | - श्रेयनामावली | ८० |
|---------------------------|----------------|----|

## वार्षिक अहवाल

|  |                           |          |
|--|---------------------------|----------|
| विविध समित्यांचे वार्षिक अहवाल                     | - समित्यांचे प्रमुख       | ८१ ते ८७ |
| शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी                      | -                         | ८८       |
| विविध स्पर्धा व विजेते                             | -                         | ८९       |
| परीक्षांचे निकाल                                   | -                         | ९० ते ९२ |
| टॉपर्स   | -                         | ९३ ते ९९ |
| राज्यस्तरीय ऑनलाईन ज्ञानविलास वक्तृत्व स्पर्धा     | -                         | १००      |
| राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या उपक्रमांची सचित्र झलक     | - विभागप्रमुख             | १०२      |
| संस्थेच्या वाटचालीची क्षणचित्रे व 'अंतरंग' महोत्सव | - संस्था छायाचित्रण विभाग | १०४      |
| संस्थेच्या विविध उपक्रमांचे वृत्तपत्रीय प्रतिबिंब  | - संस्था प्रसिद्धी विभाग  | १०६      |
| पसायदान  | - संत ज्ञानेश्वर माऊली    | १०८      |

सदर नियतकालिकातील मते व विचार प्रत्येक लेखकाचे व्यक्तिगत असून प्रकाशक, संपादक, महाविद्यालय अथवा संस्था त्यास सहमत असेलच असे नाही. हा अंक खासगी वितरणासाठी आहे.



## संस्थेची थोडक्यात ओळख व उद्दिष्ट्ये

डुडुळगाव (आळंदी)सारख्या तीर्थक्षेत्राच्या परिसरात शैक्षणिक वर्ष २००२ मध्ये शिक्षणमहर्षि स्व. विलासराव तांबे यांनी या महाविद्यालयाची स्थापना केली. महाराष्ट्र शासन तसेच सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाची मान्यता मिळाल्यानंतरच कामकाज सुरु केले गेले. त्यामुळे संस्थेविषयी सुरुवातीपासूनच पालकांच्या मनामध्ये विश्वास निर्माण झाला.

हे महाविद्यालय कायमस्वरूपी विनाअनुदानित असल्याने कोणतीही शासकीय मदत नसताना महाविद्यालयाने शैक्षणिक वाटचाल यशस्वीरित्या सुरु ठेवली आहे. मोजक्या विद्यार्थ्यांना सोबत घेऊन सुरु झालेल्या या महाविद्यालयाने आता २० व्या वर्षात पदार्पण करित असताना सुमारे २६००+ विद्यार्थी संख्येचा टप्पा गाठला आहे. संख्यात्मक वाढीपेक्षा त्यासोबतच गुणात्मक वाढ होण्यावरही संस्थेने भर दिल्याने महाविद्यालय आज आघाडीवर आहे. विद्यार्थ्यांना दर्जेदार शिक्षण देतानाच त्यांच्या सर्वांगीण विकासाला चालना देण्याचे कामही केले जाते. क्रीडा स्पर्धा, स्नेहसंमेलन इत्यादींच्या माध्यमातून एक हक्काचे व्यासपीठ विद्यार्थ्यांना उपलब्ध करून दिले जाते. या वैभवशाली परंपरेच्या महाविद्यालयात आपण प्रवेश घेत आहात. त्या परंपरेचा

पाईक होण्याचा आपणही मनापासून प्रयत्न करावा, ही अपेक्षा आहे.

**उद्दिष्ट्ये :** महिलांसाठी शिक्षण-सर्वांसाठी शिक्षण \* शिक्षणाने सुसंस्कारीत महिला घडवणे. कारण एक महिला दोन घरी प्रगतीचा प्रकाश आपू शकते. \* गतिमान शिक्षणातून सामाजिक परिवर्तनासाठी हातभार लावणे. \* अखिल मानवी समाजाच्या कल्याण व संवर्धनासाठी सातत्याने प्रयत्न करणे. \* आमच्या विविध शैक्षणिक संस्थांमधून विद्यार्थ्यांना सुयोग्य शिक्षण देऊन त्यांच्यातूनच सुजाण नागरिक, कार्यक्षम व्यावसायिक, तज्ज्ञ आणि दूरदृष्टी आणि मानवी हिताचे भान असणारे विचारवंत निर्माण करणे. \* अत्याधुनिक शैक्षणिक साधनांद्वारे आणि आधुनिक अध्यापन पद्धतीचे उपयोजन करून विद्यार्थ्यांना सर्वसमावेशक शिक्षण व प्रशिक्षण देणे. \* शैक्षणिक क्षेत्रात होणारे बदल अंगीकारून त्याप्रमाणे स्वतःमध्ये बदल करून येणाऱ्या आव्हानांना समर्थपणे सामोरे जाणारे विद्यार्थी तयार करणे. \* उच्च शिक्षण संस्थांच्या मालिकांमध्ये आमच्या शिक्षण संस्थांना मानाचे स्थान मिळेल यासाठी जाणीवपूर्वक प्रयत्न करणे तसेच या प्रयत्नामध्ये विद्यार्थ्यांना सामावून घेणे.

## संस्थेची ध्येय-धोरणे आणि विश्वस्त मंडळ

### VISION

Shri Gajanan Maharaj Shikshan Prasark Mandal will be a group of institutions having national eminence and international visibility, with high quality faculty, academic freedom to pursue cutting-edge technology and all persuasive research culture and acceptance of a value system with trust and empowerment at all levels.

### MISSION

To uplift the rural society through education by providing pre-primary to postgraduate education in diversified areas.

To setup a strong infrastructure to promote high standard education to meet the needs of trained manpower in Maharashtra and beyond.

### कार्यकारी विश्वस्त

|                                |                                  |
|--------------------------------|----------------------------------|
| श्री. विशाल तांबे<br>अध्यक्ष   | श्री. श्रीहरी तांबे<br>उपाध्यक्ष |
| श्री. वैभव तांबे<br>सचिव       | श्री. मयुर ढमाले<br>कोषाध्यक्ष   |
| श्रीमती नीलम तांबे<br>संचालिका | प्रा. कृष्णराव पाटील<br>संचालक   |
| डॉ. सुभाष हांडे<br>संचालक      | डॉ. संध्या गुंजाळ<br>संचालिका    |



# महाविद्यालयाची दृष्टी व धोरणे

## VISION MISSION

Enlightening Knowledge !

### दृष्टी

विद्यार्थ्यांना त्यांच्या क्षमतेप्रमाणे गुणवत्तापूर्ण शिक्षण देऊन त्यांनी निवडलेल्या विद्या शाखेमधील ज्ञान व कौशल्ये त्यांना देणे. तसेच त्यांचे सुप्त गुण विचारात घेऊन त्यांना उद्योजकता विकासासाठी व योग्य माणूस म्हणून घडण्यासाठी संधी उपलब्ध करून देणे की, ज्याद्वारे विद्यार्थी देशाच्या विकासात योगदान देईल.

### ध्येय

शिक्षणामध्ये पावित्र्य व शाश्वत विकासाचा दृष्टीकोन ठेवून उत्कृष्टतेचा पाठपुरावा करीत गतिमान मनुष्यबळ जे संस्थेचे मुख्य आधार आहेत, त्यांच्याद्वारे भविष्यकालीन नेते, बदल घडवणारे उद्योजक आणि नीतिमूल्ये जपणारे नागरिक घडवणे. जे उद्योग, समाज आणि देशासाठी सांपत्तिक मूल्ये निर्माण करतील.

### गाभा मूल्ये

- १) उत्कृष्टतेसाठी दीर्घशोध
- २) तंत्रज्ञान वापरणाऱ्या प्रोत्साहन
- ३) विद्यार्थ्यांमध्ये नीतिमूल्ये रुजविणे
- ४) देशाच्या विकासात योगदान

### उद्दिष्ट्ये

- १) अध्यापन, प्रशिक्षण, संशोधन व विस्तार कार्यासाठी उत्कृष्ट महाविद्यालय म्हणून नावारुपाला येणे.
- २) विद्यार्थ्यांच्या मनामध्ये उद्योजकतेचे बीज रोवणे.
- ३) विद्यार्थ्यांमधील सुप्त बौद्धिक गुणांचा शोध घेऊन त्यांना नाविन्यपूर्ण कल्पना मिळविण्यासाठी प्रोत्साहन देणे.
- ४) नोकरी, पेशा व उद्योग करण्यासाठी विद्यार्थ्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा सर्वांगीण विकास करणे.
- ५) जबाबदार नागरिक बनण्यासाठी विद्यार्थ्यांना मूल्यशिक्षण देणे की, ज्याद्वारे ते देशाच्या विकासात आपले योगदान देतील.

### VISION

To provide affordable quality education, while equipping students with knowledge and skill in their chosen stream inculcate values, identify hidden talents, provide opportunities for students to realize entrepreneurship and above all good human being, who contribute for the development of Nation.

### MISSION

To pursue excellence in education with holistic and sustainable developmental approach through dynamic workforce as main stay to create future leaders, transformative entrepreneurs and ethical citizens who generate value for the industry, society and the Nation.

### CORE VALUES

- 1) Quest for excellence
- 2) Promoting the use of technology
- 3) Inculcating a value system among the students
- 4) Contributing to National development

### OBJECTIVES

- 1) To be a premier college known for its teaching, training, research and extension activities.
- 2) To sow the seeds of entrepreneurship in the mind of the students.
- 3) To find hidden talent among the students and to motivate them to grab innovative ideas.
- 4) To develop all round personality of students to enable for the employment, profession & business.
- 5) To give value education to the students for becoming responsible citizens, who shall contribute for the development of Nation.



# शाखा विस्तार





## श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ शाखा विस्तार

सावित्रीबाई फुले विद्यालय, ओतूर, जि. पुणे

वीर सावरकर विद्यालय, पांगरीमाथा, ओतूर, जि. पुणे

शारदाबाई पवार विद्यालय, आंबेगव्हाण, जि. पुणे

विद्याविलास विद्यालय, मुथाळणे, जि. पुणे

सीताबाई तांबे मुलींचे कनिष्ठ महाविद्यालय, ओतूर, जि. पुणे

प्रतिभाताई पवार प्रशाला, ओतूर, जि. पुणे

श्री गजानन महाराज कन्या छात्रालय, ओतूर, जि. पुणे

विलास तांबे कॉलेज ऑफ एज्युकेशन (बी.एड.), डुंबरवाडी, जि. पुणे

विलास तांबे कॉलेज ऑफ एज्युकेशन (एम.एड.), डुंबरवाडी, जि. पुणे

शरदचंद्र पवार इन्स्टिट्यूट ऑफ फार्मसी (डी.फार्म.), डुंबरवाडी, जि. पुणे

शरदचंद्र पवार इन्स्टिट्यूट ऑफ फार्मसी (बी.फार्म.), डुंबरवाडी, जि. पुणे

शरदचंद्र पवार इन्स्टिट्यूट ऑफ फार्मसी (एम.फार्म.), डुंबरवाडी, जि. पुणे

शरदचंद्र पवार इन्स्टिट्यूट ऑफ मॅनेजमेंट, डुंबरवाडी, जि. पुणे

शरदचंद्र पवार कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग, डुंबरवाडी, जि. पुणे

व्हिजन इंटरनॅशनल स्कूल, खामुंडी, जि. पुणे

शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय, डुडुळगाव (आळंदी), जि. पुणे

ज्ञानविलास कॉलेज ऑफ फार्मसी, डुडुळगाव (आळंदी), जि. पुणे

रामचंद्र पाटील औटी कनिष्ठ महाविद्यालय, डुडुळगाव (आळंदी), जि. पुणे

राजा शिवछत्रपती विद्यालय, डुडुळगाव (आळंदी), जि. पुणे

आदित्य स्कूल, डुडुळगाव (आळंदी), जि. पुणे



## जाहीर प्रकटन

- प्रकाशन स्थळ : शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय  
डुडुळगाव (आळंदी)\* फोन : ९८२२२१४७७६
- मुद्रक : स्पेक्ट्रम ऑफसेट, पुणे, फोन : २५४३६५५६
- प्रकाशन कार्यकाल : द्विवार्षिक
- मालकी : श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित  
शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय, डुडुळगाव (आळंदी),  
ता. हवेली, जि. पुणे.
- मुद्रक व प्रकाशक : प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात
- राष्ट्रीयत्व : भारतीय
- पत्ता : शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय, डुडुळगाव (आळंदी),  
ता. हवेली, जि. पुणे.
- संपादक : डॉ. पांडुरंग मिसाळ
- राष्ट्रीयत्व : भारतीय
- पत्ता : शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय, डुडुळगाव (आळंदी),  
ता. हवेली, जि. पुणे.

मी प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात जाहीर करतो की, वर दिलेली माहिती  
माझ्या समजूतीप्रमाणे बरोबर आहे.

\* मुखपृष्ठ व सजावट \*

धनंजय देशपांडे, पुणे \* ०२० - २४४८७४८०



## अर्पण पत्रिका

विद्यार्जनाचे व्रत हाती घेऊन  
त्या कार्यात संपूर्णपणे झोकून देऊन  
अथक परिश्रम करतानाच  
स्वतःमधील 'कला-साहित्य-संस्कृती'  
ही सर्वांगीण विकासाची मूल्ये  
अंगी जोपासणाऱ्या सर्व विद्यार्थ्यांना व  
त्यांना प्रोत्साहन देणाऱ्या त्यांच्या पालकांना  
ही 'स्मरणिका' विनम्र अर्पण

## आपले अभिप्राय

'ज्ञानदीप' स्मरणिका आपण पाहावी, वाचावी  
ही अपेक्षा तर आहेच. त्याचबरोबर  
आपणांस ती कशी वाटली याचे योग्य मूल्यमापनही आपण  
करून आपले अभिप्राय, सूचना आम्हास जरूर कळवा.

## अभिनंदन

संस्थेचे माजी विद्यार्थी आजमितीस समाजात विविध क्षेत्रात  
स्वकौशल्याने लौकिक मिळवित आहेत. त्यांच्यासह संस्थेचीही  
प्रतिमा प्रकाशमान करणाऱ्या या सर्वांचे अभिनंदन!!



## संपादकीय मंडळ

डॉ. हंसराज थोरात | डॉ. पांडुरंग मिसाळ | प्रा. दिलीप बारी  
संपादक व प्राचार्य | कार्यकारी संपादक | सहसंपादक  
\* सदस्य \*

\* प्रा. संजीव कांबळे \* प्रा. चाँदपाशा मुल्ला \*  
\* प्रा. शाहुराज येवते \* डॉ. रणजित कदम \*  
\* डॉ. विशाल गायकवाड \* डॉ. छाया जोशी \*

यंदाचा 'जोडअंक'  
कोरोनाचा शैक्षणिक विश्वावरही  
परिणाम झाला. सुरक्षिततेच्या दृष्टीने  
आपलीही शैक्षणिक संस्था बंद होती.  
त्यामुळे सदरचा अंक हा दोन वर्षांचा व  
कनिष्ठ-वरिष्ठ महाविद्यालयांचा मिळून  
एकत्रित आहे, याची नोंद घ्यावी.



## प्राचार्यांचे मनोगत

विद्यार्थी मित्रांनो...नमस्कार !

“ ओले मूळ भेदी खडकांचे अंगे ।  
अभ्यासान संग कार्यसिद्धी ॥”

श्री संत श्रेष्ठ जगद्गुरु तुकाराम महाराजांच्या अभंगातील या उक्तीप्रमाणे कोणत्याही अवघड अशक्यप्राय कठीण गोष्टी सातत्यपूर्ण परिश्रम व योग्य दिशेने प्रयत्न केल्यास साध्य होत असतात. या विचारांचा वसा आणि वारसा प्रत्यक्षात जोपासणारी श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ ही अशीच एक अग्रगण्य संस्था आहे. श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाचे संस्थापक, शिक्षणमहर्षि विलासराव तांबे सर यांनी पुणे जिल्ह्यातील विशेषतः ओतूर या दुर्गम परिसरातील गोरगरीब शेतकऱ्यांच्या मुलांना शिक्षणाची संधी प्राप्त व्हावी म्हणून १९८९ मध्ये संस्थेची स्थापना केली होती. या संस्थेच्या तीन दशकातील वाटचालीमध्ये संस्थेच्या २० शाखा वटवृक्षाप्रमाणे वाढल्या आहेत. तीर्थक्षेत्र आळंदी येथे महाराष्ट्राचे द्रष्टे नेते मा. शरदचंद्रजी पवार साहेब यांच्या नावाने सन २००२ मध्ये शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय सुरू करण्यात आले. महाविद्यालयाने १९ वर्षांची यशस्वी वाटचाल पूर्ण केली आहे. आळंदी व आळंदीच्या पंचक्रोशीमधील मध्यमवर्गीय व शेतकऱ्यांच्या मुलांना तसेच वारकरी संप्रदायातील विद्यार्थ्यांना १० वी नंतरचे ११ व १२ वी आर्ट्स, कॉमर्स, सायन्स व १२वी नंतरचे B.A., B.Com., B.B.A. (CA) अशा पदवी व M.A., M.Com. व DTL अशा पदव्युत्तर पदवीपर्यंत उच्च शिक्षणाची एक चांगली संधी महाविद्यालयाच्या

माध्यमातून उपलब्ध झालेली आहे. या दोन दशकांमध्ये महाविद्यालयाने स्थानिक भागांमध्ये स्वतःची चांगली ओळख निर्माण केली आहे. महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाच्या चांगल्या कार्याची दखल घेत महाराष्ट्र शासनाकडून व सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाकडून ‘राज्यस्तरीय उत्कृष्ट महाविद्यालय’ म्हणून पुरस्कार प्राप्त झाला आहे. विद्यार्थ्यांना आपल्या भावी आयुष्याची स्वप्ने साकार करण्याचे सामर्थ्य निर्माण करण्यासाठी महाविद्यालयाकडून सातत्याने प्रयत्न केले जातात. विद्यापीठाच्या निर्धारित अभ्यासक्रमाबरोबर विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण व्यक्तिमत्व विकासासाठी विविध कार्यक्रम उपक्रम व श्रमसंस्कार शिबिराचे आयोजन केले जाते. विद्यार्थ्यांच्या सुप्त कलागुणांना वाव देण्यासाठी अंतरंग वार्षिक स्नेहसंमेलन घेतले जाते. विद्यापीठ अनुदान आयोग व सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ विद्यापीठाच्या नियमानुसार अर्हताप्राप्त अनुभवी प्राध्यापक वर्ग विद्यार्थ्यांना सातत्याने प्रोत्साहन देत असतो.

महाविद्यालयातून आपण B.A., B.Com., B.B.A. (CA) व M.A., M.Com. व DTL पदवी, पदविका व पदव्युत्तर शिक्षण घेऊन आपल्या भावी करिअरची चांगली सुरुवात करावी आणि आपली सर्व स्वप्ने साकार व्हावीत हीच हार्दिक शुभेच्छा!

**डॉ. हंसराज थोरात**

(प्राचार्य)

M.Com. (Adv. A/c. & Adv. Cost)  
M.Com. (Taxation & Co-operation)  
M.Phil., G.D.C. & A., Ph.D., D.Litt.

# कार्यकारी संपादकांचे मनागत



शिक्षण म्हणजे स्वतःच्या क्षमतेची ओळख

शिक्षण म्हणजे स्वतः

शिक्षण म्हणजे समाजासाठी जीव तुटणं

शिक्षण म्हणजे कष्ट करून शकणं

शिक्षण म्हणजे चांगला माणूस होणं

शिक्षण म्हणजे संकुचितपणा नष्ट होणं

शिक्षण म्हणजे ज्ञान आत्मसात करणं!

प्राचीन अतिप्राचीन काळापासून ऋषीमूर्तींच्या तसेच साधू तपस्वी यांच्या पदस्पर्शाने, वास्तव्याने व घनघोर तपश्चर्याने पुनित झालेली, कलासौंदर्य, सृष्टीसौंदर्य व अध्यात्मज्ञान यांच्या सुरेख संगमाने पवित्र व मंगल बनलेली, माऊली महावैष्णव संत श्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराज यांच्या संजीवन समाधीने पुनित झालेली अशी ही डुडुळगाव (आळंदी), भूमी आहे. ही महाराष्ट्राची अध्यात्मिक राजधानी मानली जाते. या पंचक्रोशीचा शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व बौद्धिक प्रगतीचा, ज्ञानाचा ध्यास व वसा घेतलेल्या व जीवनाचे सारसर्वस्व शिक्षण वरील उत्तीप्रमाणे मानणाऱ्या, श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाचे, शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयाच्या इतिहासातील दीपस्तंभाप्रमाणे 'ज्ञानदीप' हा वार्षिक अंक दहावा व अकरावा, शैक्षणिक वर्ष-२०१९-२० व २०२०-२१ कोरनाच्या-१९ पार्श्वभूमीवर एकत्रित आपल्या हाती देताना विशेष आनंद होत आहे. या अंकाचे नाव 'ज्ञानदीप' आहे. ज्ञानदीप म्हणजे ज्ञानाचा अखंड विलास होय. महाविद्यालयाच्या प्रगतीचा व विद्यार्थ्यांच्या अंगी असणाऱ्या सर्व कलागुणांचा व त्यांच्या आंतरभावविश्वाचे ते खरोखरच वास्तव प्रतिबिंब असते. ज्ञानदीप हा अंक महाविद्यालयाच्या प्रगतीचा चढता आलेख आहे.

महाविद्यालयीन जीवन हे एक संवेदनशील जीवन असते. अभ्यास करून निश्चित ध्येयाकडे वाटचाल तर सुरूच असते. त्याचबरोबर स्वतःमधल्या कलागुणांना वाव मिळण्यासाठी त्यांच्यामध्ये वाचन संस्कृती रुजविण्यासाठी वार्षिक स्नेहसंमेलन, विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, विद्यार्थ्यांच्या मनातील विचार शब्दांच्या माध्यमातून कागदावर उतरवण्यासाठी 'ज्ञानदीप' हे एक उत्तम माध्यम आहे. महाविद्यालयीन विद्यार्थी देशाचा उत्तम नागरिक असतो. यासाठी महाविद्यालयांमध्ये विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी राष्ट्रीय सेवा योजना, सांस्कृतिक महोत्सव, वार्षिक स्नेहसंमेलन, क्रीडास्पर्धा या उपक्रमांच्या माध्यमातून महाविद्यालयीन तरुण घडत असतो. विद्यार्थ्यांना साहित्याची ओळख व्हावी. त्यांच्याकडून चांगले साहित्य लिहिले, वाचले जावे.

त्यांचे मत-भावना, आर्थिक, सामाजिक, दृष्टिकोन मांडण्यासाठी प्रत्येक वर्षी ज्ञानदीप हा अंक प्रकाशित केला जातो.

महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांनी शिक्षण पूर्ण करित असताना त्यांच्या अंगी असणाऱ्या सर्वांगीण कला व गुणांचा विकास व्हावा. त्यांना खुले व्यासपीठ मिळावे. विद्यार्थ्यांच्या अंगी असलेले लेखन विषयक कौशल्याचा अविष्कार लेख, कथा, कविता, चारोळी, विनोद, निबंध, प्रवासवर्णन, आत्मकथन, कोरोनासारख्या महामारीमुळे सर्व क्षेत्रावर झालेला त्याचा परिणाम, इत्यादींच्या माध्यमातून देण्याचा हा चिमुकला प्रयत्न आहे. यातूनच भविष्यात एखादा लेखक, कवी व साहित्यिक निर्माण होऊ शकेल ही अपेक्षा आहे. तीर्थक्षेत्र आळंदी पंचक्रोशीतील शिक्षण घेणारे विद्यार्थी यांच्यात कसदार साहित्य निर्माण करण्याचे सामर्थ्य व शक्ती आहे. विद्यार्थ्यांनी ही भावसुमने आपल्यासारख्या सुज्ञ, जाणकार, रसिकांचा सेवेसाठी वाहिलेली आहेत.

या अंकासाठी मंडळाचे अध्यक्ष, मा. विशाल विलासराव तांबे यांच्याकडून नेहमीच आम्हाला प्रेरणा मिळते. तसेच संस्थेचे सचिव, मा. वैभव विलासराव तांबे यांच्याकडून वेळोवेळी आम्हाला प्रोत्साहन मिळते. संस्थेचे कोषाध्यक्ष मा. मयुर ढमाले यांनी हा अंक अतिशय चांगला व्हावा यासाठी मार्गदर्शन केले. या अंकाच्या कार्याची जबाबदारी माझ्यावर सोपवून विश्वास दाखविल्याबद्दल महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात यांचे मी मनापासून आभार मानतो. सहसंपादक, प्रा. दिलीप बारी व तसेच डुडुळगाव (आळंदी) ग्रामस्थ, जाहिरातदार, शुभेच्छुक, छायाचित्रकार ज्ञानेश जंगले, अंकाची सजावट करणारे श्री. धनंजय देशपांडे व त्यांचे सहकारी, त्यांच्या तत्परतेमुळे हा अंक रसिक मित्रांच्या हाती वेळेत देऊ शकलो, त्याबद्दल त्यांचे मनापासून आभारी आहे. तसेच नियतकालिक समितीचे सर्व सदस्य यांनी घेतलेल्या कष्टामुळे हा अंक अल्पकाळात पूर्ण करू शकलो त्याबद्दल महाविद्यालयाच्या वतीने सर्वांचेच आभार मानतो. त्या सर्वांना धन्यवाद.

आपण 'ज्ञानदीप' वाचून अभिप्राय जरूर कळवावा ही विनंती.

**डॉ. पांडुरंग मिसाल**

एम. ए., एम. फिल., पीएच. डी., नेट  
कार्यकारी संपादक



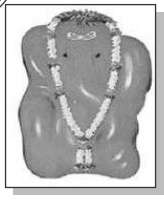
# NEW YORK Multi Services Cafe

- \* स्कॉलरशीप फॉर्म \* परीक्षा फॉर्म \* जात पडताळणी प्रमाणपत्र \* सर्व कॉलेजचे ऑनलाईन फॉर्म
- \* पॅनकार्ड \* शॉप ॲक्ट लायसन \* फुड लायसन \* गॅझेट \* पोलिस व्हेरिफिकेशन
- \* उद्यम आधार \* पासपोर्ट \* आधारकार्ड प्रिंट
- ऑनलाईनची सर्व कामे केली जातील.

झेरॉक्स, स्कॅन, लॅमिनेशन, कलरप्रिंट, स्पायरल बाईडिंग, ब्लॉक बुक इ. मिळेल.

पत्ता : गजानन महाराज मंदिरासमोर, देहुफाटा, हॉटेल न्यू पाटील शेजारी, आळंदी (देवाची), ता. हवेली, जि. पुणे

मोबाईल : ८६६९२२७०७०, ८७९३७७०६७७



॥ संत ज्ञानेश्वर महाराज प्रसन्न ॥

# वरदविनायक मंगल कार्यालय



आळंदी (देवाची)

आमच्याकडे हिंदू वैदिक पद्धतीने रजिस्टर नोंदणी विवाह माफक दारात केले जाताल.  
५ माणसापासून ते १००० माणसांपर्यंत प्रशस्त हॉल मिळेल.  
केटरिंगची उत्तम सोय आहे.

प्रोप्रा.: अक्षय पांडे गुरुजी

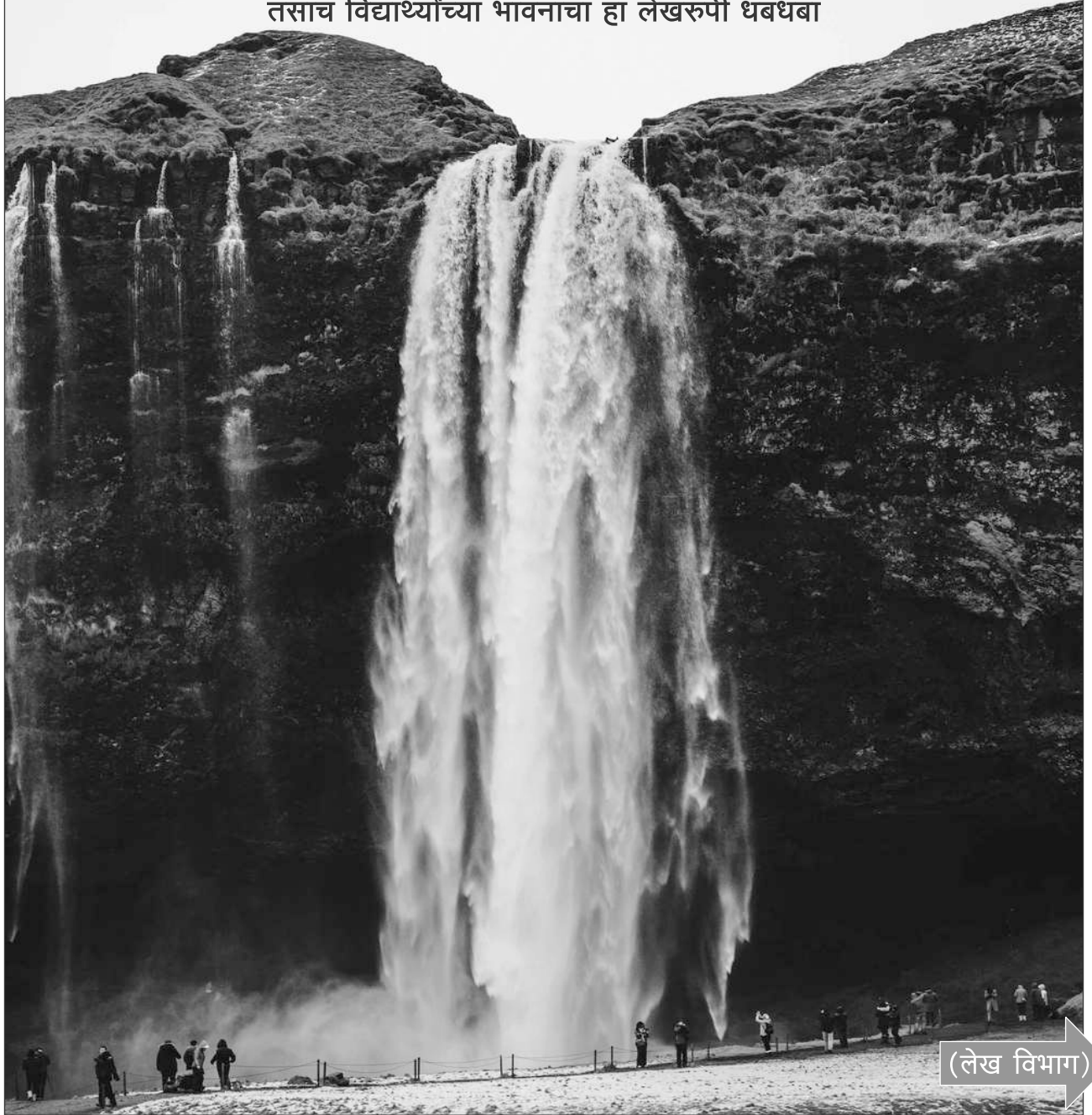
श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज पुजारी, आळंदी (देवाची)  
मोबा.: ८८०५९३४८०८, ९०२२४९०५७२

Marriage Registration Office alandi आळंदी विवाह संस्था आळंदी देवाची ८८०५९३४८०८

# शब्दप्रवाह

पावसाच्या थेंबार्थेंबातून सुरुवातीला अगदी छोटा प्रवाह बनतो. नंतर तो वाढत जाऊन नदीमध्ये रुपांतरीत होतो. ती नदी ध्येयापर्यंत (म्हणजे) समुद्रापर्यंत जाईपर्यंत विविध रूपे घेते. कधी संथ पाणी तर कधी प्रचंड धबधबा! आपल्या मनातल्या भावनांचेही तसेच असते. अनेकजणांचे शब्दार्थेंब एकत्र येऊन एक सुंदर प्रवाह तयार होतो.

तसाच विद्यार्थ्यांच्या भावनांचा हा लेखरूपी धबधबा



(लेख विभाग)

# स्त्रीजन्म म्हणवुनि न व्हावे उदास



कविश्रेष्ठ कुसुमाग्रज म्हणतात,  
'सान्याच कळ्यांना जन्मसिद्ध हक्क आहे फुलण्याचा  
मातीमधला वतन वारसा आकाशावर कोरण्याचा।'  
पण प्रत्यक्षात कुठे गं घडतं असं!

रोजच्या भाकरीसाठी जीव मेटाकुटीला आला असतानाच सासरहून तलाक मिळालेली मुलगी माघारी आली, तेव्हा दिवस गेलेले होते. मुलीला केवळ मुलगी झाली म्हणून अवघ्या दोन दिवसांच्या त्या कोवळ्या जीवाला सख्ख्या आजोबांनीच कबरस्तानात नेऊन खोल खड्ड्यात पुरून टाकले. दोन तास ती जमिनीखाली होती. तिच्या नशिबाची दोरी बळकट म्हणून तिला पुरल्याचे जगाला कळले, ते कबरस्तानातील एका कुत्र्यामुळे! तिच्या रडण्याच्या आवाजामुळे कुत्रा भूकू लागला, ते एका व्यक्तीच्या लक्षात आले. त्याने खड्डा खणून, उकरून तिला बाहेर काढले व रूग्णालयात नेले. ही काळजाचा थरकाप उडविणारी घटना आंध्रमधील मेहबूबनगरमध्ये घडली.

अशा कोवळे जीव टाकून देण्याच्या घटना समाजात नित्य घडतच असतात. पण लक्षात कोण घेतो!

असेच एक उदाहरण चितूर खेड्यातील एका आईचे आहे. तिने रक्ताचे पाणी करून मुलांना डॉक्टर, शिक्षक व उद्योजक बनविले. स्वतःच्या श्रमातून घरटे उभे केले; पण तिच्यावरच भीक मागण्याची वेळ आली. तिच्या मुलांनी तिला जिवंतपणीच स्मशानभूमीत

चितेवर ठेवून दिले. यात तिचा काय दोष? पण ती स्त्री होती ना! म्हणूनच माणुसकीच्या सरणावर 'आई' जळते जिवंतपणी!

आजही स्त्रीमुक्तीसाठी का झगडावे लागते? तर हजारो वर्षांपूर्वी 'मनू' नावाच्या ऋषी म्हणा किंवा कायदेपंडित म्हणा, त्याने समाज नियमनासाठी 'मनुस्मृती' ग्रंथ रचला. त्यात त्याने स्त्रिया व शूद्रांना शिक्षणाचा हक्क नाही असे लिहून ठेवले. तो पुरूष होता ना! त्याने पुरूषांना सोयीस्कर होतील असेच कायदे केले. स्त्रीला सोन्याच्या पिंजन्यात बसवून, अनेक बंधनांच्या शृंखलात तिला अडकविले.

प्राचीन इतिहासाकडे जर आपण पाहिले तर अशा बंधनातून सुद्धा कित्येक स्त्रियांनी आपले केवळ अस्तित्त्व टिकवले नाही, तर आपले कर्तृत्व सिद्ध केले. उदा. मैत्रेयी, गार्गी, लोपामुद्रा, सत्यवती, द्रौपदी, सीता, जिजामाता पासून अलिकडच्या पंडिता रमाबाई, बाया कर्वे, अशी कितीतरी नावं घेता येतील.

मध्ययुगीन काळात परकीय आक्रमणामुळे तिच्यावरील बंधन अधिक कडक झाली. पण तरीसुद्धा तिने मुक्तीसाठी धडपड केलीच ना! राजा राममोहन रॉय, म. फुले, म. गांधी, धोंडो केशव कर्वे, गोपाळ गणेश आगरकर, इत्यादी थोर समाजसुधारकांनी आपल्याला अमानुष रूढीतून मुक्त केलेच ना! उदा. सती पद्धती, केशवपन, बालविवाह, पुनर्विवाहास बंदी... याचा अर्थ आपलं भलं करणारी पुरूष मंडळीही समाजात आहेतच ना!





म्हणून जगण्याच्या अंगानेच  
उलगडत न्यावा लागेल तुला  
तुझ्या झुलत्या झोक्याच्या दोराला  
पडणारा पीळ!

काळ बदलतो तसे समस्यांचं रूपही बदलत जातं. आज स्त्रीभ्रूणहत्या व हुंडापद्धती यांनी समाजात धुमाकूळ घातला आहे. पण त्याचे सामाजिक दुष्परिणाम दिसू लागले आहेत. मुलींची संख्याच घटू लागली आहे आणि त्याचे परिणाम पुरूषांनाच भोगावे लागतील.

स्त्री जसजशी शिक्षण घेईल तसतसा हुंड्याचा प्रभावही कमी होत जाईल. नाहीतरी वडिलांच्या इस्टेटीत स्त्रियांना वाटा मिळावा म्हणून शासनाने कायदा केला आहेच.

बाई गं! जरा दम धर, सामाजिक सुधारणा धिम्या गतीने होतात. परंतु कायमच्या होतात. त्यासाठी लोकशिक्षणाची गरज आहे. पण एक गोष्ट अजूनही खटकते गं! कुटुंबच आपल्याला साथ देत नाही. नवरोजी अहंकार अजूनही सोडायला तयार नाही. घरातील स्त्रियाच आपले पाय मार्गे ओढतात. सासू-सुनेचं नातं आता बदलायला हवं. आता तूच यातून मार्ग काढ. अनुराधा पाटील म्हणतात.

‘म्हणून जगण्याच्या अंगानेच

उलगडत न्यावा लागेल तुला

तुझ्या झुलत्या झोक्याच्या दोराला

पडणारा पीळ!’

तुझ्या आतापर्यंतच्या अश्रूंच्या महासागरातून एक दिव्य शक्ती

निर्माण होईल. तुझ्या आजवर दडपल्या गेलेल्या सुप्तशक्ती उफाळून येतील त्या येऊ दे. कारण ‘रात्रीच्या गर्भातच असेल उदयाचा उषःकाल.’

‘पण बाई गं! स्त्री मुक्तीच्या वादळात शिक्षणाच्या जोरावर उतू नकोस, मातू नकोस, पुरूषी बनू नकोस, स्त्रीमुक्तीचे रूपांतर स्वैर आचारात करू नकोस, तुझे महन्मंगल मातृत्व कसोशीने सांभाळ. आपल्या कुटुंबसंस्थेला तडे जाऊ देऊ नकोस.’

‘पुढच्या अनेक पिढ्यांसगे तूच जुळव दुवा

भुईत पाय रुजवून तू आभाळाभर फूल

देहाचा खांब करून अवघड घर तोल।।

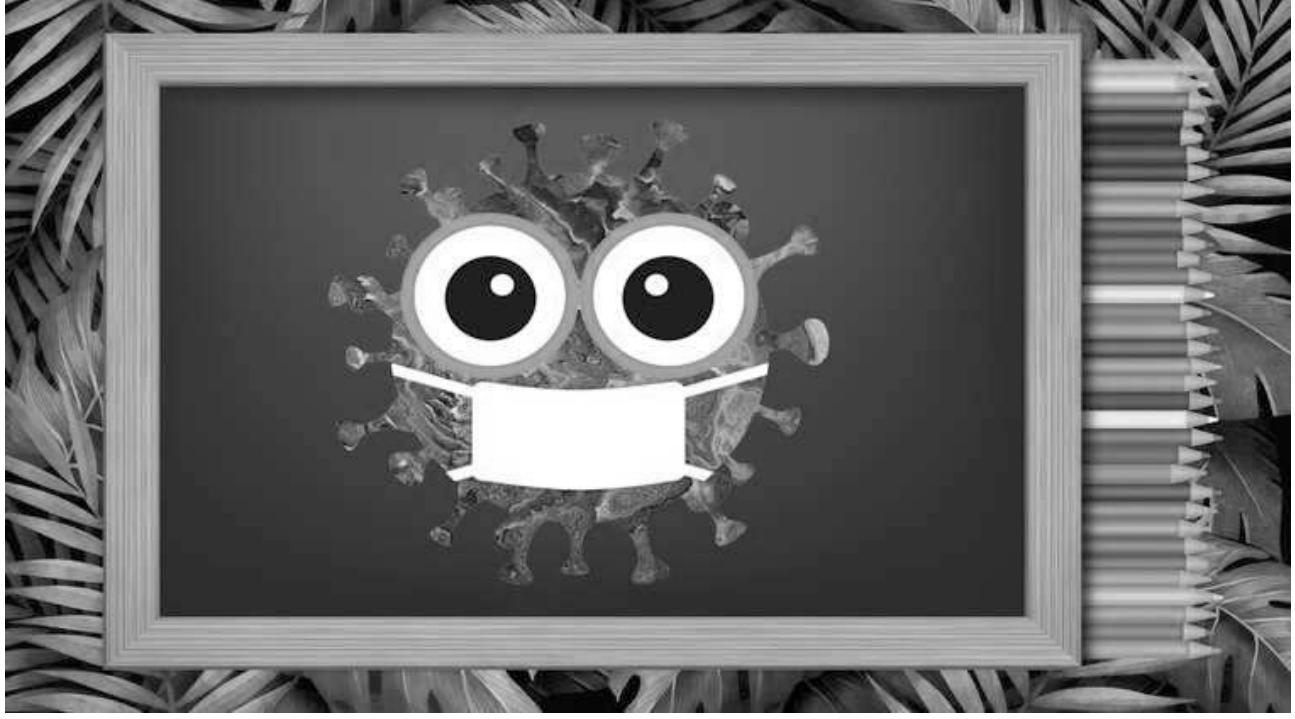
यातच तुझं स्त्रीत्व सामावलेलं आहे.

यासाठी स्त्रीजन्म म्हणवुनि होऊ नकोस उदास!’

बहिणाबाई हा संदेश देतात.

प्रतिक्षा शिवरकर

टी. वाय. बी. कॉम.



## कोरोनामुळे शिक्षणाची दैना थोडं थांबायला काय हरकत आहे?

कोरोनामुळे जी शिक्षणाची दैना झाली आहे, त्याचे वास्तव या लेखातून मांडलेले आहे.

आपण नेहमी म्हणतो, की जीवनात काहीतरी चुकीचं घडत असलं किंवा मनाविरुद्ध घडत असलं किंवा कितीही प्रयत्न करून अपेक्षित परिणाम साधता येत नाही, अशावेळी थोडे थांबले पाहिजे. योग्य चिकित्सा केली पाहिजे आणि गरजेचं असल्यास काही काळानंतर पुन्हा परत त्याबाबतीत पाठपुरावा केला पाहिजे. आपले वरिष्ठ नेहमी अशाच प्रकारचा सल्ला आपल्याला देत आलेले आहेत. व्यवस्थापन शास्त्रात 'रिव्ह्यू मेकॅनिझम'ला फार मोठ्या प्रमाणावर महत्त्व असते. अनेक प्रेरणादायी भाषण (motivational Speech) देणारे वक्ते सातत्याने सांगत असतात की, मोठी उडी घेण्यासाठी प्रसंगी आपल्याला दोन पावलं मागे घेता आली पाहिजेत. शहाणपण अनुभवातून किंवा शिक्षणातून मिळविलेले मार्गदर्शक, मात्र ज्या वेळी शिक्षणालाच थांबवण्याची वेळ आलेली आहे, त्यावेळी नेमके कुठे गेले आहेत? की ज्या शिक्षणातून आपण हे शिकलो त्या शिक्षणाच्या बाबतीतच हा मुद्दा लागू पडत नाही? याचा विचार करण्याची वेळ आलेली आहे.

मागील वर्षी मार्चपासून भारतामध्ये कोविड-१९ या कोरोनाच्या विषाणूने डोकं वर काढलं तेव्हापासून आता पंधरा महिन्यांचा कालावधी उलटून गेलेला आहे. याचाच अर्थ एक संपूर्ण वर्ष या प्रकियेत गिळंकृत झालेले आहे आणि या पुढे किती काळ आणखी स्थिती राहिल, या विषयी कोणीही तज्ज्ञ काही स्पष्टपणे सांगू शकत नाही. या काळात जी स्थिती निर्माण झालेली होती ती मात्र 'न भूतो, न भविष्यती' अशीच होती आणि अजूनही ती भीषण रूप धारण करत आहे. त्यामुळे शिक्षण आणि त्या संबंधित शिक्षणक्षेत्र तरी त्याच्यापासून वेगळे कसे राहणार...?

या परिस्थितीत सरकारने घेतलेले निर्णय वेळोवेळी बदलावे लागले किंवा थेट रद्द करावे लागले. अशाप्रकारे शिक्षणाचे वाभाडे एवढ्या मोठ्या प्रमाणावर कधीतरी निघू शकतील, असा कोणी कधी विचारही केला नव्हता. वरवरच्या मलम पट्ट्यांमुळे आणि सातत्याने 'पुढे चला' या विचाराने 'पुढचं पाठ आणि मागचे सपाट' अशी शिक्षणाची जी व्यवस्था झालेली होती, ती पूर्णपणे या कोरोनाच्या काळामध्ये उघडी पडली. या संपूर्ण कालावधीत जे जे शक्य आहे, ते ते सर्व प्रयत्न संबंधित यंत्रणांनी काही प्रमाणात

करून बघितले. मात्र त्यातील कोणताही प्रयत्न आणि पद्धती सर्व घटकांना समान न्याय देईल, अशा पद्धतीची नसल्याने ते प्रयत्न केवळ उपचार म्हणून सिद्ध झाले.

हे संपूर्ण शैक्षणिक वर्ष कोविड-१९ च्या सावटाखाली गेले. त्यामुळे बहुतेक ठिकाणी पूर्णवेळ शाळा भरल्या नाहीत. कोरोनातून झालेल्या लॉकडाऊनच्या परिस्थितीमुळे वर्गामध्ये विद्यार्थ्यांना बोलावून शिकवणे ज्यावेळी शक्य नव्हते त्या वेळी ऑनलाइनचे सर्व पर्याय पडताळण्यात आले. अगदी व्हॉट्सअप, फेसबुक ग्रुप, पीपीटी, युट्युब व्हिडिओज, झूम मिटिंग, जिओ मिटिंग या सर्व ऑडिओ-व्हिड्युअल प्रक्रियेच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांना शिक्षण देण्याचा प्रयत्न झाला. काही ठिकाणी दोन-तीन महिने वर्ग भरले; परंतु प्रामुख्याने शाळा भरल्या त्या ऑनलाइन पद्धतीने. ऑनलाइन पद्धतीत विद्यार्थी एकाग्र होऊ शकत नसल्याचे अनेक पाहण्यांतून समोर आले आहे. सध्याच्या स्थितीत या पद्धतीला पर्याय नसला, तरी ती काही आदर्श पद्धत नाही. मात्र सर्वांना समान अशा पद्धतीचे शिक्षण अनेक कारणांमुळे देणे शक्य झाले नाही आणि ज्यांच्याकडे या डिजिटल माध्यमातून शिकण्यासाठीच्या सोयी-सुविधा नव्हत्या त्यांची फार कुचांबणा झाली. अनेक ठिकाणी सोयी-सुविधा असल्या तरी नेटवर्क योग्य नव्हतं. सोयी-सुविधा आणि नेटवर्क या दोन्ही बाबी योग्य रीतीने मिळाल्या तर विद्यार्थी आणि शिक्षक यांनी प्रामाणिकपणे आपापली भूमिका निभावली असेलच असे नव्हते.

अर्थातच या सर्व प्रक्रियेमुळे चार भिंतीआड होणारे शिक्षण हे पूर्णपणे मोकळं झालं तरी देखील शिक्षणातून आचार-विचार, संस्कार आणि जीवनमूल्ये मिळण्यासाठी जे वातावरण शाळा-कॉलेजमध्ये मिळते ते वातावरण घरात बसून मिळणं शक्य नव्हतं.

कोरोनामुळे निर्माण झालेल्या परिस्थितीत ऑनलाइन शिक्षणाचे सर्व पर्याय तपासून झालेत. हे सगळं करत असताना खरोखर त्याचा लाभ कितीजणांना होतो? याची आकडेवारीसुद्धा समोर आली आणि अनेकजण त्यापासून वंचित राहत आहेत, हे वास्तव पुढे आले आहे. अशा परिस्थितीत सलग दुसऱ्या वर्षी विद्यार्थ्यांना कोणतीही तयारी न करता पुढील वर्षात पाठवणे म्हणजे त्यांच्या संपूर्ण आयुष्याशी खेळ करण्याची स्थिती आहे. त्यात खरा मुद्दा आहे, तो यंदाच्या अध्यापन-अध्ययन प्रक्रियेचा. शिवाय संगणक, स्मार्ट फोन, इंटरनेट आणि वीज पुरवठा सर्वांना उपलब्ध आहेत असेही नाही. गरीब, वंचित समाजघटकांतील मुले ऑनलाइन शिक्षणापासून दूर असल्याचेही पाहण्यांतून दिसले आहे. त्यामुळे जिथे शिक्षणच व्यवस्थित झाले नाही, मुलांना अभ्यासक्रम व्यवस्थित शिकण्याची संधी मिळाली नाही तिथे परीक्षा कसली घेणार?

नेहमीच्या पद्धतीत शिक्षक समोर असूनही विद्यार्थ्यांचे लक्ष आहे की नाही, याचे शिक्षकाला भान नसते, तर मग पूर्णपणे ऑनलाइन अध्यापन किती प्रभावी झाले असेल? मुलांच्या हाती कधी नव्हे तो मोबाईल मिळाल्यावर किती मुलांनी त्याचा नक्की शिकण्यासाठी उपयोग केला असेल? या प्रश्नांची उत्तरे जरी तथाकथित शिक्षणतज्ज्ञ आणि शिक्षण क्षेत्रातील मान्यवर स्वतःच्या

सोईनुसार देणार असले, तरी वास्तव खूप भयानक आहे.

कोरोनाच्या आपत्तीमध्ये कित्येक उद्योग-व्यवसाय बंद झाले. काही लाख लोकांच्या नोकरी-रोजगाराचा प्रश्न निर्माण झाला. कित्येकांच्या रोजीरोटीचा प्रश्न गंभीर झाला. या सर्व प्रकारांमध्ये सरसकट सर्वांचं एक वर्ष वाया गेलं.

सलग दुसऱ्या वर्षी कोरोनाच्या वाढत्या प्रभावामुळे आता विद्यार्थ्यांना शाळेत बोलवणे शक्य नसल्याने राज्य शासनाने पहिली ते आठवीपर्यंतच्या विद्यार्थ्यांसाठी कोणतीही परीक्षा न देता पुढील वर्गात त्यांना प्रवेश देण्याचा निर्णय घेतला. मागील वर्षी देखील ऐनवेळी आलेल्या कोरोनाच्या संकटामुळे पहिली ते नववीच्या आणि अकरावीच्या विद्यार्थ्यांना कोणतीही परीक्षा न घेता पुढे ढकलण्यात आलेच होते.

कोरोनाच्या संकटानंतर कोणतीही विशेष पूर्वतयारी न करता केलेली उपाययोजना सर्वसमावेशक होईल का? याचा कोणताही विचार न करता मागील वर्षी शैक्षणिक वर्ष सुरू करण्याची जी घाई केली ती खरोखरच अनाकलनीय होती. कोरोनामुळे सुरुवातीच्या काळातच मार्चमध्ये मागील वर्षीच्या शैक्षणिक वर्षात नववीपर्यंत आणि अकरावीच्या विद्यार्थ्यांना कोणतीही परीक्षा न घेता पुढील चाल दिलेली होती आणि आताच्या या निर्णयामुळे सलग दोन वर्षे विद्यार्थी विनापरीक्षा पुढे सरकलेले आहेत, त्यात त्यांना थेट वर्गातून शिक्षण देता न आल्याने ऑनलाइन पद्धतीने त्यांचे शिक्षण झाले आणि ते देखील सर्वांचे समाधान न झाल्याने आता खूप मोठ्या प्रमाणावर गुणवत्तेमध्ये दरी निर्माण होण्याची शक्यता निर्माण झालेली आहे.

मागील वर्षी अभ्यासक्रम झाला तर परीक्षा कोरोनाच्या तावडीत सापडल्या. त्यानंतर कोरोनामुळे CBSE ने आपला अभ्यासक्रम ३० टक्के कमी केला होता. त्यापाठोपाठ बोर्डानेदेखील काही प्रकरण वगळून ऑनलाइन पद्धतीने शिकविणे सुरू केले. आता चालू वर्षी शाळाच सुरू झाल्या नाहीत. अभ्यासक्रम ऑनलाईन झाला तरी पुढे परीक्षा तरी कशा घ्यायच्या हा प्रश्न? त्यामुळे शिक्षणाच्या बाबतीत वर्ष वाचवण्याची जी कसरत केली आहे, ती खरोखरच विचार करायला लावणारी आहे.

दुसऱ्या लाटेच्या रूपात कोरोनाचा कहर सुरू असल्याने आता तर सरसकट दहावी बोर्ड परीक्षा रद्द करणे भाग पडले. विद्यार्थ्यांचे शैक्षणिक नुकसान झाले आहेच, ज्यांनी मनापासून अभ्यास केला त्यांचे काय चुकले? सार्वत्रिक परीक्षा कशी द्यायची, या अनुभवाला ते सर्व मुकले. सर्व विद्यार्थ्यांची गुणवत्ता एका मापात कशी मोजायची? आता अकरावी, अभियांत्रिकी पदविका (डिप्लोमा), आयटीआय यांसाठीचे प्रवेश कोणत्या निकषांवर करायचे? आदी अनेक मुद्दे समोर 'आ' वासून ठाकले आहेतच.

यावर्षी दहावीनंतरच्या अभ्यासक्रमांना प्रवेश देणे, हे प्रमुख आव्हान असणार आहे. एकप्रकारे ती बोर्डाची आणि संबंधित विभागाची खरी परीक्षा असेल. प्राप्त परिस्थितीत अकरावीला प्रवेश परीक्षा घेण्यावाचून पर्याय नाही. नवीन शिक्षण धोरण लागू करताना नाही तरी दहावीची परीक्षा गौण ठरवली आहेच. या निमित्ताने का होईना राज्यात अकरावी आणि बारावीचे वर्ग

शाळांना जोडून, 'कनिष्ठ महाविद्यालय' ही संकल्पनाच रद्द करायला हवी. त्यामुळे अकरावी प्रवेशाचा प्रश्न कायमस्वरूपी संपायला मदत होईल.

यात खरंतर विद्यार्थी, पालक, शिक्षक, संस्थाचालक आणि सरकार यापैकी कोणीही समाधानी नाही. तरीही केवळ सोपस्कार पार पाडायचे म्हणून पुढील शैक्षणिक वर्ष सुरू होणार असेल तर मग शिक्षणासाठी एवढा नाहक खर्च करण्याची पालकांना आणि सरकारला गरज तरी काय?

समजा, शिक्षण हे केवळ ऑनलाईन पद्धतीनेच आणि ज्याचे-त्याने जमेल त्या पद्धतीने करायचे असेल तर मग मोठ्या शिक्षणसंस्था, त्यांचे मोठांमोठे कॅम्पस, मोठ्या फी हल्यात तरी कशाला? जो-तो ज्याच्या परीने त्याच्याकडे असलेल्या कुवतीनुसार आपल्या शिक्षणाची दिशा ठरवू शकेल. मात्र यातून प्रचंड मोठ्या प्रमाणावर विषमता निर्माण होईल, ज्यातून अनेक मोठ्या सामाजिक समस्या निर्माण होण्याची शक्यता आहे.

या क्षेत्रात काम करणारे शिक्षणतज्ज्ञ, स्वयंसेवी संस्था, सरकारी अधिकारी या सर्वांनी मिळून अशा या परिस्थितीतून कसा मार्ग काढला पाहिजे, यावर वेगवेगळ्या पातळीवर चर्चा केली. मात्र दुर्दैवाने बहुतेक सर्वजण वर्ग कधी आणि कसे सुरू होतील, अभ्यासक्रम किती कमी करायचा याच दिशेने कार्यरत राहिले. शांतचित्ताने विचार करून शिक्षणासाठी 'कोरोना' ही इष्टापत्ती कशी ठरेल, याचा विचार करताना फारसे कोणीही दिसले नाहीत. अन्यथा शिक्षण ऑनलाईन झाल्यावर ते स्वस्त झाले असते, तसे चित्र अभावानेच दिसत आहे.

मागील वर्षी सुप्रीम कोर्टाच्या आदेशानुसार तसेच युजीसीच्या निदेशानुसार पदवीसाठी अंतिम वर्षाच्या परीक्षा घेणे बंधनकारक केल्याने त्या देखील ऑनलाईन पद्धतीने घेतल्या गेल्या. काही विद्यार्थी पालकांच्या प्रचंड विरोधानंतरही NT ने NEET ऑफलाईन आणि JEE main ऑनलाईन पद्धतीने पार पाडल्या. मात्र या परीक्षांसाठी अनुपस्थितीचे प्रमाण खूप मोठे होते. MPSC च्या परीक्षा देखील विद्यार्थ्यांच्या मोठ्या आंदोलनानंतरच पार पाडल्या.

या वर्षीच्या NEET /JEE च्या तारखा जाहीर झाल्या, मात्र राज्य शासनाच्या MHT -CET च्या तारखा अजूनही जाहीर झालेल्या नाहीत. सर्वसामान्य विद्यार्थी या स्पर्धेत टिकून राहणं अवघड आहे. त्यात पुन्हा कोरोनाने डोके वर काढल्याने परीक्षा पुढे ढकलल्या गेल्या.

आजपर्यंत सरकारी धोरणे, शिक्षक आणि शिक्षणसंस्थांनी आपापली भूमिका नीट न ठेवल्यामुळे 'कोचिंग क्लासेस' नावाची बाजारपेठ खूप मोठ्या प्रमाणावर निर्माण झाली. आज शिक्षणासाठी वेगळा खर्च करण्याबरोबरच कोचिंग क्लासेससाठी वेगळी तरतूद करावी लागते. त्यात आता या वर्षी अनेकांना ऑनलाईन पद्धतीने शिकवावं लागल्याने अनेकांच्या मर्यादा लक्षात आल्या. त्यांची तयारी करून घेण्याचा प्रयत्न केला तरी अनेकांची कष्ट घेण्याची मानसिकता नाही. त्यामुळे सामान्य आर्थिक कुवत असणाऱ्या पालकांच्या पाल्यांची मोठी कुचंबणा होत आहे. शिक्षक

योग्य पद्धतीने शिकवत नाहीत आणि महागड्या कोचिंगची फी परवडणारी नाही.

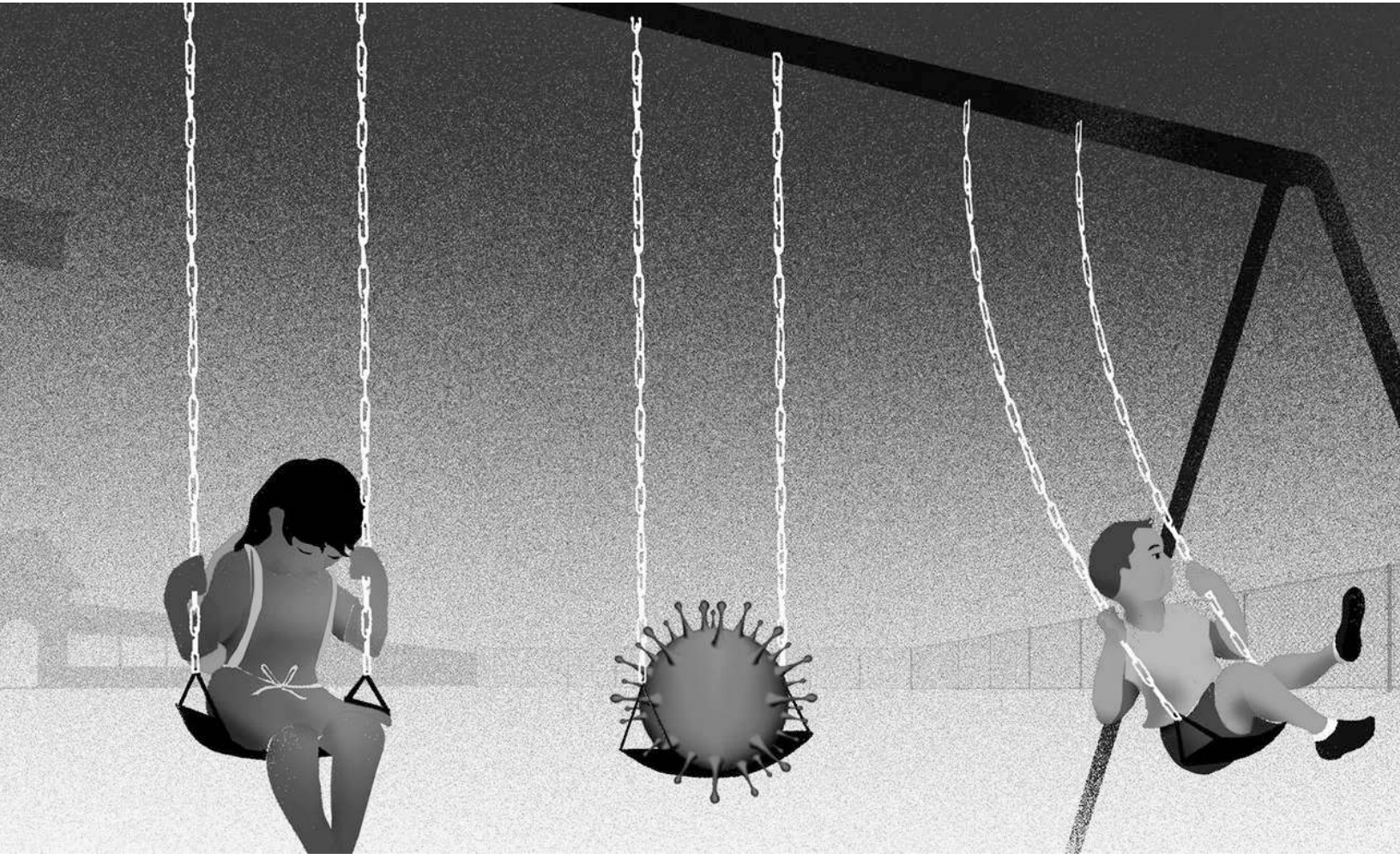
कोरोनाच्या संकटकाळात काही प्रयोग करण्याची, धडे घेण्याची गरज आहे. तसेच पुढील शैक्षणिक वर्षीही कोरोना राहणार हे जाणून नियोजन करायला हवे. कोव्हिड असतानाही सर्व विद्यार्थ्यांना शिक्षण कसे देता येईल, भौतिक वर्ग आणि ऑनलाईन यांचा संगम कसा साधता येईल, निरंतर आंतर्गत मूल्यांकन व्यवस्था कशी निर्माण करता येईल, याचा विचार करण्याची गरज आहे. कोणताही निर्णय घेतला तरी कोणी ना कोणी भरडले जाणार! त्यामुळे ते घेताना धोरणकर्त्यांचा कस लागतो आहे. त्यापेक्षा आपण पुढे जाऊ या आणि नियोजन, प्रक्रिया, टास्क फोर्स, संसाधनांचे वाटप वगैरे वगैरेचा त्रास घेण्याच्या भानगडीत न पडणे ही सरकारी बाबूंची स्थिती, त्याला राजकारण्यांची अविवेकी कृती आणि त्यात जनसामान्यांची 'चलता है' ही वृत्ती...! सारंच आलबेल आहे.

जे काही घडत आहे ते बघून एक विचार शिवून गेला की, आपल्या राज्यकर्त्यांना आणि धोरणकर्त्यांना गुणवत्तापूर्ण शिक्षण विद्यार्थ्यांना द्यायचे आहे की शिक्षण दिल्याचा फारस करायचा आहे? आणि हाच कळीचा मुद्दा आणि प्रश्न आहे.

क्षेत्र कोणतेही असो, त्या प्रत्येक क्षेत्राची कोरोनामुळे हानी झालेली आहेच आणि शिक्षणक्षेत्र तर पुरते ढवळून निघाले आहे. त्यामुळे उगाच घाई करत पुढे-पुढे जात राहिलो तर भविष्यात कधीही भरून न निघणारी हानी होऊ शकेल, अशी शक्यता आहे. शिक्षणातील ज्या गोष्टी प्रॅक्टिकलद्वारे शिकायच्या असतात, त्या जर केवळ थेअरी म्हणून शिकल्या गेल्या तर मात्र विद्यार्थ्यांना प्रत्यक्ष अनुभव कुठून येईल? वैद्यकीय क्षेत्रातील सर्वच विद्यार्थ्यांना जर कोरोनाचे रुग्ण तपासायची आणि त्यांना उपचार करायची वेळ येत असेल तर इतर सर्व व्याधींसाठी त्यांना शिकायला आणि समजून घ्यायला कोणता वेळ मिळेल? अभियांत्रिकीच्या विद्यार्थ्यांनी प्रॅक्टिकल्स केली नाहीत तर पुढे जाऊन अनेक क्लिष्ट समस्यांवर काय निष्कर्ष काढू शकतील? शिक्षकी पेशा स्वीकारणाऱ्या शिक्षकांना विद्यार्थ्यांसमवेत तासिका घेण्याचे प्रात्याक्षिक मिळाले नाही तर कशा प्रकारचे शिक्षक निपजतील? शिक्षणात 'आधीच उल्हास आहे, त्यात हा फाल्गुन मास' नाही का निर्माण होणार? त्यामुळे या समस्येकडे अतिशय विचाराने बघणं गरजेचे आहे.

'सरकार' नावाच्या अजस्र यंत्रणेला सल्ला देणारे कथित शिक्षणतज्ज्ञ कोण असतात आणि सवंग लोकप्रियतेसाठी राजकारण्यांना हवे तसे निर्णय त्यांच्यामार्फत कसे घेतले जातात, हा देखील एक संशोधनाचा विषय आहे.

कोरोनाचा कहर थांबता थांबत नसल्यामुळे आणि त्या वेळी शाळा- कॉलेजेस सुरू होण्याची शक्यता दिसत नसल्यामुळे मागील वर्षी जुलैमध्ये काहींनी माननीय पंतप्रधान, माननीय मुख्यमंत्री आणि महाराष्ट्राचे शिक्षणमंत्री यांना एक सविस्तर पत्र पाठवतं होतं आणि मागील वर्ष हे 'झिरो इयर' जाहीर करा किंवा शिक्षणाचा 'न्यू नॉर्मल' स्वीकारून जानेवारी २०२१ पासून नवीन



शैक्षणिक वर्ष सुरू करा, असे सर्वप्रथम सुचवले होते. वरील निर्देशित तिन्ही घटकांकडून दखल घेणे तर दूरच पण त्याला साधे उत्तरही त्यांच्याकडून अजून प्राप्त झालं नाही. यावरून सरकारी यंत्रणा किती असंवेदनशील आहे याची जाणीव होते.

त्यामुळे आता या सर्व बाबींचा विचार करता सरकारने किमान एवढे करावे.

१. पुढील शैक्षणिक वर्ष २०२१-२२ जाहीर करण्यापूर्वी संपूर्ण विचार करून निर्णय घेणे अपेक्षित होते. मात्र आता कोरोना दीर्घ काळ टिकला तर नेमकी कशा पद्धतीने कार्यपद्धती राहिल याची कल्पना देऊनच विद्यार्थ्यांना नवीन शैक्षणिक वर्षात प्रवेश द्यावा.

२. दहावीच्या परीक्षा पूर्णपणे रद्द झाल्यामुळे पुढील येणाऱ्या काळात अकरावीच्या प्रवेशासाठी खूप मोठ्या प्रमाणावर प्रॉब्लेम येऊ शकतात, त्याचा विचार करून आणि नाहक कोर्ट-कचेऱ्या यांमध्ये वेळ वाया घालवायचा नसेल तर साधारणपणे डिसेंबर २०२१ पर्यंत थांबून सर्व सूत्रे नीट ठरवून जानेवारी २०२२ पासून नवीन शैक्षणिक वर्ष जाहीर करावे.

आजच्या घडीला २०२०-२१ शैक्षणिक सत्र संपलेले आहे.

नवीन शैक्षणिक सत्र हे २०२१-२२ असे संबोधण्याऐवजी थेट जानेवारी २०२२ पासून सुरू करून ते शैक्षणिक वर्ष २०२२ असे करावे. म्हणजे वर्षात खंड पडणार नाही. केवळ सहा महिन्यांचा अवधी पुढे जाईल. या मिळालेल्या वेळात सर्व प्रकारच्या सिस्टिम्स आपापल्या ठिकाणी योग्य रीतीने कार्यरत कराव्यात, जेणेकरून पुढील काळात कोरोना असला किंवा नसला तरी सोपे जाईल.

अशा वेळी सर्वांना निदान हे माहिती असेल की, आपल्याला पुढील जीवन हे कोरोनासोबत किंवा तत्सम येणाऱ्या समस्यांसोबत जगायचे आहे. त्यावेळी ज्या-ज्या घटकांना पाठबळ द्यायची वेळ येईल, त्या-त्या घटकांना योग्य तो न्याय देता येईल. मागील वर्षीची चूक निदान आता या वर्षी तरी दुरुस्त करून शिक्षण क्षेत्रात किमान 'देर आये दुरुस्त आये' असे तरी म्हणता येईल.

**साक्षी चौधरी**

एस.वाय. बी. कॉम.

# कोरोना व्हायरस



## प्रस्तावना :

कोरोना व्हायरस हा विषाणूचा एक गट आहे. या व्हायरसमुळे सस्तन प्राण्यांना आणि पक्ष्यांना विविध रोग होतात. यांत गायींना व डुकरांना होणाऱ्या अतिसाराचा आणि कोंबड्यांना होणाऱ्या श्वसन रोगाचा समावेश आहे. या विषाणूचा प्रसार मानवांमध्ये श्वसन संसर्गाने होतो. हे संसर्ग बऱ्याचदा सौम्य, परंतु संभाव्य प्राणघातक असतात. कोरोना व्हायरसचा प्रतिबंध करणारी लस किंवा रोग झाल्यास घ्यायची अँटीव्हायरल इंजेक्शने उपलब्ध आहेत.. कोरोना व्हायरस प्रथम १९६० च्या दशकात सापडले. सर्वात आधी सापडलेल्यांमध्ये कोंबड्यांमध्ये एक संसर्गजन्य ब्रॉन्कायटिस विषाणू आणि सामान्य सर्दी असलेल्या दोन रुग्णांमध्ये (नंतर ह्यूमन कोरोना व्हायरस २२ ए ई आणि ह्यूमन कोरोनाव्हायरस ओसी असे नाव देण्यात आले) होते. २००३ मध्ये सार्स सीओव्ही, एचसीओव्ही एनएल २००४ मध्ये एचकेयू १, २०१९ मध्ये मेर्स-सीओव्ही आणि २०१९ मध्ये एसएआरएस-कोव्ही -२ (पूर्वी २०१९-एनसीओव्ही म्हणून ओळखले जाणारे) या कुटुंबातील अन्य सदस्यांची ओळख पटली आहे. यामध्ये गंभीर श्वसनमार्गाचे संक्रमण होते. २०२० साली महाराष्ट्रात कोरोना विषाणूचा उद्रेक झाला. त्या वर्षापासून महाराष्ट्रातील जनजीवनावर याचे फार मोठे परिणाम झाले. राज्यात लागू झालेल्या नियमांनुसार अत्यावश्यक कामाशिवाय सर्वांनी घरी बसणे सक्तीचे करण्यात आले. १५ जून २०२० पर्यंत १,१०,७४४ जणांना याच लागण झाली असून त्यापैकी ४,१२८ जणांचा मृत्यू झाला आणि ५६,०४९ जण पूर्णपणे बरे झाले.

## शोध

कोरोना व्हायरस पहिल्यांदा १९३०च्या दशकात सापडला जेव्हा संसर्गजन्य ब्रॉन्कायटिस विषाणूमुळे (आयबीव्ही) पाळीव कोंबड्यांचा तीव्र श्वसन संसर्ग झाल्याचे दिसून आले. १९४० च्या दशकात माऊस हेपेटायटिस व्हायरस (एमएचव्ही) आणि

ट्रान्समिसिसिबल गॅस्ट्रोएन्टेरिटिस व्हायरस (टीजीईव्ही) व आणखी दोन प्राणी कोरोना व्हायरसपासून अलग ठेवण्यात आले. १९६० च्या दशकात मानव कोरोना व्हायरस सापडले. सर्वात आधी अभ्यास केलेला सामान्य सर्दी असलेल्या मानव रुग्णांद्वारे होता, ज्याला नंतर मानव कोरोना व्हायरस २२९इ आणि ह्यूमन कोरोनाव्हायरस ओसी ४३ओसी असे नाव देण्यात आले. माणसांमध्ये सार्स-सीओव्ही, २००३ मध्ये एचसीओव्ही एनएल ६३ २००४ मध्ये एचकेयू १, २०१२ मध्ये मेर्स-सीओव्ही आणि २०१९ मध्ये एसएआरएस-कोव्ह -२ यासह इतर मानव कोरोना व्हायरस ओळखले गेले. यापैकी बहुतेकांना श्वसनमार्गाच्या गंभीर आजाराचे संक्रमण होते.

## कोरोना व्हायरसच्या संसर्गाची लक्षणे

कोरोनाची सर्वात सामान्य लक्षणे म्हणजे ताप, थकवा आणि कोरडा खोकला. काही रुग्णांना वेदना, अनुनासिक रक्तसंचय, वाहणारे नाक, घसा खवखवणे किंवा अतिसार होऊ शकतो. ही लक्षणे सहसा सौम्य असतात आणि हळूहळू सुरू होतात. काही लोकांना संसर्ग होतो पण त्यांच्यात कोणतीही लक्षणे दिसत नाहीत पण त्यांना बरे वाटत नाही. बहुतेक लोक (सुमारे ८०%) विशेष उपचार न घेता या आजारातून बरे होतात. कोरोना होणाऱ्या प्रत्येक ६ पैकी १ व्यक्ती गंभीर आजारी पडते आणि तिला श्वास घेण्यास त्रास होतो. वृद्ध लोक आणि उच्च रक्तदाब, हृदयरोग किंवा मधुमेह यासारख्या मूलभूत वैद्यकीय समस्या असलेल्या लोकांना गंभीर आजार होण्याची शक्यता असते. ताप, खोकला आणि श्वास घेण्यात अडचण असलेल्या लोकांनी वैद्यकीय सल्ला घ्यावा, असे सांगितले जाते

## व्हायरसचा जगभरात उद्रेक

२०१९ मध्ये कोरोना व्हायरसचा एक उपप्रकार चीनमधील वुहान शहरात आढळून आला. याला कोव्हिड-१९ असे नाव देण्यात आले. सुरुवातीस वुहान व आसपासच्या प्रदेशात पसरलेला

हा विषाणु त्याच्या इतर उपप्रकारांपेक्षा अधिक तीव्रतेचा असून याने रोग्यांच्या मरण्याचे प्रमाण मोठे आहे. १३ मार्च २०२० अखेर जगात १,३२,७५८ जणांना या आजाराची लागण झाली असून एकूण ४९५५ जणांचा मृत्यू झाला आहे. एकूण १२२ देशांमध्ये हा आजार पसरला आहे. चीनमधील हूबै प्रांतात या आजारामुळे सर्वाधिक बळी गेले आहेत. हूबै प्रांतातील वुहान शहरातून या विषाणूची लागण सुरू झाली. या आजारामुळे चीन देशात १३ मार्च २०२० अखेर ३१८० जणांचा बळी गेला असून ८० हजार ९९१ जणांना लागण झाली असल्याचे समोर आले आहे. जागतिक आरोग्य संघटनेने याबाबत माहिती जारी केली आहे ६ एप्रिल २०२० अखेर जगात एकूण १२,१०,९५६ जणांना या आजाराची लागण झाली असून एकूण ६७,५९४ जणांचा मृत्यू झाला आहे. यापैकी युरोपीय देशांत ४९,४७९ तर अमेरिकेत ९,६८० मृत्यू झाले आहेत.

### कशी काळजी घ्यायची...

स्वच्छ हात धुणे. : पाणी आणि साबणाने ४० सेकंद हात धुणे. जर अल्कोहोल असणारे हँड वॉश वापरत असेल तर २० सेकंद पुरेसे आहेत. जर त्याचा हात अस्वच्छ असेल किंवा मातीमुळे खराब झाला असेल तर साबण आणि पाण्याचाच वापर केला पाहिजे. हातरुमाल किंवा टिशू पेपरचा वापर करणे. खोकताना किंवा शिकताना नाकावर आणि तोंडावर रुमाल ठेवणे. रुमाल नसेल तर टिशू पेपरचा वापर करावा, अन्यथा हाताच्या कोपरांने तोंड झाकावे. टिशू पेपरचा वापर केल्यावर तो तात्काळ बंद कचरापेट्टीत फेकून देणे. तोंड, नाक, चेहरा, डोळे यांना स्पर्श करू नका. कोरोना वायरस लोकांच्या थुंकीतून एखाद्या पृष्ठभागावर पडू शकतो. नकळत एखाद्याचा हात त्या पृष्ठभागाला लागू शकतो. त्यामुळे तोंड, नाक, चेहरा, डोळे यांना स्पर्श करणे अनुचित. कमीतकमी तीन फुटांचे अंतर व मुखपट्टीचा (मास्कचा) वापर. समोरच्या व्यक्तीसोबत बोलत असताना त्याच्यापासून कमीतकमी तीन फुटांचे अंतर ठेवा. (या अंतराला सोशल डिस्टन्सिंग म्हणतात.)

### आंबट चवीच्या फळांचा आहारात समावेश करावा.

कोरोना व्हायरसच्या विरोधात लढा घ्यायचा असेल तर आपली रोगप्रतिकारक क्षमता चांगली असणं अत्यंत गरजेचे आहे. यासाठी आंबट चवीच्या फळांचा आहारात समावेश करणे आवश्यक आहे. यामध्ये व्हिटॅमिन सी चे प्रमाण जास्त असते.

### आर्थिक परिणाम

५.२ लाख कोटींचे कर्ज असणाऱ्या महाराष्ट्र राज्याला कोरोनाच्या उद्रेकाने फार मोठ्या आर्थिक संकटातून जावे लागले आहे. उद्योगधंदे सुरू नसल्यामुळे राज्य सरकारला जीएसटी, मुद्रांक शुल्क मधून मिळणारा महसूल बंद झाला. वर्ष २०१९ मार्च महिन्याच्या तुलनेत २०२० मार्च महिन्याचे महसूली उत्पन्न ६०% इतके कमी झाले. राज्याचे उपमुख्यमंत्री व अर्थमंत्री अजित पवार यांनी केंद्र सरकारकडून राज्याला येणे असलेली १६ हजार ६५४ कोटींचा जीएसटी परताव्याची रक्कम अनेक महिन्यांनपासून थकबाकी असल्याचे सांगितले व सदरची रक्कम त्वरीत देण्याची

मागणी केंद्राला लिहिलेल्या पत्रात केली. केंद्राकडून राज्याला देय असलेली थकबाकी आर्थिक वर्षाच्या शेवटच्या दिवशीही न मिळाल्याने शासकीय अधिकारी, कर्मचाऱ्यांचे मार्च महिन्याचे वेतन हे दोन टप्प्यांत देण्यात येणार असल्याचे माहिती उपमुख्यमंत्र्यांनी दिली होती. नितिन गडकरी, प्रकाश जावडेकर तसेच केंद्रीय अर्थमंत्री निर्मला सितारामन् यांना लिहिलेल्या पत्राद्वारे राज्यावर आलेले कोरोनाचे संकट, लॉकडाऊनमुळे ठप्प पडलेल्या अर्थव्यवस्थेची माहिती अजित पवार यांनी कळवून याचा मुकाबला करण्यासाठी २५ हजार कोटींचे विशेष पॅकेज मिळावे अशी मागणी केली. काटकसरीचा भाग म्हणून महाराष्ट्र सरकारने राज्यातल्या सर्व आमदारांच्या पगारांमध्ये एप्रिल २०२० ते मार्च २०२१ अशी संपूर्ण एक वर्षासाठी ३० टक्क्यांनी कपात केली.

### ही खबरदारी पाळा...

येत्या काही दिवसात ज्या गोष्टीची भीती भारतालाच नव्हे तर संपूर्ण जगाला होती, चीनमधल्या वुहान शहरापासून ज्या विषाणूचे संक्रमण संपूर्ण जगात होत आहे, आज संपूर्ण जगामध्ये भीतीचे वातावरण दिसून येत आहे. पण अशावेळी आपण सर्वांनी न भिता या विषाणुचा खंबीरपणे सामना करायला हवा. कारण कोणतीही गोष्ट तुमच्यावर हावी होऊ शकत नाही, जोपर्यंत तुम्ही त्याला हावी होऊ देत नाही. म्हणजेच आपण आपल्या ठिकाणी योग्य ती काळजी घ्यायला हवी; जेणेकरून या विषाणूला आपल्याला स्वतःपासून दूर ठेवता येईल. तर सोबत काही सूचना दिल्यात, त्यांचे योग्यरित्या पालन करावे. जेणेकरून आपण या विषाणुच्या विळख्यात येणार नाही.

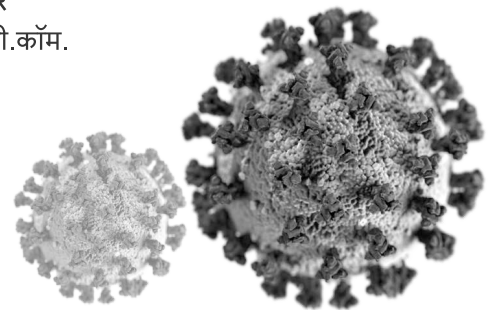
### कोरोना आजारबद्दल घ्यायची काळजी -

काम नसताना सार्वजनिक ठिकाणी जाणे टाळावे. बाहेरून आल्यावर आपले हात अल्कोहोल युक्त हँड सॅनिटायझरने स्वच्छ करून घ्या. ते उपलब्ध नसेल तर साबणाने किंवा हँडवॉशने कमीत कमी २० सेकंद स्वच्छ धुवून घ्यावे. शिकताना, खोकताना, तोंडावर रुमाल किंवा आपल्या हाताच्या कोपराचा सहारा घ्यावा. श्वास घेण्यास त्रास, खोकला, घसा दुखणे यासारखी लक्षणे दिसली तर सर्वात पहिले आपल्या जवळच्या वैद्यकीय केंद्राला भेट द्या. हस्तांदोलन करण्यापेक्षा हाथ जोडून नमस्कार करा.

आपल्या तोंडाला, डोळ्यांना, नाकाला अस्वच्छ हातांनी स्पर्श करू नका. घरून बाहेर पडताना आपल्या तोंडावर मास्क लावून बाहेर पडावे.

### गणेश पठारे

एस.वाय.बी.कॉम.



## जग पुढे... शिक्षण मागे

भारतीय शिक्षणपद्धती फार प्राचीन समजली जाते. पण हीच पद्धत आज कोणत्या मार्गावर आहे हे जाणून घ्यायला हवे.

आज बहुतांश विद्यार्थी शिक्षणासाठी परदेशी जातात. ते का जातात असा विचार करण्याऐवजी आपली शिक्षण पद्धत कोठे कमी पडते याचा विचार करायला हवा.

आज आपल्या देशात पाच हजारांच्या वर व्यावसायिक कॉलेज व तीन कोटीच्या आसपास मुले युनिव्हर्सिटी शिक्षण घेत आहेत. पण SSOCHM च्या अनुसार बहुतांश विद्यार्थी बेरोजगार आहेत. पण का? कारण, हे विद्यार्थी जेव्हा उच्च शिक्षणासाठी लाखो रूपये कर्ज घेतात, त्यासमोर कॉलेज वीस लाखांपर्यंत पैसे चार्ज करतात. पुढे जाऊन या विद्यार्थीना पगार मिळतो वीस ते तीस हजार! यात ते कर्ज काय कर्जाचा हप्ताही फेडू शकत नाही.

आपल्या देशात अभ्यासक्रम बदलायचा असेल तर हे राजकारणी वर्षानुवर्ष फक्त चर्चाच करतात. पण त्याचवेळी विज्ञान, तंत्रज्ञान, IT मध्ये दररोज बदल होतात. मग हे जुनाट शिक्षण काय कामाचं?

परदेशी शिक्षण पद्धतीत विद्यार्थीना Case study, Practical, Problem solving पद्धती शिकवितात. यामुळे जेव्हा ते प्रात्यक्षात नोकरी वा व्यवसाय करतात, तेव्हा ते कोणतीही समस्या सोडवू शकतात.

भारतीय शिक्षण पद्धतीत पुस्तकी ज्ञान

थिअरी नव्वद टक्के व प्रात्यक्षिक दहा टक्के मग Interview मध्ये मुलांना शंभर टक्के प्रात्यक्षिक ज्ञान असावे अशी अपेक्षा कंपनी, संस्था तरी का करतात?

असो!

पण देशाला जर घडायचं असेल, महासत्ता व्हायचं असेल तर शिक्षणाचा पाया मजबूत करायलाच हवा. तरच देश प्रगती होऊन देश विकासाच्या मार्गावर चालेल.

भारत देशाने मागील दहा वर्षांपासून खूप प्रगती केली आहे. पण शिक्षण व्यवस्था बदलायला तयार नाही. लोकांनी शिक्षणाचा व्यवसाय, धंदा केला आहे. ज्या गोष्टी वेळेवर आपला प्रवाह बदलतात त्या गोष्टी कायम टिकून राहतात. पण ज्या गोष्टी वेळेवर बदलत नाही, Upgrade होत नाहीत त्या गोष्टीना काहीही अर्थ राहत नाही. ज्यादिवशी शिक्षण हे प्रगतीचे माध्यम म्हणून ओळखले जाईल त्यादिवशी आपला देश खरा यशाच्या शिखराकडे वाटचाल करेल.

उमेश ढमाले

टी.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)

## विचार बदला जीवनाची दिशाही बदलेल.

एक खूप श्रीमंत माणूस होता. पण त्याच्याकडे असलेल्या संपत्ती एवढे त्याचे मन मोठे नव्हते. एखाद्याला पैसे दिले तर स्वतःचे मोठेपण तो दहा लोकांना जाऊन सांगायचा. तो जेथे-जेथे जायचा तेथे आपण किती दानशूर आणि दयाळू आहोत, याबद्दल सांगायचा. एके दिवशी शहरात थोर विचारवंत आले असल्याचे त्याला कळले. तो त्वरित त्यांना भेटायला गेला. त्या श्रीमंत माणसाचे आदरातिथ्य केल्यावर त्या थोर विचारवंताने त्याला येण्याचे कारण न सांगता तो स्वतःच्या संपत्तीचे आणि दानशूरतेचे गोडवे गाऊ लागला.

त्याच्या दानशूरपणाच्या गोष्टी सांगून झाल्यावर त्या श्रीमंत माणसाने पैशाचे पाकिट काढून थोर विचारवंताला देऊ केले आणि म्हणाला, 'तुम्हांला पैशाची गरज आहे. असे मला वाटले म्हणून मी हे आणले आहे.'

हे सांगत असताना त्याच्या डोळ्यात वेगळाच अहंकार दिसत होता. ते थोर विचारवंत पैशाचे पाकिट बाजूला करत म्हणाले, 'मला पैशांची नव्हे तर तुझी गरज आहे.' हे ऐकून तो श्रीमंत माणूस दुखावला गेला. मी दिलेले पैसे यांनी नाकारण्याची हिंमतच कशी केली. आतापर्यंत मी दिलेले पैसे कोणीही नाकारण्याचे धाडस केले नाही, असे तो मनातल्या मनात म्हणाला.

तेवढ्यात थोर विचारवंत म्हणाला, 'तुला माझ्या वागण्याचे वाईट वाटले असेल ना!'

तो श्रीमंत माणूस म्हणाला, 'वाईट तर वाटणारचं, मी देऊ केलेली मदत तुम्ही नाकारलीत. जणू काही मी हे पैसे नाही तर माती आहे.'

हे ऐकून ते विचारवंत म्हणाले, 'हे पहा महाशय, दात्याने केवळ पैसे दिले आणि स्वतःला अर्पण केले नाही तर त्याचे मोल मातीप्रमाणेच असते. दान या शब्दाचा खरा अर्थ आहे की कोणत्याही असलेल्या गोष्टीचे समान भाग करून अर्धी गोष्ट दुसऱ्याला देणे. हे पैसे जे तू मला दिलेस ते काही सगळेच तुझे नाहीत. तर हे पैसे तू दान करतोय यात अभिमान काय बाळगायचा? हे तर तू केलेल्या चोरीचे प्रायश्चित्त केल्यासारखे आहे.'

हे ऐकून त्या धनिकाचा अहंकार गळून पडला आणि त्याचे विचार बदलेले.

तात्पर्य : विचार बदला जीवनाची दिशाही बदलेल.

गौरी ठाकूर

एस. वाय. बी. कॉम.



# वाणिज्य मंडळे (चेंबर्स ऑफ कॉमर्स)



आपल्यापुढील सर्वसाधारण प्रश्न व अडचणी सोडवण्यासाठी तसेच आवश्यक त्या सुविधा प्राप्त करून घेण्यासाठी प्रादेशिक तत्वावर व्यापार व उद्योग यांचा स्थापण्यात आलेल्या संघटना ही व्याख्या सर्वसामावेशक असून जगाच्या सर्व भागातील सर्व प्रकारच्या तत्त्वप्रणाली अंती देशामधील वाणिज्य मंडळांना ती लागू होते. निरनिराळ्या देशात स्थानिक परिस्थिती व गरजा यानुसार या संस्थांना कामाचे स्वरूप कमी अधिक प्रमाणात बदलत असते.

फार पूर्वीपासून निरनिराळ्या देशात वाणिज्य मंडळे या ना त्या स्वरूपात काम करीत आहेत. निरनिराळ्या प्रकारच्या वस्तू तयार करणाऱ्या कारागिरांच्या संघटना कमीअधिक स्वरूपात वेदकालापासून अस्तित्वात असल्याचे उल्लेख सापडतात. समूह, श्रेणी, निगम, गण, पसंद, युग अशा अनेक नावांनी उपनिषदांमध्ये त्यांचा उल्लेख आढळतो. एकाच तऱ्हेच्या कारागिरांच्या संघटना यात जशा आढळतात तसेच आर्थिक उन्नतीकरता निरनिराळ्या व्यवसायातून, संघातून एकत्रित आलेले लोकही आढळतात. आपल्या व्यवसायातील कारागिरांच्या कामाचा मोबदला ठरविणे व्यवसायातील धार्मिक सुट्ट्या ठरविणे विधवा व नादार मुलांच्या आश्रयाची सोय करणे इ. कामे या संघातर्फे केली जातात. अलिकडील काळात गुजरात, राजस्थान यांसारख्या राज्यात एक एका व्यवसायातील महाजन ही संस्था अस्तित्वात आल्याचे व तिच्यातर्फे अनेक व्यवसायांचे संघटन केले जात असल्याचे दिसते.

वाणिज्य मंडळ आणि व्यापारी इतर संस्था :

वाणिज्य मंडळाचे प्रकार :

१. ब्रिटिश पद्धतीची वाणिज्य मंडळे
  २. युरोपीन पद्धतीची वाणिज्य मंडळे
  ३. साम्यवादी पद्धतीची वाणिज्य मंडळे
  ४. संमिश्र पद्धतीची वाणिज्य मंडळे
- वाणिज्य मंडळाची कामे :

१. सदस्यांच्या अडीअडचणीचे निवारण.  
अ) व्यापार उद्योग विषयक विषयांवर मतप्रदर्शन  
आ) व्यापार उद्योगांचे इतर संघटनांवर प्रतिनिधित्व
२. सदस्यांना सेवा साहाय्यक
३. समाजातील इतरांना सेवा साहाय्य  
अ) प्रादेशिक सुविधा  
आ) शिक्षण क्षेत्रातील कार्य

- इ) प्रादेशिक नियोजनातील कार्य
- ई) इतर समाजउपयोगी कामे.

भारत : ब्रिटिश भारतात येण्यापूर्वी भारतातील व्यापारांची किंवा कारागिरांचे अनौपचारिक संघ येथे काम करीत होते. गुजरातमध्ये व्यापारी महाजन या नावाने संस्था प्रसिद्ध होती. इंदूर संस्थानात 'ग्यारा पंच' नावाची संघटना होती आणि तिला काही कायदेशीर अधिकार देण्यात आले होते. त्याखेरीज मारवाडी जमातीतील व्यापाऱ्यांनी ठिकठिकाणी मारवाडी संमेलने स्थापन केली होती आणि याच संमेलनांचे पुढील काळात वाणिज्य मंडळात रूपांतर केले गेले. ईस्ट इंडिया कंपनीची भारतातील व्यापारी मक्तेदारी १८३३ साली संपुष्टात आल्यानंतर अनेक ब्रिटिश व्यापारी भारतात आले आणि त्यांनी भारताशी व्यापार सुरू केला. त्यावेळी ह्या व्यापारी मंडळांनी एकत्र येऊन इंग्लंडसारख्या भारतात चेंबर्स ऑफ कॉमर्स स्थापनाचा निर्णय घेतला. १८३३ साली कलकत्ता येथे व १८३६ साली मद्रास व मुंबई या दोन शहरात स्थानिक वाणिज्य मंडळांची स्थापना केली. ही मंडळ अजून चालू असून भारतातील प्रमुख वाणिज्य मंडळामध्ये त्यांची गणना करण्यात येते. पुढे ब्रिटिश व्यापाऱ्यांनी कोचीन १८५७, कराची १८६६, काकीनाडा १८६८, अप्पर इंडिया १८८८, पंजाब १९०९, तुतीकोरीन १९०६ आणि चितगाँग १९०६ येथे अशीच मंडळे स्थापन केली.

पारतंत्र्यात ब्रिटिश व्यापाऱ्यांचे आणि भारतातील व्यापाऱ्यांचे हितसंबंध हे नेहमी परस्परविरोधी असतं. त्यामुळे युरोपीय वाणिज्य मंडळे आणि भारतीय वाणिज्य मंडळे असे दोन गट पडून दोघांनीही आपापल्या हितसंबंधाची जपणूक करण्याची धडपड चालवली होती. यापैकी युरोपीय किंवा ब्रिटिश वाणिज्य मंडळांना तत्कालीन ब्रिटिश सरकारचे प्रोत्साहन असे व त्याची मते ऐकून घेतली जात. परंतु भारतीय वाणिज्य मंडळाने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस व भारतीय नेते यांच्या साहाय्यानेच आपले म्हणने सरकारपुढे मांडून ते मान्य करून घेण्याचा प्रयत्न केला. त्यामुळे महात्मा गांधी, चित्तरंजन दास, यासारख्या राष्ट्रीय नेत्यांशी वाणिज्य मंडळाचा अतिशय निकटचा संबंध आलेला दिसतो.

वैष्णवी तावरे  
टी. वाय. बी. कॉम.



## लेक लाडकी माहेरची

खूप दिवस झाले काही लिहिलं नाही. पण आपल्या माणसांची आठवण येत राहते आणि मग पेन आणि वही हातात घेतली की तुमच्यासारख्या मित्रांच्या, नातेवाईकांच्या आशीर्वादने व शुभेच्छांमुळे काहीतरी सुंदर सुचत. म्हणूनच आजचा हा लेख आपणा सर्वांसाठी पण खास त्या राजकुमारीसाठी आणि तिच्या वडिलांसाठी फ्रीज, सोफा, भांडी, फॅन, मिक्सर, बेड, ड्रेसिंग, आलमारी या आहेत मुलींच्या लग्नात आंदण देण्यात येणाऱ्या वस्तू...! मग ती कधी काका, मामा, मावशी, आत्या वा घरातील जवळचे नातेवाईक यांनी दिलेल्या असतात.

मित्रांनो हा सर्व हिशोब केला तरी आणि इतर खर्च पाहिला तरी आपण फक्त ज्यांनी ज्यांनी हा खर्च उचलला आहे ते लोक आपलं नावं येण्यासाठी खूप खटाटोप करतात आणि अभिमानाने मिरवतात.

पण वडील आपल्या मुलीच्या लग्नात किती खर्च करतात, त्याचा हिशोब आपण करतो का ?

तर नाही!

\*\*\*

आत्ता लग्नाचा सिझन चालू होईल. आपण सर्वजण लग्नाला हजर राहत असतो. मित्र, नातेवाईक यांना भेटतो आणि भेटलंही पाहिजे. एकमेकांचे विचार, आचार आणि खुशाली या गोष्टी ओघाने येतात. पण मंडळी इथून पुढे विवाह सोहळ्यात गेल्यावर नवरा-नवरीला भेटा. पण अजून एका व्यक्तीला आवर्जून भेटा.... तो म्हणजे मुलीचा बाप!

आपण लग्नाला आला व 'खास तुम्हालाही भेटायला आलोय' असं आवर्जून सांगा. भले लग्न कसेही झाले असेल, भले जेवण खारट, आळणी, तिखट झाले असेल तरी आवर्जून, 'लग्न व जेवण खूप छान झाले व मुलीचे कल्याण झाले! विवाह सोहळा थाटात संपन्न झाला, नियोजन खूप छान होते. लग्नाला खूप समाज होता. एकूण काय तर तर लग्न खूप मोठे झाले.' असे सांगा. आणि खर सांगू का मंडळी आपले हे शब्द, शुभेच्छा ऐकण्यासाठी त्या मुलीच्या वडिलांनी अखेव आयुष्य त्याने पणाला लावलेले असते.

मुलगी वयात आल्यानंतरची त्याची धडपड मुलीला चांगले स्थळ मिळावे, तिचा साथीदार हुशार, निर्व्यसनी, वेल सेटल आणि घरातील लोक मिळून मिसळून घेणारी असावीत या माफक अपेक्षा ठेवून तो त्या गोष्टीसाठी वणवण फिरत असतो.

आज हे पाहुणे उद्या दुसरे, आज हे गाव उद्या ते गाव, आज या गावचे पाहुणे तर उद्या त्या गावचे पाहुणे बघायला येणार आहेत. त्यासाठीची तय्यारी. खिशात पैसे असो वा नसो हे तो कुणाला जाणवू देत नाही. माझी 'राजकुमारी' सुखात कशी राहिल आणि तिचे हात पिवळे कसे होतील हेच लक्ष, हिच चिंता त्याला सारखी सतावीत असते. आणि यातच मुलीचे लग्न ठरते. अपेक्षित असे स्थळ मिळते आणि प्रवास सुरु होतो सुंदर आशा 'शुभ विवाह सोहळ्याचा'!

कुणी काय नियोजन करायचे, पत्रिका, बॅंड, घोडे, फोटोग्राफर, मंडप, आचारी, डेकोरेशन, लग्नाचा हॉल, सर्वांचे मानपान, भावकीचा सन्मान अशा अनेक गोष्टींचा विचार करावा लागतो.

खरंतर मंडळी, वडील गरीब असो वा सर्वसामान्य कुटुंबातील किंवा अतिश्रीमंत पण त्याच आपल्या 'राजकुमारी'वरील प्रेम हे तेवढंच असते.

कदाचित या सर्व बाबी आपल्याला माहीत असतात पण कदाचित त्या आपल्या हातून गेलेल्या नसतात त्यामुळे आपल्याला त्याच महत्त्व कळत नाही. पण ही वेळ त्या वडिलांची कसोटीची असते. शारीरिक, मानसिक, आर्थिक दडपण असते.

म्हणून मंडळी इथून पुढे लग्न लागल्यानंतर थोडं थांबा आणि त्या एका मोठ्या दात्याची भेट घ्या. कारण त्याने आपला पोटचा गोळा एका अनोळख्या व्यक्तीकडे सोपवलेला असतो. पण तुमच्या त्या शब्दांनी, शुभेच्छांनी आणि मोठे असाल तर आशीर्वादने त्याला मोठा दिलासा मिळेल आणि त्याच्या जन्माचे 'सार्थक' झाले, मी कृतकृत्य झालो या गोष्टीने त्याचे डोळे आनंदाश्रुंनी भरून येतील.

वेदांत घाडगे

एफ.वाय.बी.ए.

# कोरोना अस्तित्वाची नवी लढाई...

‘कोरोना’ विषाणू जगभर थैमान मांडतो आहे. नुसती काळजी म्हटलं तरी मनासोबत जिवाच्याही नुसत्या ठिकऱ्या ठिकऱ्या होऊ लागल्या आहेत. अनेक जीवन-मरणाच्या लढाया माणूस मोठ्या साहसाने आणि धिराने जिंकत आलाय. हा माणसांचा इतिहास आहे. जे काही माणसाच्या प्रगतीला, विकासाला बाधा आणत होते, त्याबरोबर दोन हात करून ते प्रश्न, समस्या माणसाने कायमच्या सोडविल्या आहेत. विज्ञान, तंत्रज्ञान, संशोधनाच्या जोरवर माणूस स्वतःला विकसीत करत आला आहे. परिस्थिती कशीही असो त्यानुसार स्वतःला नियंत्रित करत, कधी मात करत त्याच्यावर स्वार झाला आहे. पण हा ‘कोरोना’ विषाणू जगभर थैमान घालतो आहे. जगाच्या कानाकोपऱ्यात तो जाऊन धडकला आहे. नुसताच धडकला नाही, तर माणसाच्या प्रगती, संशोधनाला तो आव्हान देतो आहे. मानवाद्वारे विकसीत, निर्मित तंत्रज्ञानावरही पायबंद घालायला लावले आहेत. त्यामुळे माणसाला ‘लॉकडाऊन’ व्हावे लागले, हे प्रथमतःच घडत असावे. मानवी इतिहासात. आज आंतरराष्ट्रीय दळणवळण बंद करण्यात आले आहे, भारतातला जिल्हा-जिल्हा, गाव-गाव लॉकडाऊन करणे भाग पडले आहे. संपर्क, सहवास, फिरणे, आणि माणसाचे घराबाहेर पडणं बंद केलंय या कोरोनाने. एकूणच काय तर माणसाच्या अस्तित्वावरच प्रश्नचिन्ह उभे राहिले आहे.

याही परिस्थितीत जगभरातल्या डॉक्टर, नर्स, आरोग्य कर्मचारी आणि स्वच्छता कर्मचारी यांनी मात्र कोरोनाला हरवण्याचे जे धैर्य दाखवले आहे, त्याला कुठल्याही शब्दात मांडण्याची, व्यक्त करण्याची आता तरी भावनिक तयारी उरलेली नाही. कारण हे असे संवेदनशील वास्तव आहे, जे कशातही मावणार नाही. माणसासाठीचे हे अमूल्य योगदान आहे. पुढे मात्र अनेक वर्षे हे गौरवाने इतिहासाला सांगावे लागेल. सोबत शासन आणि प्रशासनाने अनेक जोखमी घेतल्या आहेत, या कोरोनाच्या संकटावर यशस्वी मात करायची म्हणून! तेव्हा आपण खरंच माणूस म्हणून स्वतःकडे पहात असू तर हे लॉकडाऊन समजून घेणे गरजेचे आहे. अस्तित्वाला स्वीकारून समयसूचक भूमिका आपल्याला घ्यावीच लागेल. शासन-प्रशासनाने वेळोवेळी दिलेल्या सूचना व आदेशांचे योग्य पालन करणे गरजेचे आहे. आणि त्यातच या कोरोनाचा पराभव आहे. काळजीच्याच आधारे लढले जाणारे हे जगातले एकमेव आणि पहिले युद्ध असावे. मनुष्यबळ, स्पर्धा, एकता, संख्या आणि शस्त्र, अस सारं या युद्धात कुचकामी आहे. हे जे युद्ध आहे ते घरात बसूनच जिंकता येऊ शकते संयमाच्या जोरवर. मग असंच एकाकी रहायचंय माणसाने काही दिवस तरी.

लढत रहायचंय एकत्र न येता, घरातच बसून. हीच आपली सध्यातरी नव्या जीवनाची, नव्या जगाची देखील सुरुवात असणार आहे. म्हणूनच लॉकडाऊन अत्यंत महत्त्वाचे ठरणार आहे. या २१ दिवसात आपण आपल्या या लढ्याला निर्णायक ठरवू शकतो. पण ही ताळाबंदी प्रत्येकाला सजग राहूनच यशस्वी करावी लागणार आहे. राजकीय, शैक्षणिक, आणि आर्थिक आघाड्यांवर हा ताळेबंद बिघडणार आहे. पण तो सावरायची तयारी करता येईलही नंतर. पण आजची ही आपल्याच म्हणजे माणसाच्याच अस्तित्वाची लढाई आहे. ती लॉकडाऊन झालेल्या हतबलतेतही निकराने लढावी लागेल, स्वतःही लॉकडाऊन होऊनच....! आज राष्ट्रीय, आंतरराष्ट्रीय असे काहीच राहिले नाही. सगळंच्या सगळं अगदी ठप्प आहे. व्यापाराच्या, व्यवहाराच्या, देवाणघेवाण करणाऱ्या अनेक साखळ्या अस्ताव्यस्त झाल्या आहेत. ज्या पूर्ववत, पूर्वपदावर येतील का नाही, ही सध्याची तरी अनिश्चितता आहे. खाजगी असंही काही शिल्लक उरलं नाही, ज्यायोगे या लढाईस सामोरे जाता येईल. जात, धर्म, प्रदेश आणि देश असं कसलही बंधन या कोरोनाला जागतिक होण्यापासून रोखू शकले नाही. अशा या संकटाला कसल्याही सीमाच उरल्या नाहीत. म्हणून ह्या लॉकडाऊनला सामोरे जाताना माणुसकी विश्वव्यापी होणं गरजेचे आहे.

युवाल नोवा हरारी हे प्रसिद्ध इतिहास संशोधक म्हणतात त्याप्रमाणे कोरोना आणि अशाच येणाऱ्या संकटाविरोधातली ही लढाई आता वैश्विक होऊनच लढलेली बरी. नसता एकविसाव्या शतकात या पृथ्वीवर माणसाचेच अस्तित्व राहणार नाही. या आणि अशा आणीबाणीत आपली युद्धतंत्र ही राष्ट्रीय असण्यापेक्षा मानवी असावी. हा इशारा समजून घेतला पाहिजे. कारण आजचे चित्र भयानकतेकडे घेऊन जाणारे आहे. विजयाची वृत्ती जोपासणारा, सतत धडपड करणारा, प्रयोगाअंती ठोस उत्तरासाठी जीवाचा आटापिटा करणारा माणूस युद्धभूमीवर येण्याआधीच या कोरोनाने बाद केला आहे. अनिश्चिततेच्या खुल्या मैदानात तो नुसताच उभा आहे. मनगट आणि शक्ती-बुद्धीचा उपासक असणाऱ्या या जीवालाला जे होतंय ते केविलवाणे, स्तब्धपणे पहात राहण्याशिवाय पर्यायच उरला नाही. म्हणूनच हे लॉकडाऊन मोठ्या विश्वासाने आणि परिश्रमाने यशस्वी करायचे आहे. माणूस म्हणून उरायचे आहे आणि जगभर मिरवायचे देखील आहे.

वैभव वाघमारे

टी.वाय.बी.कॉम.



## कोरोनाचे परिणाम व उपाय

कोरोना नावाचा विषाणू २०२० च्या डिसेंबर महिन्यापासून अचानकपणे आक्रमण करता झाला आणि या विषाणूने संपूर्ण जगभर भीती, अस्थिरता, चिंता, असुरक्षितता व मृत्यू यांचं थैमान घालायला सुरुवात केली. या मृत्यूच्या भीषण छायेखाली जवळजवळ १८० देश होरपळून निघाले आहेत. या कोरोनाचे राजकीय, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आणि मानसिक परिणाम काय होणार आहेत याचा विचार गांभीर्याने करणं अत्यंत आवश्यक आहे.

आय.एम.एफ.च्या म्हणण्यानुसार, गेल्या १०० वर्षांतली ही आर्थिक क्षेत्रातली सगळ्यात मोठी मंदी असणार आहे. आपल्यावरचं सध्या असलेलं अरिष्ट दोन तऱ्हेचं आहे. रुचिर शर्मासारख्या अनेक तज्ज्ञांचं असं मत आहे की- जर कोरोना मे-जून महिन्याच्या आत आटोक्यात आला नाही, तर २००८ मध्ये जी मंदी (ग्रेट रिसेशन) आली होती, तशी मंदी येऊ शकेल आणि हेच कोरोनाचं संकट मे-जून पर्यंत नियंत्रणात आलं नाही, तर मात्र १९२९ मध्ये जी महामंदीची (ग्रेट डिप्रेशन) स्थिती जगावर ओढवली होती तेवढी गंभीर परिस्थिती जगावर ओढवून जगाची अर्थव्यवस्था प्रचंड प्रमाणात कोलमडून पडेल. इकॉनॉमिक स्लो-डाऊन, रिसेशन आणि डिप्रेशन यात फरक आहे. आपला जीडीपी वाढीचा दर कमी झाला (उदाहरणार्थ, ८% वरून ७.५% किंवा ६%), तर त्याला इकॉनॉमिक स्लो-डाऊन असं म्हणतात. पण जेव्हा देशाचा जीडीपी वाढीचा दर निगेटिव्ह होतो- म्हणजेच जीडीपी चक्र कमी-कमी होत जातो आणि तो ६ महिने टिकतो, तेव्हा 'रिसेशन आलं' असं म्हटलं जातं. इकॉनॉमिक स्लो-डाऊन, रिसेशन यापेक्षाही वाईट फेज म्हणजे डिप्रेशन होय! जीडीपी वाढीचा दर -१०% किंवा त्यापेक्षाही जास्त खाली सतत ३ वर्षांपासून असेल, तर तो काळ डिप्रेशनचा समजावा. हा डिप्रेशनचा अतिशय वाईट काळ १९२९ मध्ये आला आणि हा काळ जवळजवळ १० वर्षे चालला. त्या वेळी जगाचा जीडीपी

वाढीचा दर -१५% होता. बहुतांश देशांत बेरोजगारांची टक्केवारी २५% ते ३०% एवढी होती. त्यानंतर तेवढी वाईट अवस्था जगावर कधीही आली नाही. अनेक अर्थतज्ज्ञांच्या मते, कोरोनामुळे जगाची स्थिती १९२९ च्या ग्रेट डिप्रेशनसारखी होणार आहे. उदाहरणार्थ, फ्रान्सचा जीडीपी वाढीचा दर -३% वर आला आहे. हाच दर जर्मनीमध्ये -१०% होईल, अशी शक्यता वर्तवली जात आहे. युरोपमध्ये इतर देश आणि अमेरिका इथेही जीडीपी वाढीचा दर -५% ते -१०% इतका कमी होईल, असं अनेक तज्ज्ञांचं म्हणणं आहे.

महामंदीच्या वेळी अमेरिकेमध्ये २५% बेरोजगारी निर्माण झाली होती. आजच अमेरिकेमध्ये ३३% बेकारी आहे. सध्या भारतात २४% बेकारी असून अर्धबेकारीचं प्रमाण तर विचारायलाच नको. सध्या सगळे व्यवहार आणि सगळं काही ठप्प असल्यामुळे लोकांचं कामही बंद झालं आहे. पण १९२९ किंवा २००८ च्या मंदीचं स्वरूप वेगळं होतं. त्या वेळी लोकांच्या हातात पैसाच नसल्यामुळे वस्तूंना मागणी नव्हती. बाजारात आहे तोच माल खपत नाहीये, त्यामुळे 'आणखी कशाला उत्पादन करायचं?' असं उद्योजक म्हणायचे आणि मग कारखाने बंद पडायचे. पुन्हा बेकारी वाढायची. माणसांची खरेदीक्षमता कमी व्हायची व म्हणून वस्तूंची मागणी घटायची आणि मंदीचं दुष्टचक्र सुरू राहायचं. अशा तऱ्हेनं ते म्हणजे 'डिमांड' अरिष्ट होतं. पण आताचं अरिष्ट वेगळं आहे. त्यात मागणीबरोबरच (डिमांड) पुरवठा (सप्लाय) देखील ठप्प झाला आहे. आता बडे उद्योगच नव्हे, तर लहान उद्योगही प्रचंड मोठ्या संकटात आहेत.

पूर्वी मंदी आली की, मंदीतून बाहेर येण्यासाठी मॉनिटरी पॉलिसी आणि फिस्कल पॉलिसी हे दोन मार्ग असायचे; आर.बी.आय. मॉनिटरी पॉलिसी जाहीर करते आणि त्यात व्याजदर, रेपो रेट कमी करणं असे उपाय असायचे, तर सरकार फिस्कल पॉलिसी जाहीर करते, त्यात सरकार मनरेगासारख्या

योजनांद्वारे खर्च करत असे. मॉनिटरी पॉलिसीप्रमाणे बँकेचे व्याजदर कमी झाले; तर ग्राहक घरं, गाड्या, टीव्ही वगैरे घेण्यासाठी जास्त पैसे कर्जाऊ घेऊन खर्च करावी. त्यामुळे बाजारातली मागणी वाढेल. या कमी झालेल्या व्याजदरांमुळे उद्योजकही जास्त कर्ज काढून कारखाने/उद्योग सुरू करतील आणि उत्पादन/रोजगार वाढवतील, त्यामुळे खरेदीक्षमता/मागणी पुन्हा वाढेल असं तत्त्व होतं. तसंच फिस्कल पॉलिसीप्रमाणे सरकारी खर्च वाढला, तरीही रोजगार वाढेल आणि त्यामुळे खरेदीक्षमता व वस्तूंची मागणी वाढेल, असा युक्तिवाद होता. या दोन्ही मार्गांमुळे अरिष्टातून थोडंफार तरी वर येता यायचं. आता मात्र हे दोन्ही मार्ग कोरोनाच्या परिस्थितीत किती उपयोगी पडतील, ही शंका आहे.

रोजगारावर कोरोनाचे मोठ्या प्रमाणात परिणाम झालेले दिसताहेत. अमेरिकेत ४.७ कोटी लोकांच्या नोकऱ्या जातील आणि बेकारीचं प्रमाण वाढेल, असं तज्ज्ञांचं मत आहे. सध्या ४४% कॅनेडियन कुटुंबांमध्ये एकतरी बेकार आहे. जर्मनीमध्ये ५ लाख लोकांना घरी बसायला सांगितलं आहे. या लोकांना आपली उपजीविका कशी चालवावी हा भेडसावणारा प्रश्न आहे.

कोरोनाच्या संकटाचे प्रचंडच दूरगामी परिणाम होतील. जागतिकीकरणाला हा एक मोठा धक्का आहे. जागतिकीकरणामुळे प्रचंडच इंटरलिकेजेस तयार झाली आहेत. उदाहरण द्यायचं झालं तर- एका मशीनचे अनेक पार्ट्स बनवायचे असतील, तर ते अनेक देशांमध्ये तयार होत आणि नंतर हे सगळे एकत्र केले जात. यामुळे प्रत्येक देशाचं इतर अनेकांवरचं परावलंबित्व प्रचंड वाढलं. आता कोरोनामुळे या लिकेजेस आणि या सप्लाय चेन्स मोडून पडल्या. त्यामुळे जागतिकीकरणावर, आऊटसोर्सिंगवर- आणि विशेषतः चीन आणि भारत यांच्यावर- आपण खूपच परावलंबी आहोत, हे प्रगत राष्ट्रांच्या लक्षात आल्यामुळे पुन्हा रीशोअरिंगचा किंवा जागतिकीकरणाच्या विरुद्ध असा विचार बळावतोय. उदाहरणार्थ- लॉकडाऊनमुळे भारतातली कॉल सेंटर्स बंद पडली, तेव्हा त्यांच्यावर अवलंबून असलेले अमेरिकेतले बँकांचे ऑनलाईन व्यवहार ठप्प झाले. त्यामुळे आता अमेरिकेतच ओक्लाहामा किंवा टेनेसी इथे कॉल सेंटर्स स्थापण्याचा विचार अमेरिकेत चालू आहे.

या डीग्लोबलायझेशनला खरं तर पूर्वीपासूनच सुरुवात झाली होती. आता, या क्षणाला स्पेन व इटली या देशांमध्ये कोरोनामुळे हाहाकार वाढलाय आणि सगळे देश ईयूचे (युरोपियन युनियन) सभासद असूनही या देशांना मदत करण्यासाठी पुढे यायला जर्मनीनं सपशेल नकार दिलाय. काही वर्षांपूर्वी ग्रीसमध्येही असंच अरिष्ट आलं होतं, तेव्हादेखील ग्रीसला साह्य करण्यासाठी जर्मनी फारसा पुढे आला नव्हता. ब्रिटननं ब्रेक्झिट घेणं, अमेरिका व चीन यांच्यात व्यापारयुद्ध सुरू होणं, अमेरिकेनं आयात-निर्यात यावरचे कर वाढवणं, मेक्सिको व इतर देशांमधून लोकांच्या येण्यावर बंधनं आणणं आणि त्यासाठी भिंत बांधण्याचा कार्यक्रम आखणं, ट्रम्पनं कर वाढवणं- या गोष्टी पूर्वीपासून जागतिकीकरणाला खिडार पाडतच होत्या. आता त्यात कोरोनाचीही भर पडलीय. त्यामुळे जागतिकीकरण पूर्णपणे संपून नक्कीच जाणार नाही, पण ते

खिळखिळं मात्र होईल. या काळात राष्ट्रवाद वाढेल आणि जागतिकीकरणाचा उदो-उदो कमी होईल. यानंतर कदाचित अमेरिका आणि चीन यांचं वर्चस्व कमी होईल. भारतानं या परिस्थितीत योग्य पावलं उचलली, तर भारताला याचा खूपच फायदा होऊ शकतो. यानंतर जेव्हा जग कोरोनातून बाहेर पडेल, तेव्हा ते आर्थिक-राजकीय दृष्ट्या आमूलाग्र बदललेलं असेल.

उदाहरणार्थ, कोरोनानंतरच्या जगात ऑटोमेशनला प्रचंड महत्त्व येईल. आर्टिफिशिअल इंटेलिजन्स आणि रोबोटिक्स यांच्यामुळे पुढच्या १०-१५ वर्षांत रीशोअरिंग वेगानं वाढेल आणि सध्या चीन व भारत इथे आऊटसोर्स झालेले सगळे नसले, तरी अनेक उद्योग पुन्हा अमेरिका, युरोप आणि जपानकडे परत जातील. पण या प्रक्रियेला १०-१५ वर्षं लागतील. या काळात आऊटसोर्सिंग चालू राहील, पण अनेक पाश्चिमात्य कंपन्या चीनला पर्याय शोधतील आणि शक्यतो जवळच्या देशांमध्ये आपलं आऊटसोर्सिंग हलवण्याचा विचार करतील. उदाहरणार्थ, अमेरिका ही मेक्सिको किंवा दक्षिण अमेरिकेतल्या देशांचा पर्याय शोधेल. त्यातला आऊटसोर्सिंगचा काही भाग भारताकडेही येऊ शकतो. दक्षिण कोरियानं आपला उद्योग चीनकडून भारताकडे वळवायचं ठरवलंय. याचप्रमाणे भारतानं आत्तापासून नीट नियोजन करून युरोप, जपान आणि ऑस्ट्रेलिया या देशांतून आपल्याकडे काय आऊटसोर्स होऊ शकेल, हे खूप आक्रमक तऱ्हेनं बघितलं पाहिजे. याचं कारण चीनकडून सगळं आऊटसोर्सिंग थांबणार नाही, पण त्यातला बराच भाग भारताकडे येऊ शकेल. भारतानं यासाठी खूप प्रयत्न केले पाहिजेत. ट्रम्प-चीन यांचं व्यापारयुद्ध चालू असताना बांगलादेश आणि व्हिएतनाम यांनी प्रयत्न करून बरंचसं आऊटसोर्सिंग मिळवलं. भारतानं ती संधी गमावली. आता मात्र ती गमावता कामा नये. तसं केलं, तरच आपलं 'मेक इन इंडिया' स्वप्न पूर्ण होईल आणि ते पूर्ण करताना आपल्याला लघु/मध्यम उद्योगांचा विकास करता येईल.

पण आपल्याला हा खेळ खूप जपून आणि दूरदृष्टीनं खेळावा लागेल. कारण आपण जो आऊटसोर्सिंगचा उद्योग भारतात आणू त्यातला बराचसा भाग आर्टिफिशिअल इंटेलिजन्स आणि रोबोटिक्स यांच्यामुळे पुन्हा रीशोअर होऊन काही वर्षांनंतर त्या- त्या देशांमध्ये परत जाण्याचीही शक्यता विचारात घेऊन आपली वाढलेली औद्योगिक क्षमता त्यानंतर देशांतर्गत उत्पादनासाठी कशी वापरता येईल, याचा आत्तापासून विचार करायला हवा. अन्यथा आपण तोंडघशी पडू.

हे सगळं करत असतानाच आपण भारतातली अंतर्गत बाजारपेठ विकसीत केली पाहिजे. फक्त बड्या कॉर्पोरेट्सवर अवलंबून न राहता लघु व मध्यम उद्योग आणि शेती, तसंच ग्रो बिझिनेस यांच्याकडे विशेष लक्ष देऊन त्यांची वाढ केली पाहिजे. यामुळे रोजगार वाढेल आणि आपल्याला हे वाढलेले उद्योग अंतर्गत बाजारपेठेसाठी उपयोगी पडतील.

हे सगळं झालं लॉग टर्ममध्ये. पण कोरोनावरची लस निघेपर्यंत म्हणजे २०२१ च्या शेवटापर्यंत किंवा निदान औषध निघेपर्यंत किंवा हर्ड इम्युनिटी येईपर्यंत म्हणजे २०२१ च्या सुरुवातीपर्यंत

काय होईल ? आणि आपण काय केलं पाहिजे ?

कोरोनामुळे शिक्षणक्षेत्रात जगात जवळजवळ १५० कोटी विद्यार्थ्यांवर प्रचंड परिणाम झाला आहे. शाळा-कॉलेजेस बंद झाली आहेत आणि परिक्षाही ठप्प झाल्या आहेत. पुढच्या काळात शाळा-कॉलेजेसमध्ये न जाता, ई-बुक्स वाचणं आणि ई-लर्निंगनं अभ्यास करणं वाढेल. पण भारतासारख्या ठिकाणी अजून तरी ई-लर्निंगच्या वापरावर बऱ्याच मर्यादा पडतील. पण मुलं आता एकत्र खेळणार नाहीत. लहान मुलांवर याचा खूप वाईट परिणाम होईल. कोरोनानंतर टेलि-वर्किंग आणि व्हिडिओ कॉन्फरन्सिंग वाढेल.

आता लॉकडाऊनमुळे सगळी धार्मिक स्थळं बंद आहेत. पण पुढेही काळजी म्हणून मंदिरे, मशिदी, चर्च आणि इतर सर्वच धर्मियांची धार्मिक स्थळं बराच काळ बंद करावी लागतील. गर्दी करणारे सगळे सण-समारंभ (गणपती उत्सव, नवरात्रीचा गरबा, दसरा, दिवाळी, नाताळ वगैरे) साजरे करणं बंद करावं लागेल.

आज अनेक उद्योगांनी 'वर्क फ्रॉम होम' करू असं ठरवलं तरी अनेक उद्योगांमध्ये ते शक्य नाही. उदाहरण द्यायचं झालं तर स्पोर्ट्स इंडस्ट्री! क्रिकेट, फुटबॉल आणि टेनिस यांसारखे खेळ रद्द करण्यात आले आहेत किंवा अनिश्चित काळासाठी पुढे ढकलण्यात आले आहेत. यावर अनेक रोजगार अवलंबून होते. स्टेडियममध्ये काम करणाऱ्या लोकांपासून अनेकांची कामं यामुळे ठप्प झाली आहेत. जपानमध्ये २०२० मध्ये होणाऱ्या ऑलिम्पिक स्पर्धा रद्द करण्यात आल्या आहेत. तसंच आय.पी.एल. स्पर्धादेखील पुढे ढकलण्यात आली आहे.

पर्यटन उद्योगावर झालेले परिणाम भयंकर आहेत. पर्यटनामुळे विमानप्रवास, एअर होस्टेस- पायलट यांचं काम, विमानतळावरचे कर्मचारी, हॉटेलमधलं वास्तव्य, रेस्टॉरंट्स, टॅक्सीज- हे सगळेच उद्योग ठप्प झाले आहेत. आज जगातला आणि देशामधला ८०% ते ९०% प्रवास बंद आहे. त्यामुळे कोट्यवधी लोकांचा रोजगार गोठल्यासारखा झाला आहे.

फिल्म आणि करमणूक उद्योग यांचंही तसंच काहीसं झालं आहे. चित्रपटगृहं बंद झाली आहेत. या ठिकाणी काम करणारे



लोक घरी बसून आहेत. चित्रपटांचं चित्रीकरण थांबलं आहे. अनेक चित्रपटांची निर्मितीप्रक्रियादेखील बंद झाली आहे. एक चित्रपट बनवताना त्यात केवळ निर्माता, दिग्दर्शक आणि कलाकारच नव्हे, तर शेकडो लोक तांत्रिक आणि इतर कामं करण्यासाठी गुंतलेले असतात. आता या सगळ्यांकडे कुठलंही काम नाहीये. चीनमध्ये कोरोनानं जेव्हा धुमाकूळ घालायला सुरुवात केली, तेव्हा तिथल्या सरकारनं ७० हजार थिएटर्स ताबडतोब बंद केली. त्यामुळे कोट्यवधी डॉलर्सचं नुकसानही झालं. संगिताच्या मैफिली बंद झाल्या आहेत.

या काळात एका अनामिक भयाचं सावट प्रत्येकावर कायम राहिल. तसंच लोक सार्वजनिक ठिकाणी जाऊन खेळ, पुस्तक प्रकाशन, भाषण, सिनेमा, नाटक, रेस्टॉरंट्स अशा गोष्टींसाठी एकत्र कसे येतील, हाही एक मोठा प्रश्न आहे. प्रत्येक वेळी मास्क लावून, सॅनिटायझर वापरून, परस्परांमध्ये सहा फूट अंतर ठेवून घाबरत-घाबरत कार्यक्रम करणं कठीण होईल! जे जातील, तेही शंकेनेच. त्यामुळे सामाजिक आणि सांस्कृतिक आयुष्यावर कोरोनाचा भयंकर परिणाम होणार आहे.

जगभरातल्या अनेक कर्मचाऱ्यांची पगारकपात होतेय किंवा त्यांना सरळ कामावरून कमी केलं जात आहे. टेस्ला या कंपनीनं आपल्या सगळ्या कर्मचाऱ्यांचे पगार १०%नी कमी केले आहेत. जगातली सगळ्यात मोठी हॉटेल कंपनीची चेन मॅरिएट यांनी १० हजार कर्मचाऱ्यांना कामावरून तात्पुरतं कमी केलं आहे. नॉर्वेजियन आणि स्कॅडिनेव्हियन एअरलाइन्स यांनी आपल्या ९०% कर्मचाऱ्यांना ले-ऑफ दिला आहे. इंटरनॅशनल लेबर ऑर्गनायझेशननं असं भाकीत केलंय की, जगातले ३८% लोक आपलं काम गमावून बसले आहेत किंवा त्यांची पगार-कपात करण्यात आली आहे. जगामध्ये एकूण १०० कोटी कर्मचारी आपलं काम गमावून बसले आहेत. २७० कोटी कर्मचारी प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्षरित्या परिणाम भोगताहेत.

सध्या लॉकडाऊनमध्ये खूप विरोधाभासी चित्र दिसतंय. एकीकडे सेलिब्रिटीज पदार्थांच्या वेगवेगळ्या रेसिपी करताना दिसताहेत, तर दुसरीकडे लाखो लोक भुकेनं उपाशी पोटानं शेकडो मैल पायी चालत आपलं राज्य, आपलं गाव गाठताना दिसताहेत. कुठे तरी घरातले सगळे लोक एकत्र जमून मजेत अंताक्षरी खेळताहेत, तर काही ठिकाणी शून्यात बघत दिवस काढताना एखादा बघायला मिळतोय. काही ठिकाणी एकेका खोलीत एकेकटे लोक आयसोलेट झाले आहेत, तर दुसरीकडे एका खोलीत आठ-आठ, दहा-दहा लोक गर्दीनं दाटीवाटीनं राहताहेत.

या लॉकडाऊनमध्ये हे असं अत्यंत विषम आणि विदारक चित्र दिसतंय. यात गृहकलह, घटस्फोट, एकाकीपणा, चिंता, भीती आणि नैराश्य या सगळ्यांचं प्रमाण खूप (२५% ने) वाढतंय. नैराश्याची कारणं मानसोपचारतज्ञ तात्कालिक सांगतील व त्यावर उपाय किंवा गोळ्यादेखील सांगतील. पण समाजातली अस्थिरता, विषमता, प्रचंड स्पर्धा, व्यक्तिवाद, स्वार्थीपणा, आत्मकेंद्रीपणा, उंचावलेल्या महत्वाकांक्षा; त्याहीपेक्षा खूप कमी असलेल्या संधी, पैशाला व प्रतिष्ठेला आलेलं प्रचंड महत्त्व, त्यासाठी

चाललेली केविलवाणी धडपड आणि सतत इतरांशी केलेली तुलना ही या मनःस्थितीला कारणीभूत आहे. ही कारणं दूर केल्याशिवाय माणसाची चिंता, भीती, एकाकीपणा आणि नैराश्य दूर होणार नाही. यावर या तज्ज्ञांनी बोललं पाहिजे आणि मुळाशी जाऊन त्यावर उपाय शोधला पाहिजे. तसंच माणसं फक्त फिजिकली एकत्र आली म्हणजे ती मनानं जवळ आली, असंही होत नाही. आज जागतिकीकरणामुळे प्रत्येकात प्रचंड व्यक्तिवाद व स्वार्थ भिनला गेलाय आणि तो चांगला आहे, असं सतत आपल्या मनावर बिंबवलं गेलंय. या भल्या मोठ्या उत्पादन व्यवस्थेत त्याला आपलं स्थान कळत नाहीये. तसंच त्याचं त्याच्यावर नियंत्रणही नाहीये. यामुळे एलिनेशन वाढतंय. त्यातूनही एकटेपणा आणि नैराश्य वाढतं आहे. यात कोरोनाचीही भर पडतेय. मानसिक आरोग्याबद्दल विचार करताना फक्त मध्यमवर्गीयांचा विचार जास्त केला जातो. मात्र, तळातल्या बहुसंख्य लोकांचा विचार करणं खूप गरजेचं आहे. कारण हातावर रोजचं पोट असलेल्या कुटुंबाचं कोरोनाच्या काळात तर तेही स्थैर्य गेलं; हाताला काम नाही आणि पोटाला अन्न नाही. तसंच आपल्या कुटुंबापासून, गावापासून कोसो मैल दूर अडकल्यामुळे मनाला आलेली बेचैनी आणखीनच वेगळी. अशा अवस्थेत त्यांच्या बिघडलेल्या मानसिक स्थितीचा अभ्यास करणं आणि त्यावर उपाययोजना करणं अत्यंत गरजेचं आहे.

कोरोनामुळे लॉकडाऊन झालं आणि घरात असलेल्या ज्येष्ठांच्या आयुष्यातली पोकळी वाढते आहे. तसंच लहान मुलांना मोकळ्या जागेत खेळता येत नाहीये. लॉकडाऊनच्या सध्याच्या काळातलं स्पेशल मुलांचं, अपंगांचं आणि त्यांच्या पालकांचं आयुष्य खूपच भयंकर आहे. त्यांच्या समस्या सर्वसामान्यांपेक्षा आणखी वेगळ्या आहेत.

सध्या काही डॉक्टरांवर हल्ले होताना दिसताहेत, पण प्रत्यक्षात तो राग त्या डॉक्टरांवरचा नसून मनात दाबल्या गेलेल्या असंख्य गोष्टींचा आहे, तो कुणावर तरी निघतो आहे. थोडक्यात, एकीकडे आपला जीव वाचवणाऱ्या डॉक्टरांवर अवलंबित्व तर त्याच वेळी त्यांच्यावर हल्ले-असं विदारक चित्र सध्या दिसतंय.

लॉकडाऊनच्या काळात जेवढे कामाचे दिवस वाया गेले, त्यामुळे आपली अर्थव्यवस्था फक्त ४०% ते ५०%च काम करत होती. २० एप्रिलपासून जे थोडंफार शिथिलीकरण झालंय, त्यामुळे फक्त ५% ते १०% नी ते प्रमाण वाढून आपली अर्थव्यवस्था पुर्वीच्या ५०% ते ६०% पर्यंत येत आहे का, हे तपासून बघितल पाहिजे. पण एक मात्र नक्की आहे, आपल्याकडल्या सगळ्या चॅनेलवरून सतत 'तुम्ही वेगळ्या खोलीत राहा आणि परस्परांमधलं अंतर पाळा' असं सांगण्यात येत आहे. मुंबईतली ४० ते ५०% माणसं ही झोपडपट्टीत किंवा चाळीत आणि कित्येकवेळी एका खोलीत ८-१० लोक दाटीवाटीनं राहत असल्यानं हे अंतर पाळणं त्यांना कसं शक्य होईल, हाही प्रश्नच आहे. आज आपल्याला दर दोन मिनिटांनी सांगण्यात येतंय की, सारखे हात धुवा. पण ४८.५% लोकांना आज वापरण्यासाठी साधं नळाचं पाणी मिळत नाही. लाखो लोकांना पाण्याची एक कळशी भरण्यासाठी जर दोन-दोन किमी दूर अंतरावर जावं लागत असेल

किंवा पाणी आणण्यासाठी अनेक फेऱ्या माराव्या लागत असतील, तर त्यांना हे सारखं हात धुणं कसं जमणार आहे हा खरा प्रश्न आहे, थोडक्यात, सामान्य माणसाला हे सगळं कसं जमेल याचा विचारच आपण करत नाही आहोत.

तसंच लस निघेपर्यंत हे सगळे उद्योग पूर्णपणे बंद राहिले आणि आपण सगळे लॉकडाऊनमध्ये घरीच बसलो, तर रोग पसरणं तात्पुरत थांबेल; पण त्यामुळे कोट्यवधी माणसं नुसतीच दारिद्र्यरेषेखाली जातील असं नाही, तर भुकेनं चक्क मरतील.

यामुळेच काहीजण युक्तिवाद करताहेत- तो वरवर निर्घृण आणि अमानुष वाटला तरी विचार करण्यासारखा आहे. तो म्हणजे, ३ मे रोजी लॉकडाऊन पूर्णपणे उठवायचा. यामुळे काही काळ कोरोनामुळे जास्त लोकांना लागण होईल, कदाचित २५ हजारांपर्यंत लोक मरतीलही. पण लॉकडाऊन न उठवल्यामुळे ४० ते ५० कोटी लोकांवर जे प्रचंड भुकेचं संकट उभं राहिल आणि त्यात कदाचित काही लाख माणसं मरण पावतील, त्यांचं काय? कोट्यवधी स्थलांतरित कर्मचाऱ्यांचे हाल, लॉकडाऊनमुळे होणारे मानसिक ताणतणाव आणि आत्महत्या (आत्तापर्यंत ८१) या गोष्टी आणखीनच वेगळ्या. यातली आकडेवारी न देता शंकर आचार्य यांनीही लॉकडाऊन ३ मे रोजी पूर्णपणे उठवावा, असा सल्ला दिलाय. नीति आयोगाचे सल्लागार विवेक डीब्राय आणि डॉ. जयप्रकाश मुर्लीएल अशा अनेक तज्ज्ञांनी थोडंफार असंच सांगितलंय. यात एक मुद्दा महत्त्वाचा आहे. लॉकडाऊन उठवला तर त्याच काळात लाखो लोक या विषाणूबरोबर लढाई करून, आपली प्रतिकारशक्ती वाढवून बरेही होतील. यामुळे काही काळातच हार्ड इम्युनिटी तयार होईल आणि लसी अगोदर हार्ड इम्युनिटीच आपल्याला वाचवेल, असाही एक युक्तिवाद आहे.

यातही खूपच बंधनं आहेत. यावरही एक उपाय करणं शक्य आहे. समजा- आपल्याला एखाद्याची टेस्ट करून त्याला कोरोना झालेला नाहीये किंवा तो त्या विषाणूशी यशस्वी झुंज देऊन त्यातून बाहेर पडलाय असं टेस्ट केल्यावर लक्षात आलं, तर त्याच्या मोबाईलमध्ये एक इंडिकेटर ऑन करता येईल. आता तो मोबाईल



घेऊन जेव्हा एखादा प्रेक्षक नाट्यगृहात किंवा चित्रपटगृहात प्रवेश करेल, तेव्हा त्याला एअरपोर्टवर असतात तशा एका 'रीडर'-मधून जावं लागेल. जर त्या मोबाईलमधला इंडिकेटर ऑन असेल, तर तिथला दिवा हिरवा होईल आणि त्याचं दार आपोआप उघडेल. मेट्रोमध्ये उघडतो तसंच. जर तो दिवा लाल झाला, तर त्याचा प्रवेश नाकारला जाईल. याचा अर्थ त्यानं अलीकडे टेस्टच केली नाहीये किंवा त्याला कोरोनाची लागण झालीय, असं तिथेच आपल्याला समजेल. मग त्याला टेस्ट करायला किंवा क्वारन्टाईनसाठी पाठवता येईल.

आपल्याला हे काल्पनिक वाटेल, पण चीननं याचा वापर करायचं ठरवलं आहे. फक्त ही टेस्ट विश्वासाह असेली पाहिजे आणि प्रेक्षकांनी ती काहीच काळापूर्वी केलेली असली पाहिजे, ही अट मात्र यात असेल. यात पुन्हा जर एखादा कोरोनापासून बरा झाला असेल, तर त्याला तो कोरोना पुन्हा होण्याची शक्यता किती असते, हेही तपासून बघावं लागेल. जागतिक आरोग्य संघटनेनं याविषयी अलीकडेच शंका व्यक्त केलीय.

पण असं ९०-९५% जरी होऊ शकलं तर मात्र नाटकं, सिनेमे, खेळ, बसेस, रेल्वे, भाषणं, हॉटेल्स, शाळा, कॉलेजेस, रेस्टारंट्स यातल्या अनेक गोष्टी निदान काही प्रमाणात सुरळीतपणे सुरू होऊ शकतील. पण अशी टेस्ट निघणं, ती सर्वांना परवडणं किंवा सरकारनं ती मोफत करणं आणि वर सांगितलेली सर्व यंत्रणा उभी राहणं यासाठी देखील कित्येक महिने लागतील. तसंच औषध निघायलाही कित्येक महिने लागतील. एकूणच, २०२० हे वर्ष नक्कीच खूपच कठीण आणि बंधनकारक राहील, यात शंकाच नाही. यामध्ये लॉकडाऊन जरी उठवला, तरी तो काही काळासाठी पुन्हा वारंवार लादावा लागेल.

या सगळ्या काळात कष्टकऱ्यांवर काय परिस्थिती ओढवणार आहे याची कल्पनाही न केलेली बरी!

अशा परिस्थितीत सरकारनं काय केलं पाहिजे? तर- शिक्षण, आरोग्य, वीज, पाणी, स्वस्त घरं आणि सार्वजनिक वाहतूक या सगळ्या दुर्लक्षिलेल्या क्षेत्रांमध्ये भरमसाठ गुंतवणूक केली पाहिजे. आपण जागतिकीकरणानंतर फिस्कल डेफिसिट कमी करण्यासाठी सरकारी खर्च कमी व्हावा म्हणून या सगळ्या क्षेत्रांवर खूपच कमी खर्च केला.

शिक्षणावर जीडीपीच्या ६% आणि आरोग्यावर ५% पुढली अनेक वर्षं तरी खर्च केला पाहिजे, असं सगळे तज्ज्ञ ओरडून सांगत असले तरी आपण गेली ३० वर्षं शिक्षणावर जीडीपीच्या ३%-३.४% आणि आरोग्यावर फक्त ०.९% ते १.३% खर्च करतोय. म्हणजे आरोग्यावर गरजेच्या एक-चतुर्थांश! त्यातही भ्रष्टाचारामुळे प्रत्यक्ष किती पोचत असतील, कोण जाणे! त्यामुळेच आपल्याकडली हॉस्पिटल्स, तिथली उपकरणं आणि संसाधनं, बेड्स, डॉक्टरांची संख्या- या सगळ्याच गोष्टी विदारक आहेत. त्यात आता कोरोनाचं संकट आलंय. त्यामुळे वर सांगितलेल्या सर्व गोष्टी सुधारल्या पाहिजेत. पण त्यातही शिक्षण व आरोग्य हे प्राधान्यानं सुधारलं पाहिजे आणि ते सरकारनं सुधारलं पाहिजे. त्यात कॉर्पोरेट्स नकोत.

शिक्षण आणि आरोग्य या क्षेत्रांत पुढल्या काही वर्षांत या सगळ्या गोष्टी कराव्या लागतील. पण तातडीनं काय करायचं तर- सर्वप्रथम लाखो स्थलांतरित कामगारांना आपल्या घरी जायची व्यवस्था करणं. प्रत्येकाच्या खात्यामध्ये ५-७ हजार दरमहा हे ३-६ महिने टाकणं आणि रेशनकार्ड असो वा नसो- प्रत्येकाला फक्त तांदूळच नव्हे तर डाळी व गहू असं सगळं पुरवणं. (हे देण्याची घोषणा झाल्यानंतर, सुद्धा ज्यां डेज याच्या मते, १० कोटी लोकांना अन्न-धान्य मिळत नाहीये.) अर्थमंत्र्यांनी कोरोनासाठी जीडीपीच्या फक्त ०.८% मदत योगदान जाहीर केले आहे, ते कमीत कमी ५% तरी केले पाहिजे.

जगातल्या बहुतांश देशांनी त्यांच्या जीडीपीच्या ५% ते १०% रक्कम खर्च करायचं ठरवलं आहे. यामुळे आपलं फिस्कल डेफिसिट वाढेल, हे खरंच आहे. आजच आपण जरी ते ३%च्या आसपास ठेवण्याचं ठरवलं असलं आणि कागदावर ते साधारण ३.७% असलं, तरी केंद्र व राज्य सरकारं आणि इतर संस्था मिळून ते आज ८%ते ९% आहे, असं मानलं जातं. यावर अजून ५% खर्च केला, तर हे डेफिसिट जीडीपीच्या १३%-१४% होईल. फिस्कल डेफिसिट हे चांगलं का वाईट, कुठल्याही परिस्थितीत (फुल एम्प्लॉयमेंट नसतानाही) ते वाईट असतं का, ते केव्हा आणि किती वाढू द्यावं, यावर १९३१ मध्ये रिचर्ड काहन यांच्यापासून नंतर केन्स आणि अगदी अलीकडे नोबेल पारितोषिक विजेता पॉल ब्रुगमन यांच्यामध्ये व मुक्त बाजारपेठेवाले निओलिबरल अर्थतज्ज्ञ यांच्यामध्ये वाद आहेतच. इथे त्यात शिरणं शक्य नाही. पण जरी फिस्कल डेफिसिट वाईट आहे असं धरलं (आणि १४% नक्कीच वाईट आहे), तरी एक तर त्याचा विचार या अरिष्टात करू नये, असं आज सगळे तज्ज्ञ म्हणताहेत. पण त्याहीपेक्षा दुसरी विचारसरणी म्हणजे, एवढ्या फिस्कल डेफिसिटची गरजच काय आहे? श्रीमंतांवर आयकर आणि वेल्थ/इनहेरिटन्स टॅक्स वाढवून सरकारला उत्पन्न वाढवता येणार नाही का?

सिंगापूर युनिव्हर्सिटीच्या एका अहवालानुसार, काही देशांत एप्रिल महिन्यात, भारतात मे महिन्याच्या शेवटी व जगभरातून जुनच्या पहिल्या आठवड्यापर्यंत कोरोनाचं संकट बऱ्यापैकी कमी होईल आणि या वर्षाअखेर ते पूर्णपणे नष्ट होईल. हे कितपत विश्वासाह आहे, हे माहीत नाही; पण तसं जर झालं, तर पुन्हा एकदा आपल्या मित्र-मैत्रिणींबरोबर भेटून एकत्र आनंद लुटणं, नाटक-सिनेमे बघणं, सहलीला जाणं, कामानिमित्त प्रवास करणं आणि लोकांना भेटणं हे सगळं आपल्याला करता येईल... आपण कोरोनाच्या संकटातून बाहेर येऊ आणि पुन्हा आपलं पहिल्यासारखं आयुष्य जगायला सुरुवात करू!

राहुल गुप्ता

टी.वाय. बी.बी.ए. (सी.ए.)





# वाणिज्य

विविध उत्पादन केंद्रामध्ये निर्माण केलेल्या आणि गरजा भागविल्यानंतर शिल्लक राहणाऱ्या वस्तूंचे व सेवांचे वितरण करणारी व्यवस्था, तिच्या योग्य त्या वस्तू व सेवांचे ग्राहकांना अंतिम टप्प्यात योग्य स्थळी, योग्य स्थितीत, योग्य वेळी योग्य प्रमाणात व योग्य किंमतींना उपलब्ध होतात.

## इतिहास :

वाणिज्य हे मानवी सभ्यते इतकेच प्राचीन असून त्याच्या विकासाची सुरुवात कृषिकलावस्थेच्या प्रारंभापासून झाली. वाणिज्य हे नाव Com. व Mercis या दोन लॅटीन शब्दांपासून तयार झाला आहे. Com. म्हणजे एकत्र येणे आणि Mercis म्हणजे वस्तू किंवा सामग्री होय. वस्तू किंवा सामग्रीची देवाण-घेवाण करण्यासाठी एकत्र येणे, म्हणजे 'वाणिज्य' होय. वाणिज्याच्या साहाय्याने विनिमय (Exchange) ही संकल्पना अस्तित्वात येऊन मूलभूत आर्थिक क्रियांचा प्रारंभ झाला.

कालांतराने मुद्रेचा शोध लागला आणि ती वस्तूविनिमय व वाणिज्य या दोन्ही कार्यांसाठी पर्वणीच ठरली. आर्थिक व्यवहार आणि व्यापार सुलभ व्हावेत या गरजेतून वाणिज्याचा उगम झाला. एखाद्या समुहाचे वस्तू व सेवा यांचे उत्पादन जोपर्यंत त्यांच्या गरजा भागविण्यापुरतेच मर्यादित असते तोपर्यंत त्या समूहास वाणिज्य व्यवस्थेची विशेष गरज भासत नसे. मागणीनुसार उत्पादित माल व सेवा पुरविण्याची व्यवस्था करावी लागते. अर्थिक व्यवहारांचा हा व्याप सांभाळणारा व्यापार व त्यास मदत करणारे अन्य व्यवसाय या सर्वांना मिळून 'वाणिज्य' ही संज्ञा वापरतात.

## वाणिज्य संघटना :

वाणिज्य व्यवसायात अनेक प्रकारच्या संघटना कार्य करीत असतात. त्यातील काही खाजगी क्षेत्रात तर काही सरकारी क्षेत्रात

असतात. संयुक्त क्षेत्रातही असू शकतात. खाजगी क्षेत्रातील वाणिज्य व्यवसाय एकमेव व्यापारी भागीदारी, खाजगी वा संयुक्त भांडवल कंपनी अथवा सूत्रधारी कंपनी यापैकी एखाद्या स्वरूपाची संघटना बनवून चालतो. सहकारी क्षेत्रातील संस्था सहकाराच्या तत्त्वानुसार कार्य करतात. सरकारी विभाग, मंत्रालय, जिल्हा परिषद, नगरपालिका व ग्रामपंचायत किंवा कायदानुसार खास महामंडळे यांच्या माध्यमातून चालविल्या जातात. संघटनांच्या या विविध रूपांचे काही विशिष्ट फायदे व तोटे असतात. त्यांचा तारतम्याने विचार करून व उपक्रमांच्या गरजा लक्षात घेऊन उपक्रम चालविण्यास आवश्यक असलेल्या उत्पादक घटकांची सामग्रीची जुळवाजुळव करता येते.

## वाणिज्य व सरकार :

वाणिज्य व्यवहार ज्या अर्थव्यवस्थेमध्ये चालतात आणि ती अर्थव्यवस्था ज्या वातावरणात कार्य करते त्यावर शासकीय यंत्रणेचा पुष्कळच प्रभाव पडतो. साहजिकच वाणिज्य व सरकार यांचे घनिष्ठ संबंध येतात. सरकारी खरेदी-विक्री व उत्पादन आणि कंत्राटे यांचा व्यापारावर महत्त्वाचा परिणाम होतो. अनेक कारणांसाठी व ज्याचा उद्योगसंस्था व व्यवसाय सरकार चालविते शिवाय खासगी उद्योगसंस्थांनाही सरकारकडे मदत घ्यावी लागते. सरकारची करविषयक, व्यापारविषयक औद्योगिक व अर्थिक धोरणे वेळेवेळी बदलत जात असल्याने अर्थिक नियोजन करताना सरकारला वाणिज्याचेही नियोजन करावे लागते. नियोजनाची उद्दिष्टे यशस्वीपणे गाठण्यासाठी वाणिज्य व्यवसाय व शासन संस्था यांचे परस्पर सहकार्य आवश्यक ठरते.

## अमोल कोथाळकर

एस. वाय. बी. कॉम.

# मित्र

मैत्री ही शब्दांत बंद होणारी गोष्ट नाही. अगदी मानवापासून ते प्राणी, पक्षी यांमध्ये सुद्धा मैत्रीभावना आपल्याला दिसून येते. मैत्री म्हणजे एकमेकांवरचा अतूट विश्वास. संवंगडीपासून ते यारपर्यंत प्रत्येकाची मैत्री वेगवेगळी असते. बालपणाचे, शाळेचे, कॉलेजचे, ऑफिसचे मित्र आज आपल्या आठवणीत सामावलेले आहेत, काही जवळ देखील आहेत. बालपणाची मैत्री आजवरची सर्वात किंमती मैत्री संबोधली जाते, कारण या वयात मैत्रीला मोह नसतो. फक्त आनंदी सहवास एकमेकांना प्रसन्न करत राहतात.

मैत्री म्हणजे स्वातंत्र्याची अनुभूती. मनाला पटलं ते लगेच करायचं यासाठी मिळालेला सोबती. प्रेमाला प्रेमाने हाक देणारे व शिव्यांना शिव्यांनी उत्तर देणारे प्रेमळ व रानटी मित्र सर्वत्र आढळतात. जिथं कुठलीही लालसा नसते, तिथं मैत्री निर्माण होतं असते. ज्याच्या विचारांशी आपण जुळवून घेतो, तोच आपला खरा मित्र ठरत असतो. चांगले मित्र हे एका औषधांसारखे असतात, ज्याने सर्व वेदना दूर होतात. विशेष म्हणजे त्या औषधाला एक्सपायरी डेट देखील नसते. म्हणूनच ते युगानुयुगाचे अमृत आहे.

जिथं काहीच लपत नाही तिथं मैत्रीच नातं घट्ट होतं. प्रेमापलीकडे ही मित्रता सर्वगुणसंपन्न असते. स्वार्थीपणाला ज्या ठिकाणी मुळीच स्थान नसतं, अशाच नात्याला मैत्री म्हणतात. मैत्रीला सीमा नसतात, मैत्रीत जात, धर्म, परंपरा, काळा-गोरा, गरीब-श्रीमंत असा भेदभाव नसतो. मैत्रीत रेषांच्या मर्यादा आखल्या जात नाही. आपल्या सोबतीसाठी निरभ्र आकाशासारखे मनाने मोकळे होत असते ती मैत्री. आपुलकीने जिथं विचारलं जातं, तिथं मैत्री सहज होत असते.

एका ताटात जेवण करणारे मित्र, एकमेकांचे कपडे घालणारे मित्र, अर्ध्या रात्रीदेखील मदतीला धावून जाणारी मित्रता म्हणजे मैत्री. संकटाच्या काळात खंबीरपणे एकमेकांच्या खांद्याला खांदा लावून उभा राहणारा सच्चा यार असतो मित्र. मैत्रीत स्पष्टता खूप असते. आपलां सुख-दुःख अगदी सहजतेने जिथं व्यक्त करता येते, तिथंच मित्रता अधिक रूढ होत असते. आयुष्यातील सर्व गुपित कुठलीही साशंकता न ठेवता आपण ज्याकडे उघड करत असतो ती खरी मैत्री.

मैत्री म्हणजे कौटुंबिक नात्यापेक्षा महत्त्वाचं नातं. एक रुपयापासून ते एक लाखापर्यंत लगेच मदत करणारी आपली 'मैत्री बँक' असते. मनातील दुःख आपल्या आंतरिक मनाने सहज दूर करणारी शक्ती म्हणजे मैत्री. एकाच चहाच्या कपात दोघं बिस्कीट बुडवून खातात ती मैत्री. अनोळखी नात्याला आपलंस करणारी म्हणजे मैत्री. मैत्रीच्या खोल सागरात आपल्या बंधनाचे मोती शोधून ते मित्रतेच्या शिंपल्यात काळजीने जपणारी नाती म्हणजे मैत्री.

मतलबी दुनियेच्या अंधारमय रात्रीत चमकणाऱ्या मैत्रीच्या काजव्यांना समर्पित.

आयुष्याच्या वाटेवरती  
किती मिळती सखे-सोबती  
जीवन आपुले सुखी करूया  
हात तयांचे घेऊन हाती!

बालपणीची सकाळ हासरी  
निष्पाप मने तेव्हा असती  
सर्व सोबती आनंदाने  
सभोवताली भिरभिरती!

शैशव संपून तारूण्याच्या  
उंबरठ्यावर पाऊल पडे  
सख्या-सोबत्यांचा तेव्हा  
आधार किती मोठा हा गडे!

हळुवार पावलांनी मग  
वार्धक्य साद देते  
एकाकीपण साहताना  
मृत्युची चाहूल येते!

हळुवार रेशमी अतूट बंध  
वेगवेगळे कसे प्रसंग  
सख्या-सोबत्यांशी आपुला  
तयार होतो सुंदर संग!

प्रत्येक क्षणी आयुष्याच्या  
सखे-सोबती साथ देती  
जीवन आपुले सुखी करूया  
हात तयांचे घेऊन हाती!

थकलेले जीव सारे  
सावलीला निजले होते  
बाभळीचे झाड घराशी  
फुलांनी सजले होते!!

पाखरांनी आपले घरटे  
छपराला टांगले होते  
भातुकलीचे डाव दारी  
खेळ सारे मांडले होते!!

तेव्हा उमगले ते घर  
माझ्या मित्राने बांधले होते  
तेव्हा उमगले ते घर  
माझ्या मित्राने बांधले होते

श्रीनिवास चौरे  
एस.वाय. बी.कॉम.





## कोरोना... एक मोठे संकट

कोरोना व्हायरसने संपूर्ण जगभरात धुमाकूळ घातलाय, हे आपण पाहतोय. दररोज हजारो-लाखांच्या संख्येने लोक मृत्युमुखी पडत आहेत. तसेच कोरोना व्हायरसमुळे मानवजातीवर प्रचंड मोठे संकट ओढवले आहे. कोरोनामुळे सध्या सगळ्यांचेच आयुष्य अस्थिर झाले आहे. हळूहळू कोरोनावर औषध मिळू लागल्याच्या बातम्या पसरत आहेत. परंतु हे संकट पूर्णपणे जाईल याची अजून शाश्वती मिळालेली नाही. त्यामुळे सर्वसामान्य जनतेच्या जगण्यावर निर्बंध अजूनही कायम असलेले दिसून येतात.

हे सगळं कधी संपणार? आपलं आयुष्य पूर्वपदावर कधी येणार? या प्रश्नांनी तुम्हा-आम्हालाच नाही तर जगातल्या प्रत्येकाला ग्रासून टाकलंय. कोरोना संकट ही खरंतर एक आपत्ती समजली जायला हवी. ज्याच्यातून आपल्याला समुदाय, परस्परवलंबित्वाची गरज, तसेच एखाद्या समस्येला धिराने तोंड देण्यासाठी लागणारे सामर्थ्य समजले. कोरोना विषाणू काय आहे? तो कसा होतो? याबद्दलच्या अनेक शंकाकुशंका प्रत्येकाच्या मनात डोकावत आहेत. आपण पण या कोरोनाचे शिकार तर होणार नाहीत ना? याबाबतीत आजही गांभीर्याने नागरिकांमध्ये चर्चा होताना दिसत नाही. फक्त प्रसारमाध्यमांनी बातम्या द्यायच्या, आरोग्याशी संबंधित कोरोनाबाबत असणारी दैनंदिन माहिती द्यायची हेच सध्या घडत आहे. परंतु यामधून नागरिकांनी बोध घेऊन त्यावर कृती करणे गरजेचे असते. मात्र तसे काहीच घडत नाही. आजही नागरिक विनाकारण गर्दी करतच आहेत. ती गर्दी टाळणे शक्य आहे. पण तरी बाजारात गर्दी होतच आहे. सभा, संमेलने, बैठका हे काही दिवसांसाठी टाळणे हे प्रतिबंधात्मक उपाय आहेत, तसे करणे गरजेचे आहे. अजून किती रुग्ण आजारी पडल्यावर आपण स्वतःला शिस्त लावून घेणार आहोत? प्रशासन जागृती करण्याचे काम करीत आहे. पण नागरिक निर्बंधाची वाट घेत आहे का? असा प्रश्न येथे उपस्थित होतो.

काही लोक म्हणतात की, लॉकडाऊन नकोय अशी सगळ्यांचीच इच्छा आहे. परंतु जो काही या आजाराचा संसर्ग पसरत आहे त्यावर नियंत्रण ठेवण्यासाठी काही तरी उपाययोजना कराव्याच लागतील. लोकांनी या आजाराला न घाबरता सतर्क राहिले पाहिजे. 'आता आपल्याला काही होत नाही. सगळं चांगलं चाललंय.' या भ्रमातून बाहेर यायला हवं. राज्यात केवळ वरिष्ठ नागरिकच नाही तर धडधाकट तरुणांना देखील हा आजार होतो आहे. या आजाराचा नायनाट करण्यासाठी मोठ्या प्रमाणावर जनजागृती करून खरी माहिती देण्याचे काम करण्याची गरज आहे. आपल्याकडे नकारात्मक माहिती पसरवण्यावर जास्त भर असतो. तसे न करता आपण सकारात्मक माहिती लोकांपर्यंत पोहोचवली पाहिजे. कोरोना हा असा आजार आहे, तो कुणालाही आणि कधीही होऊ शकतो. तो गरीब- श्रीमंत असा भेदभाव करीत नाही. त्यामुळे अति आत्मविश्वास न बाळगता प्रशासनाने ठरवून दिलेले नियम पाळले पाहिजेत. सध्या मुंबईत नुकतेच एक प्रकरण उजेडात आले. तिथे कोरोनाबाधितांचे पॉझिटिव्ह रिपोर्ट निगेटिव्ह करून घेण्यासाठी काही पैसे घेतले जात आहे. हा सगळा प्रकार भयानक आहे. यातून किती मोठा संसर्ग पसरू शकतो याची कल्पना न केलेलीच बरी. त्यामुळे नागरिकांनी वेळीच सावध व्हायला हवे. सुरक्षिततेचे नियम पाळून राहणे अशा उपाययोजनांना प्राधान्य दिले पाहिजे. प्रशासन प्रत्येक व्यक्तीच्या मागे नियम पाळत आहे का? हे पाहण्यासाठी थांबणार नाही. म्हणूनच मी जाता-जाता एवढेच सांगेन की....

सतत धुवूया २० सेकंद हात  
कोरोनाचा होईल त्यामुळे घात!

स्नेहा बोंबले  
एफ. वाय. बी. कॉम.

# कोरोना भारतीय संस्कृती आणि व्यवसाय

कोई मर कर हार रहा है, कोई जीते जी मर रहा है ।  
अधमरे पर रोब जमा रहा है, कोई हरा हुआ बाजीगर ॥  
कोई सुहाग बचा रहा है जेवर बेचकर ।  
बापने उमर गुजार दी घर बनाने मे ॥  
बेटा सांसे खरीद रहा है, घर बेच कर ।  
बरबाद हो गये कई घर, दवा खरीदकर ॥

स्पर्धा, कार्पोरेट कंपन्यांचा शिरकाव, गुणवत्ताहीन सामान आकर्षक वेस्टनामध्ये पॅकबंद करून भरमसाठ पैशाने देणे हा आजच्या युगातला सहजक्रम झालेला आहे. तसे पाहता वास्तविक स्पर्धेला पर्याय नाही. त्याशिवाय गुणवत्ताही मिळणार नाही. पण मार्केट मधले सगळेच गुणवत्ताहीन नुसतीच स्पर्धा करत असतील तर? तर दर्जेदार वस्तू ओळखायच्या कशा? दर्जेदार आणि नकली वस्तूमधला फरक तरी कसा ओळखावा?

जसं टीव्ही नावाचे उपकरण आपल्या घरात आले (आणि आजकाल मोबाईल) तसे आपल्या घरात वेगवेगळ्या अनोळखी वस्तूंनी शिरकाव केला. आकर्षक जाहिरातीमुळे आम्ही त्या वस्तू गुणवत्तेची खातरजमा न करता विकतही घेऊ लागलो. झगमगीत, भपकेबाज वातावरणातील मॉलमधील कित्येक गरज नसताना विकत घेऊन आणलेल्या वस्तू खरंच दर्जेदार होत्या का? असं मात्र आता वाटायला लागलं आहे.

जी अवस्था बाजारातील वेगवेगळ्या वस्तूंची तीच अवस्था जीवनावश्यक वस्तूंची. यात औषधे, भाजीपाला, स्वयंपाक घरातील वस्तू आणि बरंच काही. काही आरोग्यदायी हेल्थकेअर प्रॉडक्टची जाहिरात तर हे प्रॉडक्ट खरेदी केले वापरले की अमरत्वच मिळू शकेल एवढ्या आकर्षक असतात. कोरोना संक्रमणाच्या काळातही प्रत्येक चिकित्सापद्धती उत्कृष्ट रोगप्रतिकारशक्तीवर भर देऊ लागल्यात. बऱ्याच लोकांनी यावर ज्ञान पाजळले. यातील प्रत्येकाचे दावे इतके भन्नाट, असे वाटते की आपल्या देशातील संपूर्ण आरोग्य व्यवस्था यांच्या नेतृत्वाखालीच अबाधित आहे. तसेही आपल्या देशात टनाने बॉर्नविटा, हॉर्लिक्स,

बुस्ट यासारख्या शरीर क्षमता वाढवणाऱ्या वस्तू खपत असताना काय बिशाद आहे कुणाची रोगप्रतिकार शक्ती कमी होण्याची! मागच्या कित्येक वर्षात या एनर्जी, हेल्थ बूस्टर टॉनिक्सनी धुमाकूळ घातला आहे.

पण दुर्दैवानं हेच प्रॉडक्ट खाणाऱ्या लोकांनाच कोरोनाने पहिला दणका दिला. कारण टीव्हीवरच्या, मोबाईलवरच्या जाहिराती बघून त्यांच्या जीवनात आलेली आभासी आरोग्यसंपन्नता पहिल्याच फटक्यात कोलमडून पडली. आणि मग सगळेजण मूळ भारतीय आयुर्वेदीय पद्धतीतल्या रसायन (रस रक्तादी सप्त धातू वाढवणारे औषध) औषधांकडे यु-टर्न झाल्याप्रमाणे पळू लागले. त्यात च्यवनप्राश, गुळवेल, वेगवेगळे औषधी काढेच देवदूतासारखे धावून आले. पाश्चिमात्य पद्धतीच्या 'हँडशेक' ऐवजी 'नमस्ते' करू लागले. यांचाच प्रामुख्याने बोलबाला वाढला. अशावेळी कुणालाच प्रश्न पडले नाहीत की, कुठे गेलेत ते प्रॉडक्ट आणि मोठमोठे दावे करणारे बनावट सेलिब्रिटी?

जरा आठवा बरं त्या जाहिराती.... बुस्ट इज द सिक्रेट ऑफ माय एनर्जी असे एक सेलिब्रेटी 'बुस्ट'बद्दल म्हणत होता. त्याला त्या कंपनीने पैसे दिले मग त्याच्या बापाचं काय जातं असं म्हणायला. थोबाड रंगवलेल्या नट्या (कधीतरी त्यांचे विना मेकअपचे खरे रुपडे बघा.) फेअर अँड लव्हली लावून किती पोरी गोऱ्या झाल्या? आणि त्यांच्या मागे मागे फिरणारे लाळघोटे स्त्रीलंपट नट... प्यारकी राह पर चलना सिखों... स्त्रीयांना आशाळभूतपणे पाहत विदेशी दारूची जाहिरात करतो.

खरे तर दोष त्यांचा नसून दोष आपला आहे. आपण आपले संस्कार, आपली पारंपरिक उपचार पद्धती, राहणीमान विसरलो आणि भपकेबाजपणाकडे आकर्षित झालो. त्याचाच त्यांनी फायदा घेतला. त्यांनी फक्त जाहिरात केली की मग आम्ही शहानिशा न करता वस्तू घरी आणून रिकामे. वेगवेगळ्या मेडिसीन कंपनी मांसाहार (संडे हो या मंडे रोज खाओ अंडे; अमक्या कंपनीचेच चिकन चांगलं... वगैरे) करायला प्रवृत्त करत आहेत. रिफाईंड (फॉर्च्युन) तेलाची जाहिरात करणाऱ्या सौरव गांगुलीलाच मध्यंतरी हार्ट अटॅक झाला. आठवते का?)

समुद्री मीठ वापरण्यासाठी आग्रह करणाऱ्या जाहिराती करत आहे. एवढेच काय हे सेलिब्रेटी दारूची, गुटख्याची जाहिरात करत आहेत आणि या सगळ्या प्रकारात कुठल्याही आरोग्य संस्थेला हे अयोग्य आहे असं सांगावसं वाटत नाही. याच्यापेक्षा मोठे दुर्दैव ते काय. कुणीच काही बोलणार नाही. कारण या संपूर्ण सिस्टिमला व्यवसाय पाहिजे. बाकी तुमचं आरोग्य वगैरे गोष्टी दुय्यम आहेत.

ते त्यांचे काम चोखपणे करत आहेत. पण आम्ही कधी सुधारणार हा प्रश्न आहे...? कारण दुसऱ्याला दोष देऊनही आपल्यावर संकट ओढवून घेतले तरीही संकटाची झळ आपल्यालाच बसणार आहे, हे कधी समजणार या समाजाला ?

प्रथमेश बोटवे

एफ.वाय. बी.ए.

# ऑनलाईन बिनलाईन

आज शाळा, कॉलेज हे सर्व या कोरोनाच्या महामारीत बंद राहिले असते. खूप सान्या मुलांनी शिक्षण सोडून दिलं असतं. पण तसं झाल का? नाही. जिथे विद्यार्थी वही, पेन, पुस्तक घेऊन बसायचा तिथे आता मुले फक्त एक मोबाईल घेऊन बसतात, कशामुळे? ऑनलाईन शिक्षणामुळे. पण ही गोष्ट फारशी चांगली नाही. पण १०० पैकी ९५ मुले आजही ते शिक्षण चांगल्या प्रकारे घेत आहेत. पण म्हणून ही गोष्ट फारशी वाईट देखील नाही. आज मुले कोरोनामुळे त्यांच्या मित्रमंडळींना भेटू शकत नाही. पण इंटरनेटमुळे मुले त्यांच्या मित्रांसोबत बाहेर देशातील नवीन मित्र देखील बनवू शकतात.

मला स्वतःला इंटरनेट आणि टेक्नॉलॉजी खूप आवडते. पण त्याचे ही काही तोटे आहेतच. एक आर्टिकल वाचलं होतं; त्यामध्ये असं लिहिलं होतं की, एक स्पर्धा आयोजित केली होती. त्यामध्ये असं होतं की एकाच व्यक्तीने एका बंद घरात रहायचं आणि सोबतीला फक्त इंटरनेट. जो विजेता स्पर्धक होता त्याने पूर्ण एक महिना त्या घरात काढला. त्याने त्याचे खाणपिणं, कपडे, चपला-बूट हे सर्व ऑनलाईन मागवलं. तो त्याच्या आई-वडिलांशी, भाऊ बहिणींशी ऑनलाईनच बोलायचा. पण त्याला अख्खा महिनाभरात कोणालाही भेटावंस बोलावंस वाटलं नाही. ही सर्वात वाईट गोष्ट.

कोरोनामुळे 'वर्क फ्रॉम होम' हा नवीन ट्रेंड आला आहे. तसा तो जुनाच आहे पण कोरोनामध्ये खूप जोरात चालला आहे. या ट्रेंडमुळे आजही जग थोड फार सुरळीत चालू आहे. पण याच 'वर्क फ्रॉम होम'मुळे भरपूर सान्या लोकांची फसवणूक झाली. काही व्यक्तींना कामावरून देखील काढून टाकलं. कोरोनामुळे ऑनलाईन शिक्षण चालू झाले आहे. पण याच ऑनलाईन शाळेमध्ये आज पाच वर्षांची मुलेही बसत आहेत. एवढी लहान मुले ज्यांचे डोळे खूप नाजूक असतात ते आज मोबाईल समोर तासन्तास बसतात. ऑनलाईन शिक्षणामुळे जो मोबाईल आम्हाला १७ व्या - १८ व्या वर्षी मिळायचे ते मोबाईल आज मुलांना ४ थ्या-५ व्या वर्षी पालकच स्वतःहून घेऊन देत आहेत. त्यामुळेच त्या मुलाला ५ व्या वर्षीपासूनच मोबाईल वापरायची सवय होत आहे. ही गोष्ट थोडीफार वाईट आहे.

आजची सर्व तरुण मुले शाळा-कॉलेजची मुले मोबाईल वापरतात. त्यांना रात्री व्हाॅट्स अप, इंस्टाग्राम ह्यावर चॅटिंग केल्याशिवाय झोप येत नाही. ती मुले कॅडी क्रश गेमच्या चारशे पायऱ्या पार करतात आणि सिंहागडाच्या चार पायऱ्या चढल्यावर दम खातात. छत्रपती शिवाजी महाराज, महात्मा गांधी, फुले-आंबेडकर यांना त्यांची कर्तृत्व गाजवायला संपूर्ण आयुष्य घालवावी लागली आणि आपण त्यांची बदनामी एक बटन दाबून केली. इंटरनेट ही एक अशी गोष्ट आहे, जिचा जर आपण चांगला वापर केला तर आपण स्वतःला खूप यशस्वी करू शकू आणि वाईट वापर केला तर एखाद्याचं आयुष्यही बरबाद करू शकू. पण

जे या इंटरनेटचा खूप चांगल्या प्रकारे वापर करतात त्यांच्यासाठी इंटरनेट हे खूप उपयोगी आहे. त्यांच्यासाठी इंटरनेट हे एक वरदान पण म्हणू शकतो.

खरं तर आपण अभिमानाने सांगू शकतो की माझा बेस्ट फ्रेंड इंटरनेट आहे. थोडा विचार करा, दिल्लीचा अमन, अमेरिकेची अँजलिना, न्युयॉर्कचा फॅन्कलीन, लास व्हेगासची नायरोबी हे माझे मित्र झाले असते? मी त्यांच्याशी कधी बोललो असतो? त्यांच्या आवडीनिवडी समजल्या असत्या? पण झाले ना ते माझे मित्र. या व्हाॅट्स अप - इंस्टाग्रामच्या चॅटिंगमुळेच झाले. कारण इंटरनेटमुळे जग खूप जवळ आले आहे. एकमेकांना जोडले गेले आहे. खरंतर माझ्या मित्रांच्या यादीतल्या पन्नास टक्के मित्रांची कामं ही इंटरनेटशीच निगडीत आहेत. वेबसाईट सॉफ्टवेअर, अॅप्स यावर ते सर्व त्यांच घर चालवतात आणि ते त्यांच्यामध्ये चांगली देखील करत आहे. नाहीतर त्यांना एवढे मोठे यश एवढ्या कमी वेळेत मिळाल असतं? नाही. बाय द वे आपण आपल्या कॉलेजचा फॉर्मदेखील ऑनलाईनच भरला आहे. हा लेखही मी ऑनलाईनच पाठवला आहे.

मित्रांनो इतके दिवस मिडिया म्हणजे टि.व्ही. आणि बातमीपत्रक एवढच माहिती होतं. त्यांनी सांगायचं आणि आपण ऐकायचं एवढचं. आज पहिल्यांदा सोशल नेटवर्कमुळे दोन्ही बाजूने बोलायची संधी मिळतेय. आपली मत मांडायची संधी मिळतेय. मग आपण ती का वापरू नये. पूर्वी आपण घराच्या बाहेर पडायचो तेव्हा आई काय विचारायची, 'रूमाल घेतला का, पाकीट घेतलं का?' आणि आता काय विचारते? 'मोबाईल घेतला का?' कारण ही आजची गरज आहे, आपण जेवढे पैसे पाकिटातून देऊ शकतो त्याच्यापेक्षा जास्त पैसे आपण ई-ट्रान्झॅक्शन्सद्वारे देऊ शकतो.

नोंवे हा खूप प्रगतशील देश आहे. तिथे इंटरनेटला हुमन राईट्समध्ये धरल जातं. ही गोष्ट जर भारतात लागू केली तरीही खूप चांगलं होईल. कारण इंटरनेट आणि टेक्नॉलॉजी हे खूप महत्त्वाचे घटक आहेत प्रगत होण्यासाठी. पण सध्या आपण इंटरनेटच्या खूप आहारी जात आहोत. कोरोनामुळे आपण इंटरनेटचा उपयोग जास्तीत जास्त करीत आहोत. सोशल मीडियावर आपण खूप सारे अफवा वाचत आहे, बघत आहे. कोरोनाच्या लसींवर आपण विश्वास ठेवत नाहीये. म्हणून मला असं वाटत, आपण नव्या शोधांचं, टेक्नॉलॉजीचं स्वागत केलं पाहिजे. पण आता इंटरनेट हे आपल्याला ऑपरेट करायला यायला लागले आहे. तेव्हा माझं एवढच म्हणणं आहे. सोशल मीडियाचा 'सोसल' तेवढाच वापर व्हावा.

गौरव बारी

एफ.वाय.बी.बी.ए. (सी.ए.)



# कोरोना काळातील शिक्षण

‘चीनमधून आलेली ही स्वारी...  
जगासाठी ठरली सगळ्यात मोठी महामारी...  
खबरदारी घेणे हीच आपली जबाबदारी...!!’

विज्ञानाच्या या युगात मानवाला अनेक संकटांना तोंड द्यावे लागत आहे. यात संकटात भर म्हणजे सध्याची महामारी. कोविड १९ विषाणुमुळे जगभरात लॉकडाऊन पुकारण्यात आला आणि विद्यार्थ्यांना कोरोनाची लागण होऊ नये, कोरोनाचा संसर्ग वाढू नये म्हणून शाळा बंद करण्यात आल्या. शाळा बंद झाली असली तरी शिक्षण सुरू राहिले पाहिजे, यासाठी सर्वच देशात ऑनलाइन पद्धतीने शिक्षण देण्याचे कार्य सुरू केले आहे. ‘घरी राहून शिक्षण’ ही संकल्पना राबविण्यासाठी राज्य सरकारने काही संसाधनाची माहिती उपलब्ध करून दिली आहे. लॉकडाऊन काळात शाळा बंद असल्या तरी शिक्षण सुरू आहे. ऑनलाइन शिक्षण पद्धतीमुळे सध्या जरी ठीक वाटत असले तरी भारतासारख्या देशात हा पर्याय सगळ्याच मुलांसाठी लागू होऊ शकत नाही. ऑनलाईन शिक्षण हे फक्त काही मोजक्याच किंवा ठराविक विद्यार्थ्यांना फायदेशीर आहे. कारण असे की - आजकाल ऑनलाइन शिक्षणासाठी सर्वांकडे मोबाइल किंवा ऑनलाइन शिक्षण घेण्यासाठी सुखसुविधा असेल असे नाही. म्हणून काही ठराविक आणि मोजक्याच विद्यार्थ्यांसाठी फायदेशीर आहे. रोजंदारी वर काम करणारे लोक, ज्यांना शिक्षण घेणे परवडत नाही अशा लोकांनी कसे ऑनलाइन शिक्षण घ्यायचे. गरिब विद्यार्थ्यांना याचा फायदा होणार नाही किंवा शिक्षण घेता येणार नाही. जर सरकारने जिल्हा स्तरावर, तालुका स्तरावर सरकारी योजनांमधून ऑनलाइन शिक्षण उपलब्ध करून दिले तर याचा सर्व विद्यार्थ्यांना लाभ होईल. ऑनलाइन शिक्षण हे एक अर्थाने चांगले आहे तर एक अर्थाने वाईट ठरत आहे. ऑनलाइन शिक्षण हे या कोरोना काळात तरी खूप फायदेशीर आहे. अगदीच नसण्यापेक्षा काही तरी सुरू असलेलं नेहमीच उत्तम! कारण ही परिस्थिती अजून किती काळ राहिल हे कुणीच सांगू शकत नाही. घरी बसून रोजची कामं करून आपल्याला

शिकता येते. शिवाय इतर बऱ्याच गोष्टी आपल्याला शिकता येतात. हातातल्या मोबाइलचा चांगल्या कामासाठी वापर होतोय शिवाय कोरोनासारख्या महामारीमध्ये विद्यार्थ्यांचे वर्ष वाया जाणार नाही याची शाश्वती आहे. या सर्व दृष्टीकोनांतून वाटते की ऑनलाइन शिक्षण चांगले आहे.

ऑनलाइन शिक्षण घेताना त्यातून किती ज्ञान आपण घेतो याचा बोध होत नाही. परिक्षेला काय विचारणार? किती लिहायचे? याबाबत विद्यार्थी अनभिज्ञ आहेत. ज्या विद्यार्थ्यांना शाळेत समोर शिक्षकानी समजावलेला मजकूर कळायला वेळ लागायचा; त्यांना मोबाइलवर शिकविलेलं किती कळेल यात शंका आहे. ऑनलाइन शिक्षणामुळे मुलांना आपल्या संस्कृतीची माहिती होत नाहीय. शाळा-कॉलेज यामध्ये होणाऱ्या वार्षिक सहली, खेळ, उत्सव, वेगवेगळे सोहळे यामुळे मुलांमध्ये एक जोष असायचा. उत्साह असायचा. त्यामुळे त्यांच्या शरिराला चालना मिळायची. शैक्षणिक सहलीमुळे मुलांना आपल्या ऐतिहासिक किल्ल्यांचे ज्ञान मिळायचे तसेच त्यांच्या ज्ञानात भर पडायची. आपली संस्कृती विद्यार्थ्यांपर्यंत वेगवेगळ्या कलागुणांनी यातून पोहोचायची.

कोरोना महामारीमुळे भारतात ऑनलाइन शिक्षण पद्धतीला सुरुवात झाली. कोरोना आणि कोरोनात्तर काळात शिक्षणाचा आणि अभ्यासाचा नव्याने विचार करण्याची संधी या निमित्ताने मिळाली आहे. ऑनलाइन शिक्षण पद्धतीला भविष्यात चांगल्या संधी असतील, ही एक बाजू खरी असली तरी दुसरी बाजू पाहिली तर देशातील एक मोठा वर्ग समुदाय या शिक्षण हक्कापासून दुरावला जाईल.

कोरोनाला हरवूया, जगाला सुरक्षित ठेऊया.

काळजी घेऊया! स्वस्थ राहुया! प्रशासनाला सहकार्य करुया!

धनश्री वाजे

एस.वाय.बी.कॉम.



## भटकी कुत्री

‘भटकी कुत्री’ एक सामाजिक उत्तरदायित्व आहे.

बहुतेक लोक भटक्या कुत्र्यांकडे धोका म्हणून पाहतात. भटक्या कुत्र्यांबरोबर लोकांना वाचवण्यासाठी आणि त्या सर्वांना वाईट गोष्टी समजून घेण्यासाठी कुत्र्याच्या चाव्याच्या काही दुर्दैवी घटना पुरेशा आहेत. सर्व संभाव्यतः कुत्रा चिथावणी देत नाही, जोपर्यंत तो भडकला नाही, आजारी किंवा वेदना होत नाही तोपर्यंत. खरंतर, ‘सायकोलॉजी टुडे’मध्ये प्रकाशित झालेल्या अमेरिकन कॉलेज ऑफ वेटरनरी बिहेवियरिस्टने केलेल्या अभ्यासानुसार, कधी-कधी कुत्री शारीरिकरित्या संवाद साधण्यासही प्राधान्य देत नाहीत.

दुसरीकडे, कुत्री बऱ्याचदा अभिव्यक्त होणारे सामाजिक प्राणी असतात. आपल्याशी बोलण्यास उत्सुक असतात, जर आपण त्या ऐकल्या तरच.

वैदिक काळापासून भारताचे भटक्या कुत्र्याचे मानवामध्ये सहअस्तित्व आहे. आपण ज्या ठिकाणी राहत आहोत तेथील लोकवस्ती त्यांचीदेखील आहे. खरं तर ते मानवी वस्तीच्या फार पूर्वीपासून काही भागात वास्तव्य करीत आहेत. या विषयावर भांडणे, कुत्र्यांचा द्वेष करणे, त्यांना मारहाण करणे किंवा तेथून काढून टाकणे हे चुकीचे आहे.

भटके कुत्रे दत्तक घ्या...

कुत्र्यांच्या फॅन्सी आणि महागड्या जातीकडे जाण्याऐवजी एक मार्ग अवलंबण्याचा प्रयत्न करा. त्यांची देखभाल कमी आहे आणि ते दत्तक घेणाऱ्या त्यांच्या या कुटुंबातील सदस्याइतकेच चांगले आणि समर्पित आहेत.

भटक्या दत्तक घेण्याचे उत्तम स्थान म्हणजे निवारा गृह किंवा फक्त रस्त्याच्या कडेला; ते त्या संधीस पात्र आहेत. हे देखील एक महान कार्य आहे.

निष्कर्ष : घरातील पाळीव प्राण्यासारखे त्यांना आशीर्वाद मिळाल्यासारख्या लहरींमध्ये विचित्र लहरी नसते, परंतु अद्याप ते मानवासाठी अनुकूल आहेत आणि ते देखील मानवी सहानुभुतीस प्रतिसाद देतात.

नक्कीच दुसऱ्या प्रजातीबद्दल थोडीशी सहानुभुती आणि आदर ठेवल्यास बरेच संघर्ष कमी होऊ शकतात आणि जग एक सुखी स्थान बनू शकते .

तर आपण प्रयत्न करूया आणि दयाळूपणासह सामुहिक विचारांसह पृथ्वीवरील सगळ्या लहान लहान असलेल्या जिवांसाठी शांततेचे ठिकाण बनवूया.

खर तर नगरपालिकेनेसुद्धा यात लक्ष घातले पाहिजे. वेळोवेळी रस्त्यावरील कुत्र्यांची देखभाल केली पाहिजे. त्यांची शारीरिक चाचणी केली पाहिजे; त्यामुळे बरेच संसर्गजन्य आजार कमी होऊ शकतात, हे लक्षात घेतले पाहिजे.

प्रज्वल कासार

टी.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)



# कोरोना एक मागोवा

भविष्यामध्ये कोरोना म्हणजे कोविड-१९ या शब्दाचा उल्लेख केला तर सर्वप्रथम दोनच शब्द आठवतील एक म्हणजे २०२० आणि दुसरे चीन. खरं तर कोरोना आणि चीन हे एकाच नाण्याच्या दोन बाजू म्हणल्या तरी योग्यच वाटेल. यामागील कारण म्हणजे कोरोनाचा जन्म वुहान (चीन) मध्ये झाला आहे. यामागचे गुपित आजतागायत उलगडले नाही व कोरोना हा नेमका कोठून आला हे अधिकृतरित्या स्पष्ट केले गेले नाही. हे आंतरराष्ट्रीय आरोग्य संस्था (जागतिक) यांचे अपयश म्हणावे लागेल.

कोरोना हा एक विषाणू आहे ज्याचा संसर्ग झाल्यास होणाऱ्या आजारास कोविड१९ असे नाव दिलेले आहे. २०१९ मध्ये चिनच्या वुहान या शहरात कोरोना विषाणूचे संक्रमण झाल्याचे आढळते. आणि कमी कालावधीमध्ये तो जगभर पसरला. या आधीसुद्धा अशा प्रकारचे विषाणू जगभराने अनुभवले होते. पण हा कोरोना विषाणू '५ जी' च्या वेगाने कमी कालावधित सर्वत्र पसरला आणि त्याने थैमान घातले. अगदी अमेरिकेसारख्या आर्थिकदृष्ट्या संपन्न राष्ट्र असून सुद्धा कोरोनासमोर संक्रमण होऊन मृत्युमुखी पडण्याचे प्रमाण जगामध्ये अव्वल आहे. मात्र आर्थिक महासत्ता होऊ बघण्याचे स्वप्न पाहणारे भारत राष्ट्रसुद्धा या महामारीपुढे काही प्रमाणे जागरूक होता.

कोरोना आजाराने सर्व ठिकाणी कडक संचारबंदी लागू होती. भारत त्याला अपवाद नाही, हेही लक्षात ठेवावे लागेल. भारतामध्ये अशी परिस्थिती कधीही पाहण्यात आली नव्हती. २०२० वर्षे हे फक्त जीवन वाचविण्याचे वर्ष म्हणावे लागले. कारण कोरोना हा संसर्गजन्य असल्याने आणि आजाराची वेगळी स्पष्ट अशी लक्षण नसल्याने या आजारात होणाऱ्या मृत्युचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत होते. अशा भितीदायक वातावरणामध्ये भारतातील डॉक्टर्स, नर्स, सफाई कर्मचारी, जवान यांनी मोलाचे कार्य केले. भारतामध्ये जेव्हा संसर्गजन्य आजार पसरल्यावर त्या आजारामागील औषधे किंवा लशी हे भारतात ५-१०-१५ वर्षांनी भेटायचे. पण या कठीण प्रसंगात भारतातील डॉक्टरांनी चक्र १ वर्षामध्ये कोरोना नियंत्रण करणारी लस शोधून काढली आणि लाखो माणसांचे जीव वाचवले.

हा प्रसंग म्हणजे हनुमानाने लक्ष्मण यांच्यासाठी आणलेले जीवनबुटी होय.

भारत सरकारने कोरोना प्रतिबंधक लस शोधल्यानंतर या लशीची मोठ्या प्रमाणात निर्मिती केली आणि लस देण्याचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. कोव्हीशील्ड आणि कोवॅक्सीन या दोन लसी स्वदेशी असल्याने भारतात यांचे उत्पादन अधिक वेगाने वाढविण्यासाठी अनेक उपाययोजना केल्या पाहिजेत. जसे की सर्वप्रथम ४५+ व्यक्तींना लस घेण्याची परवानगी होती. त्यामध्ये सरकारने भाजी विक्रेते, दूध विक्रेते, व्यापारी, दुकानदार, ऑफलाईन कर्मचारी यांनाही प्राधान्य द्यावे तसेच लस घेण्यासाठी लोकांना जागृत केले पाहिजे.

कोरोनामुळे अनेक व्यक्तींच्या आयुष्यात बदल घडून आले आहेत. माणसाला जन्म व मृत्यु यामागील अर्थ समजू लागला आहे. आरोग्य निरोगी कसे ठेवावे आणि आयुष्य कोणत्या गोष्टींमागे व्यर्थ घालवू नये याबाबतही लोक जागृत झाले आहेत. संचारबंदीमुळे कुटुंब प्रेम वाढत चालले आहे. वडिलधान्या माणसांप्रती आदरभावना वाढत चालली आहे. डॉक्टर, नर्स, सफाई कर्मचारी यांना देवासमान मान मिळतो आहे. शिक्षणाला नवीन वळण लागले आहे. त्यानुसार घरात बसून माणूस काम करू शकतो, हेही जगाला समजले आहे. वर्क फ्रॉम होम, लर्न फ्रॉम होम यासारख्या घोषणा करत सर्वत्र ऑनलाईन सुरू आहे. घरी असलेली माणसे घरातील लोकांशी प्रत्यक्ष आणि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमातून जगाशी अप्रत्यक्षरित्या संवाद साधत आहेत.

कोरोनामुळे माणूस आता स्वतः विचार न करता इतरांच्या भावनांचाही विचार करत आहे. पण कोरोना हा घातक असल्याने जेवढ्या लवकर नष्ट करता येईल तेवढे मानव जातीसाठी अधिक सोईचे ठरेल.

सोनाली वाघमारे

एस.वाय.बी.बी.ए.सी.ए.



# कोरोनाबद्दलचा माझा...

# अनुभव

‘काय सांगू कोरोनाबद्दलचा अनुभव माझा,  
हिरावली त्याने शाळेतील खेळण्याची मजा  
घरात बसून राहायची दिली आम्हा सजा,  
बस झाल कोरोना आता तरी जा !’

मार्च महिन्यात आमची शाळा सकाळच्या सत्रात भरू लागली होती आणि एकेदिवशी सरांनी आम्हाला सांगितले, ‘कोरोनामुळे तुम्हा सर्वांना सुट्टी.’

कोरोना.... हा रोग चायना देशात आढळला होता. त्यानंतर महाराष्ट्रात कोरोनाचा रुग्ण आढळल्याने व नंतर त्यात वाढ झाल्याने प्रतिबंधात्मक उपाय म्हणून राज्य सरकारने शाळा, कॉलेज बंद करण्याचा निर्णय घेतला. त्यानंतर २२ मार्च रोजी आपल्या देशाचे पंतप्रधान मा. नरेंद्र मोदी यांनी ‘जनता कर्फ्यु’ व त्यानंतर २५ मार्च रोजी लॉकडाऊन जाहिर केला. कोरोना विषाणू संक्रमित असलेल्या व्यक्तीच्या संपर्कात एखादी व्यक्ती असल्यास कोरोनाचा प्रसार वेगाने होतो. त्यामुळे या कोरोनाची साखळी तोडणे व कोरोनावर नियंत्रण मिळवणे यासाठी लॉकडाऊन जाहीर करण्यात आला.

या महामारीमध्ये खूप लोकांचे हाल झाले. काही लोकांना एकवेळचे जेवण देखील मिळत नव्हते. काही लोकांचे जीवन हे सुट्टी असल्या कारणाने त्यांचे जीवन आनंदात जात होते. मात्र या महामारीमध्ये खूप लोकांना आपले जीवन गमवावे लागले. हा विषाणू शरीरात इजा करत असे. कोरोनाचा परिणाम हा जास्त वयस्कर आणि तरुण वयाच्या माणसांवर होत होते.

या काळात लोकांचे खूप हाल झाले. काही लोकांचे काम गेले. उपाशी राहण्याची वेळ आली सगळ्यांवर! पण या काळात भरपूर मदतीचे हातही पुढे आले. लोकांनी अन्नदान केले. त्यांना २ वेळचे जेवण पुरवले गेले तर काही लोक गेली कित्येक महिने मोफत किराणा माल वाटप करत होते. त्याने लोकांना खूप आधार मिळाला होता. याकाळात काही लोक शहरे सोडून गावाकडे गेले. ज्या लोकांनी कधी गावाकडचा वातावरणाचा अनुभव देखील घेतला नसेल ते सगळे तिकडे जाऊन राहिले. तसेच याकाळात लोकांना खूप अशा विविध प्रकारच्या सवयी लावाव्या लागल्या. उदा. मास्क लावणे, नियमितपणे हात धुणे, सॅनिटायझरचा वापर करणे, लोकांपासून काही अंतरावरून बोलणे, आपल्या अंगणातील परिसर स्वच्छ ठेवणे, बाजारातून भाज्या, फळे सर्व आणल्यावर ते स्वच्छ करून ठेवावे, बाहेरून आल्यावर आपला मास्क व कपडे बदलावे आणि अंघोळ करावी. अशा खूप सवयी लागल्या.

कोरोनाच्या काळात सर्व विद्यार्थ्यांचे शिक्षण हे ऑनलाईन पद्धतीने सुरू झाले. पण त्यातही काही मुलांना ऑनलाईन शिक्षण घेता येत नव्हते. कारण काही मुलांकडे फोन नव्हता तर काही मुले खेड्यात राहत होते ज्यांना कसलंच शिकता येत नव्हते.

कोविडच्या काळामध्ये भरपूर असे प्रसंग घडले. सर्व लोक घरात होते; तेव्हा वेगवेगळे प्राणी, पक्षी यांचे दर्शन घडले. त्याचप्रमाणे लॉकडाऊन असल्या कारणाने सर्व लोक घरात होते. त्यांचे बाहेर फिरणे कमी झाले. त्यामुळे लोक वाहन कमी प्रमाणात चालवू लागल्याने वायुप्रदूषण कमी झाले. कोविडपूर्वीच्या काळात प्रदूषण ज्यास्त असल्याने त्याचा परिणाम हा पक्षी, प्राणी यांवर होत होता. पण आता याकाळात त्याचे प्रमाण कमी होताना दिसत आहे.

कोरोना काळात खूप लोकांचे नुकसान देखील झाले. उदा. दुकाने, मोठमोठे मॉल, सिनेमा हॉल, क्रिकेट, मुलांचे खेळण्याचे पार्क, बस वाहतूक, रेल्वे वाहतूक, असे बरेच काही बंद करण्यात आले. कोरोनामुळे मनात भीती निर्माण झाली होती. त्यात दररोजच्या टीव्ही वरच्या बातम्या पाहून तर सगळेच भयभीत झाले होते. चीनमधील वूहान येथील जन्मलेला हा विषाणू! या विषाणूने पूर्ण जगात थैमान घातला.

‘आशा’ ही मानवास लाभलेली दैवी शक्ती आहे. संकट कितीही मोठं असू दे, आपल्या जवळ सकारात्मक विचार असतील तर आपण त्या संकटाचा नक्कीच सामना करू शकतो. सर्व लोक आता स्वतःच्या आरोग्याविषयी अधिक जागरूक झाले आहे. लोक आता गरजेच्या वेळी बाहेर पडतात. सर्व लोक कुठे ही जायचे असेलतर मास्कचा वापर करतात. गर्दीच्या ठिकाणी जायचे टाळतात. लोकांना स्वच्छतेचा धडा कोरोनाने शिकवला. मात्र त्याचबरोबर वर्गातील अभ्यास, मैदानावरचे खेळ, गप्पागोष्टी, दंगा मस्ती या सर्वांना आपण मुकलो. शेवटी देवाजवळ एकच प्रार्थना आहे.....

‘संकट लवकरात लवकर दूर व्हावं  
दूर कर हे संकट, दयाळू दयाघना,  
पूर्ण कर माझी मनोकामना,  
जाऊ दे हा कोरोना.....  
देवा प्लीज सुरू कर माझी शाळा!’

गौरी ताते

१२ वी वाणिज्य



## प्रगतशील शेतकरी

विष्णु महादु बेंडकोळी हा कोळी समाजातील एक धडपड्या तरुण अशी त्यांची ओळख. तो नाशिक जवळील आनंदवल्ली या गावचा राहणारा. त्याच्या स्वतःच्या गावी व शेजारच्या गोवर्धन या गावात मिळून त्याचे पाच चुलते यांची एकत्र छत्तीस एकर जमीन आहे. त्यांची जमीन चराऊ कुरण होती. त्यामुळे विष्णुचे बालपण अत्यंत हालाखीचे गेले. घरच्यांना व स्वतःच्या शिक्षणाला हातभार लावावा यासाठी विष्णु शेतावर कामाला जात असे. त्यावेळी त्याला पंचाहत्तर रूपये रोजगार मिळत असे. बाळासाहेब शिंदोरे यांच्याकडे गुलाबाची शेती होती. त्यांची देखरेख करण्यासाठी साहेबराव डुकरे हा मुकादम होता. विष्णु त्यांच्याकडून गुलाबाचे डोळे भरायला शिकला. त्या काळात त्याला एका डोळ्याचे पत्रास पैसे मिळत. तो दिवसाला पाचशे ते सहाशे रुपये मिळवत असे.

त्यांनी स्वतःच्या शेतात दोन एकरांवर गुलाबाची लागवड

केली. त्यांनी आठ वर्षे फुलशेती केली. त्यांच्या गुलाबाला सतत तीन वर्षे 'गुलाबाचा राजा' हे पहिले पारितोषिक मिळाले.

गुलाब शेतीबरोबरच विष्णु यांनी द्राक्षे शेती सुद्धा सुरू केली. त्यांच्या वाटेला आलेल्या पाच एकर जमिनीवर त्यांनी वाइन व्हरायटी लावली. एका प्रसिद्ध वायनरीशी दीर्घ मुदतीचा करार करून भाव बांधून घेतला. त्यांची ही शेती उत्तम दर्जाची वाइन द्राक्षे शेती आहे. त्यांनी आपल्या चुलत्यांना देखील योग्य मार्गदर्शन करून द्राक्षे लावून दिली. त्यांच्या कुटुंबात एकूण तीस एकर द्राक्षे आहेत. आता त्यांची स्वतःची वायनरी काढायची इच्छादेखील त्यांनी व्यक्त केली आहे.

प्राजक्ता घोडके

एफ. वाय. बी. कॉम.



## नव्या प्रवासाचा आरंभ

आता नव्या कायद्यामुळे जम्मू-काश्मीर आणि लडाख हे भारतातील तीन भूप्रदेश नवा प्रवास सुरू करीत आहेत. स्वातंत्र्य मिळाल्यापासून गेली ७२ वर्षे जम्मू-काश्मीर आणि लडाखचा प्रवास इतर राज्यांपेक्षा वेगळे, विशेषाधिकार असणारे आणि विवादात अडकलेले राज्य या नावाने होत होता. राज्यघटनेतील कलम ३७० आणि त्यातच अनुस्युत असणारे कलम ३५ ही दोन्ही आता रद्द ठरली आहेत. आज जम्मू-काश्मीर हा एक तर लडाख हा दुसरा केंद्रशासित प्रदेश जन्म घेत आहे. मेहबूबा यांचे सरकार गेल्यानंतर १९ जून २०१८ पासून जम्मू-काश्मीर राष्ट्रपती राजवट होती. गुरूवारी राष्ट्रपतींनी तीही संपत असल्याचा हुकुमनामा जारी केला. आता दोन्ही केंद्रशासित प्रदेशांचे नायब राज्यपाल थेट केंद्र सरकारच्या अखत्यारीत कारभार हाकतील. दोन्ही प्रदेशांचा कारभार जर लोकाभिमुख झाला आणि विकासाच्या योजना नीट पोहचू लागल्या तर वातावरण निवळू शकते.

गोपाल घुगे  
एस.वाय.बी.ए.



प्रत्येकाला वंशाचा दिवा हवा असतो, म्हणून अगदी सहजपणे दुधात पडलेली माशी जशी अलगद काढून फेकली जाते तसा तो आईच्या पोटातला लहानसा जीव काढून फेकला जातो. आजची ही पिढी कितीही पुढे गेलेली असली किंवा बदललेली असली तरी त्यांचे विचार जुनेच आहेत. अजूनही असंच म्हणलं जातं, 'मुलगाच घर चालवू शकतो, घराण्याच नावं मोठं करू शकतो, मुलगी नाही.'

सरकारने यावर दक्षता घेऊन कठोर नियम व कायदेही काढले. त्याचा काहीसा परिणाम लोकांवर झालेला दिसून येत होता. मुलींच्या संख्येत वाढ झालेली दिसत होती. पण काय उपयोग? मुलींवर होणारे अत्याचार कुठेही कमी झालेले नाहीत उलट ते वाढलेत. बलात्कार व्हायचे थांबलेच नाही.

सर्वांना आई हवी, बहिण हवी, बायको हवी पण मुलगी कोणालाच नको आहे. मुलगी जेव्हा जन्माला येते, तेव्हापासूनच तिच्यावर बंधने लादली जातात. भातुकली खेळायचे तिचे चिमुकले हात भांडी घासताना दिसतात. थोडी मोठी झाली की अठरा वर्ष पूर्ण होण्याआधीच चौदा-सोळा वर्षातच लग्न ठरवलं जातं. जग कितीही पुढं गेलेलं असलं तरी बालविवाह होण्याचे थांबलेच नाहीये.

जन्माला आली जरी, स्वागत होत नाही  
कन्या आहे म्हणून, आनंद होत नाही!

तुमच्यासारखं मलाही जगायचयं मलाही जग पहायचयं! 'मुलगी वाचवा, मुलगी शिकवा.'

स्वाती सगरे  
टी. वाय. बी.कॉम.



प्रेम ही गोष्ट अशी आहे की, ते आपण सगळ्यांच्या नकळत करतो. एवढेच काय, तर ही गोष्ट आपण आपल्या आई-वडिलांनाही समजू देत नाही. अशा प्रेमात आपल्याला यश आले तर ठीक आणि अपयश आले तर आपण दुःखी होतो. आपण स्वतःला त्रास करून घेतो. असे का होते? कारण आपण ज्या व्यक्तीवर प्रेम करतो त्या व्यक्तीच्या सुंदरतेला आणि इतर गोष्टींना कदाचित महत्त्व देत असू. आपण ज्या व्यक्तीवर प्रेम करतो. त्या व्यक्तीच्या सुंदरतेपेक्षा त्या व्यक्तीचे मन, स्वभाव ह्याचा विचार करायला हवा. मनाने स्वच्छ व स्वभावाने चांगली निर्मळ जी कोणतीही व्यक्ती असेल ती तुम्हांला आयुष्यभर साथ देणार. कारण त्या व्यक्तीला गरज असते ती फक्त तुमच्या प्रेमाची, सहवासाची, तुमच्या आधाराची, आणि तुमची. जर ती व्यक्ती तुम्हाला तुमच्या आयुष्यात नाही भेटली तर वाईट वाटून घेऊ नका. कारण कधी-कधी भगवंत आपल्याला सुंदर स्वप्न फक्त दाखवतो, त्या दुनियेत नाही जाऊ देत. म्हणून एखाद्या व्यक्तीवर प्रेम जर केले तर असे प्रेम करा की प्रेम शब्द जरी त्या व्यक्तीने ऐकला तर त्या व्यक्तीला समोर तुमचा चेहरा दिसायला हवा आणि डोळ्यात टचकन पाणीच घायला हव.

राजू बाठे  
टी. वाय. बी.कॉम.



## पुन्हा येतील का ते दिवस....

पाहिल्यासारखे दिवस पहायला कधी मिळतील? ही आस आता सर्वांच्या मनी लागलीय. आठवून पहा तो दिवस जेव्हा पहिल्यांदा कोरोनाचे नाव आपल्या कानावर पडले. त्याक्षणी एवढे वाटले नव्हते, की या कोरोनाचे नाव इतके दिवस जपत यावे लागेल. वाटत होते की जाईल लवकरच म्हणत दुर्लक्ष केले. पण जसजसे कोरोनाचे नाव रोज रोज कानावर यायला लागले, त्याबाबतची बातमी वर्तमानपत्रात, लोकांच्या सांगण्यावरून कळायला लागले. सर्व शाळा, कॉलेज, व्यापार, सर्व काही सुरळीत चालू होते. पण वाटलं नाही की असे पण दिवस बघावे लागतील! मार्च महिन्यात सांगण्यात आले की जे चालू झाले ते अजून पण थांबवण्यात आले नाही.

प्रवास बंद, दुकाने, व्यापार बंद! बंद तर झाले पण त्याक्षणी माणसाच्या पैश्याच्या बचती संपू लागल्या. तेव्हा डोळ्यांसमोर सर्व चित्र येऊ लागली. ज्यांचे हातावर पोट आहे त्यांचे काय? रस्त्यावर फिरणारी, वस्तू विकून कमावणारी त्यांचे काय? एक ते दोन महिने सर्वसामान्य माणसांनी कसेबसे काढले. नंतर काय? कोणाकडून कर्ज घेऊन तर कधी काही गहाण ठेवून तर कधी विकून!

पण हे मात्र खरं आहे लॉकडाऊनमध्ये कळून आले पैश्याचे महत्त्व! खर्च करताना जाणीव होत होती. प्रत्येक जीवनसरणीच्या गोष्टीची गरज भासू लागली. तेव्हा सर्वात महत्त्वाचा प्रश्न म्हणजे रोजच्या खाण्याचा! लोकांची काम बंद पडली, बरेचसे लोक आपल्या गावी गेले. पर्यायच नाही हो! जिथे राहतोय तिथे स्वतःचे घर असेल तर काहीतरी बरे, नाहीतर ज्याचे घर भाडेतत्त्वावर तो काय करणार? सर्वच काही अवघड झालं ना! ज्यांचे काम ऑफिसात बसूनचे होते, त्यांचे काम आता झाले घरकाम (वर्क फ्रॉम होम) घरातून काम करता येत होते. त्यात पण काहीजणांच्या पगारात कपात करण्यात आली. तसेच काहीना कामावरून काढण्यात सुद्धा आले. त्यांचे पण योग्यच ना! व्यापार देवाण-घेवाण कमी झाल्यावर त्या लोकांना मासिक हप्ता, पगार तर द्यावे लागणार. ते कोठून होणार याचा प्रश्न? पण त्यांच्यासाठी दुसरे काही करता येईल का हा विचार करणे पण गरजेचे होते.

कोणताही व्यवसाय असो; त्यात कर्मचारी, कामगार यांचा खूप मोठा हातभार असतो. याचा विचार करायला हवा. त्यांना काढण्याअगोदर त्यांचा आणि त्यांच्या कुटुंबाचा विचारदेखील करायला हवा. त्यानंतर काही महिनाभरानंतर सरकारकडून थोडासा आधार ते म्हणजे रेशन (धान्य) मिळण्यास सुरुवात झाली. ही एक चांगली गोष्ट झाली. ह्या सर्व झाल्या दररोजच्या व्यवहारातील गोष्टी....

त्याचवेळी या लढाईत सर्व डॉक्टर, नर्स, वैद्यकीय कर्मचारी

यांचाही खूप मोलाचा वाटा! महत्त्वाचे म्हणजे ज्या व्यक्तीला कोरोना झालाय असे ऐकण्यात किंवा दिसून आल्यास काहींच्या मनात भीती होती. आपल्या शेजारच्या किंवा जवळच्या माणसासोबत बसण्याची देखील भीती होती व ती अजूनही आहे. असे असूनही डॉक्टर व त्यांचा स्टाफ दिवसरात्र प्राण पणाला लावून काम करत आहे. कोरोनाच्या पेशंटजवळ जाऊन त्यांचा उपचार करित आहेत. यात कित्येक डॉक्टरांनी आपला जीव गमावला आहे. तरीसुद्धा ते आपली कामगिरी पूर्ण पाडत आहे. तसेच आपले पोलीस अधिकारी सुद्धा दिवसरात्र जनतेच्या सुविधेसाठी कार्यरत आहेत. त्यांनाही त्यांच्या कुटुंबाची काळजी असतेच. पण काही पर्याय नाही असं म्हणत जनतेच्या सुविधेसाठी ते तत्पर आहेत. सामान्य माणसाने तर घरी राहून स्वतःची काळजी घ्यावयाची आहे. तरीही काही लोक 'कोरोना होणार नाही' म्हणत हिमतीने घराबाहेर जाऊन फिरून येणार. पण जेव्हा कोरोना होईल, तेव्हा त्या व्यक्तीला कळते की आपली ही एक चूक किती महागात पडली व आपल्या सोबत आपल्या कुटुंबातील सदस्यांनाही अडचणीत टाकले गेले.

प्रत्येक व्यक्ती आता मास्कचा वापर करत आहे. तरी पण कोरोना होत आहे. मास्क लावण्यासोबतच ही आपण काळजी घेतली पाहिजे की आपण कुठे जातो, कोणासोबत बसतो ही काळजी तर स्वतः घेतली पाहिजे. आत्तापर्यंत कित्येकजणांचे जीव गेले आहेत. असे नाही कि त्यांनी स्वतःची काळजी घेतली नसावी पण कुठे ना कुठे चूक झाल्याशिवाय राहत नाही व ती चूक आपल्याला नंतर दिसून येते. कोरोना झाल्याची लक्षणे लगेचच दिसून येत नाहीत. पण जेव्हा कोरोना झाल्याचे दिसून येते त्यानंतर कळून पण येणार नाही की कोणामुळे किंवा कुठे गेल्यामुळे झालाय. एकामुळे दुसऱ्याला या कोरोनाचा त्रास सोसावा लागतो; हे दिसून आले आहे. लवकरच हे ही संकट जाईल, डॉक्टर, पोलीस अधिकारी, प्रत्येक कर्मचारी, सफाई कर्मचारी, प्रत्येक व्यक्ती आपले योगदान देत आहे! शक्य होईल तितकी तुम्हीही इतरांना मदत करा. तुमच्या मदतीमुळे समोरच्या व्यक्तीचे कुटुंब हे काही काळ का होईना सुखाने जगेल.

सांगण्यासारखे तर भरपूर आहे. आपण देखील आपली आणि आपल्या कुटुंबाची जबाबदारी सांभाळा आणि बाहेर निघताना मास्क, सॅनिटायझरचा वापर जरूर करा! घरी रहा, सुरक्षित राहा !

पुरुषोत्तम सुत्रावे

एम. कॉम -1



## कोरोनामुळे काय झाले ?

कोरोनाचं नुसतं नाव उच्चारलं तरी अनेकांचा थरकाप होतो. मार्च २०२० पूर्वी आपल सगळ्यांचं जीवन किती सुखात होत. आता मोकळा श्वास घेणे अवघड झाले आहे. जगताना अनेक नियम, बंधनं सगळ्यांनाच पाळावी लागत आहेत.

कोरोना म्हणजे 'कोविड १९'ची सुरुवात चीनमधील वुहानमध्ये झाली खरी; पण त्यानंतर दोन ते तीन महिन्यात कोरोनाने सगळ्या जगाला वेठीस धरलं. ते आजपर्यंत चालूच आहे. दिवसेंदिवस कोरोनाचे स्ट्रेन जास्त भयानक होत चालला आहे. कोरोना कधी संपेल याबाबत अनेक तर्कवितर्क चालू आहेत.

कोरोनामुळे अनेक देशांची आर्थिक स्थिती ढासळली आहे. संपूर्ण व्यवहार बंद झाले आहेत. त्यामुळे अनेकांवर उपासमारीची वेळ आली आहे. अनेकांचे व्यवसाय बंद पडले. नोकऱ्या गेल्या आहेत. तर अनेकांनी आपली सोन्यासारखी जीवाभावाची माणसे गमावली आहेत. अनेकांना संपूर्ण कुटुंबच गमावली आहेत.

कोविड १९ आजार संसर्जन्य असल्याने आणि या आजाराची वेगळी स्पष्ट अशी लक्षणे नसल्याने या आजारात एकमेकांपासून सुरक्षित अंतर पाळणे, वारंवार हात स्वच्छ धुणे, बाहेर फिरताना मास्क वापरणे ही काळजी आपण घेऊ शकतो. बाहेर गेल्यावर कोणत्याही ठिकाणी हात लावणे टाळावे. कारण कोरोना हा विषाणू दिसूनही येत नाही आणि लवकर नष्टही होत नाही. नेहमी

बोलताना तीन फुटांचे अंतर ठेवावे. कोणतेच औषध शंभर टक्के उपचार देणारे नसल्याने रोगप्रतिकार शक्ती वाढविणे हा एकच पर्याय आपल्यापुढे आहे. त्यामुळे योग्य आहार, योग्य व्यायाम, योग्य झोप आणि स्वच्छता या बळावर आपण स्वतःला कोरोनापासून वाचवू शकतो.

कोरोना काळात संपूर्ण जगभरात माणसांचे राहणीमान बदलले आहे. खूप सारे लोक, मुलं घरी बसूनच शाळेचे, ऑफीसचे काम करत असले तरी काहीजण विविध कला मनोरंजन तसेच व्यायाम, योगा नवनवीन गोष्टी शिकत आहेत.

कोरोना विषाणूवर लस शोधण्यात यश आले आहे. फायझर, कोविशिल्ड, कोवॅक्सिन, स्पुल्निक व्ही, मॉडर्ना अशा काही लसी ९० ते ९५ टक्के प्रभावी आहेत. जागतिक आरोग्य संघटनेच्या म्हणण्यानुसार कोणतीही लस ही १०० टक्के उपचार देणारी नाही. त्यामुळे सर्वांनी योग्य काळजी घेऊन स्वतःला सशक्त बनविणेच योग्य मार्ग आहे. शेवटी एवढंच सांगेन,

सतत हात धुवा, मास्क वापरा आणि निरोगी रहा.

संजीवनी मोरे

एम.कॉम. - 1



## साधेपणा

साधेपणा माणसात उपजत असतो. तो कधीही न बदलणारा एक स्वभावच असतो. पण काही लोक साधेपणाला नावं ठेवतात. त्यांना हसतात. पण ते खरंच साधे असतात का? त्यांना सर्व माहित असत. हसणारे, नावे ठेवणारे पण ते दुर्लक्ष करीत असतात. कारण त्यांना नातं टिकवायचं असतं. काहीजण बरेचदा व्यक्तींची तुलना कपड्यांवरून करताना दिसतात.

चांगले कपडे, चांगले राहणीमान म्हणजे परिस्थिती चांगली अशा देखाव्यावर भाळतात. पण माणूस कसा दिसतो त्याहीपेक्षा कसा आहे याला नक्कीच महत्त्व आहे. कारण एक दिवस माणसाचा साधेपणाच ब्रँड बनून जातो.

तसेच नवीन कुठली सुरवात केली तर लोक लगेच म्हणायला सुरवात करतात, याची आर्थिक परिस्थिती खराब आहे. पण त्या व्यक्तीला तळमळ असते ती स्वतःचं अस्तित्व निर्माण करण्याची... जन्माचे सार्थक करण्याचे! माणसाच्या वरपांगी देखाव्यापेक्षा अंतर्गत साधेपणाच श्रेष्ठ!

माणसाची वेळ नक्कीच बदलते. बदल हा सृष्टीचा नियमच आहे. वाईट काळात संयम बाळगला की चांगल्या काळात नम्रता आपोआप येते. दिवस विसरले की माणूस गर्वाने फुगतो. दिवसांची, वाईट वेळेची जाणीव ठेवली की माणूस नक्कीच प्रगती करतो. आपल्याला वाईट वेळेत साथ दिलेल्या माणसांची जो नेहमी कदर करतो, त्याला देवधर्माची गरज लागत नाही.

कारण वाईट काळात साथ दिलेली ती माणसं नसून आपल्यासाठी देव असतात. रूसवे-फुगवे कितीही असले तरी आपली नाती, आपली माणसं 'आपलीच' असतात. वेळ आली की नक्कीच त्यांची किंमत कळते.

\*\*\*

लक्ष्मी रेचे

एम.ए. - इंग्रजी 1

## जीवन

\* हिंमतीने हरा. पण हिंमत हरू नका. परमेश्वर प्रत्येकाला हिरा बनवूनच जन्माला घालतो. पण चमकतो तोच, जो घणाचे घाव सोसण्याची हिंमत ठेवतो.

\* भूतकाळ कसाही असू द्या. भविष्यकाळ आपलाच आहे. लढायचं आणि घडायचं!

\* ज्या दिवशी आत्महत्या कराविशी वाटेल त्यावेळी छत्रपती संभाजी महाराजांचे चरित्र वाचा. जीवनात जगणे म्हणजे काय ते कळेल.

धिरज वहिले

एफ.वाय.बी.कॉम.

## आयुष्यातील ओळख

आयुष्यात फक्त दोनच गोष्टीमुळे तुम्ही ओळखले जाता...

एक म्हणजे,

तुमच्याकडे काहीही नसताना

तुम्ही दाखवलेला 'संयम'

आणि दुसरे म्हणजे

तुमच्याकडे सर्व काही असताना

तुमच्याकडे असलेली 'नम्रता'!!

पूजा घुंडरे

एफ.वाय.बी.कॉम.

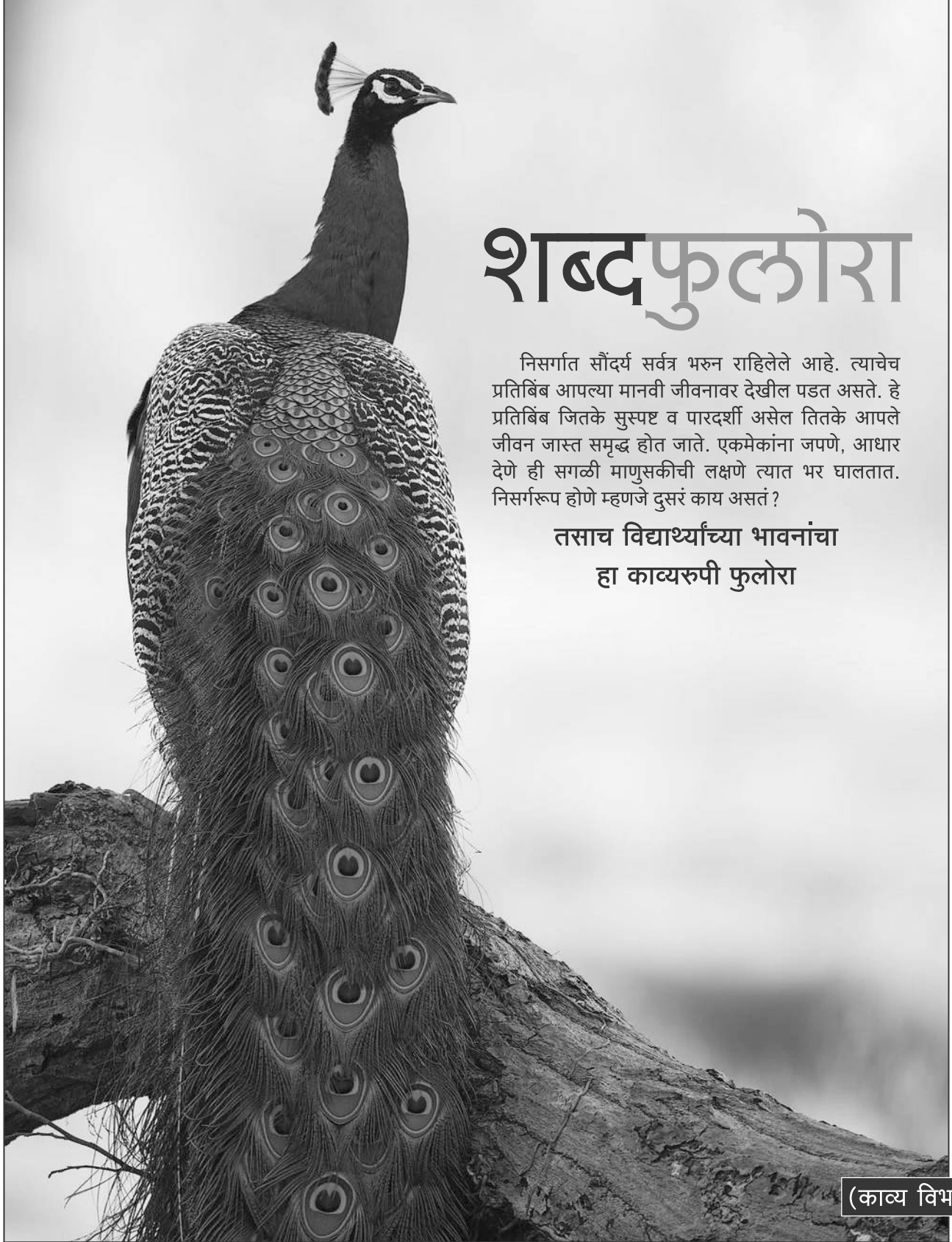
## सुंदर विचार



आयुष्यात जेव्हा वादळ येतं तेव्हा पाय घट्ट रोवून उभं राहायचं असतं. प्रश्न वादळाचा नाही, जे व्हायचं ते नुकसान होणारच! ते जेवढ्या वेगाने येतं तेवढ्याच वेगाने निघूनही जातं. त्यात फक्त आपण किती सावरलो आहोत हे महत्त्वाचं असतं.

तेजस्विनी चव्हाण

एफ.वाय.बी.कॉम.



# शब्दफुलोरा

निसर्गात सौंदर्य सर्वत्र भरून राहिलेले आहे. त्याचेच प्रतिबिंब आपल्या मानवी जीवनावर देखील पडत असते. हे प्रतिबिंब जितके सुस्पष्ट व पारदर्शी असेल तितके आपले जीवन जास्त समृद्ध होत जाते. एकमेकांना जपणे, आधार देणे ही सगळी माणुसकीची लक्षणे त्यात भर घालतात. निसर्गरूप होणे म्हणजे दुसरं काय असतं ?

तसाच विद्यार्थ्यांच्या भावनांचा  
हा काव्यरूपी फुलोरा

(काव्य विभाग)

## चहा की कॉफी



चहा म्हणजे उत्साह  
 कॉफी म्हणजे स्टायल  
 चहा म्हणजे मैत्री  
 कॉफी म्हणजे प्रेम  
 चहा एकदम झटपट  
 कॉफी अक्षरशः निवांत  
 चहा म्हणजे झकास  
 कॉफी म्हणजे वाह...मस्त!  
 चहा म्हणजे कथासंग्रह  
 कॉफी म्हणजे कादंबरी  
 चहा मंद दुपार नंतर  
 कॉफी धुंद संध्याकाळी  
 चहा चिंब भिजल्यावर  
 कॉफी ढग दाटून आल्यावर  
 चहा = discussion  
 कॉफी = conversation  
 चहा = living room  
 कॉफी = waiting room

मनिषा गरगंटे  
 एस.वाय.बी.कॉम.

## नजर

मुलींनो स्वतःला त्या  
 चांदणीप्रमाणे बनवू नका,  
 ज्यावर सान्यांची नजर पडेल....  
 तर स्वतःला त्या  
 सूर्यासारखं प्रखर बनवा,  
 जेव्हा एखाद्याची नजर पडली  
 तर ती नजर  
 झुकली पाहिजे.

योगिता घुंडरे  
 एफ.वाय.बी.कॉम.



## रावणकोरोना

तू आलास, तू राहिलास,  
 कोरोना तू चांगलाच रमलास  
 स्वागत तुझं, पण गोष्ट एक विसरलास  
 धाडलंय तुला देवानं,  
 संहार करायला पाप्यांचा  
 दिवसाढवळा ओरबडणाऱ्या श्वानांचा  
 अन् अनितीने बरबटलेल्या रंकाचा  
 राहिली नाहीये का रे,  
 तुला कसलीच भीती  
 का माणसात येऊन  
 तुही सोडलीस नीती  
 रावणानेही एकदा  
 नीती होती सोडली  
 श्रीरामांनी मग त्याची  
 चांगलीच खोड मोडली  
 आता लगबगीने तूही,  
 घाल स्वतःला आवर  
 नाहीतर आजही आहेत  
 अनेक रघुवीर तत्पर  
 संशोधकांच्या जोडीला  
 अथक राबतायेत डॉक्टर  
 देतील अशी काही दवा,  
 काढून घेतील तुझी सगळी हवा  
 तुला माहिती नाहीये अजून  
 आमचा पोलिसी खाक्या  
 साखळी तोडून, कापतील  
 तुझ्या एकूण एक नसा  
 अजूनही सांगतोय,  
 ज्याकरिता धाडलंय तेवढंच उरक  
 केवळ कर संहार तयांचा,  
 जे आहेत या भारतभूला मारक!

साक्षी जगताप  
 एस. वाय. बी.बी.ए.(सी.ए.)

## व्यथा शेतकऱ्याची

पॅकेज देऊन लावणार  
 शेतकऱ्यांच्या कोपराला गुळ  
 कितीही झाल तरी  
 शेतकरीच देशाच मूळ  
 उन्हाळा पावसाळा हिवाळा  
 शेतकऱ्यांच्या मागे विघ्न  
 खुर्चीवर बसलेले मात्र  
 आहेत खुर्चीत आपल्या मग्न...  
 रोज लागते ज्यांना फक्त  
 एसीची हवा  
 कसा जगतो शेतकरी  
 त्यांना कळणार कवा...  
 वर्षाला कुणाच्या तरी  
 पगारी भत्त्यात वाढ आहे.  
 फक्त शेतकऱ्यांसाठी मात्र  
 देणारा झोपेत गाढ आहे.  
 पहात आहोत आत्महत्त्येचा  
 क्रिकेटसारखा खेळ  
 शेतकऱ्यांचे अश्रू पुसायला  
 यांना लागतो बराच वेळ

निलेश पगार  
 एस.वाय.बी.कॉम.

## कोरोना आला घरी दारी

कोरोना आला घरी दारी,  
 व्यक्तींच्या जीवनाचा नाश करी!  
 गर्दी गर्दीच होती सारी,  
 कोरोनाने दूर केली गर्दी सारी!  
 सुसज्ज होती जीवन सारे,  
 कोरोनाने केले उद्ध्वस्त सारे!  
 विस्फोट झाला कोरोनाचा,  
 सहवास तुटला व्यक्तींचा!  
 ठप्प झाले उद्योग काही  
 कोरोनाने शिकविले बरेच काही!  
 कोरोना आला घरी दारी,  
 व्यक्तींच्या जीवनाचा नाश करी!  
 - आम्रपाली बवले  
 एफ.वाय.बी.कॉम.



## माणसातला माणूस

महादेवाच्या मदतीला, मोहम्मद धावला  
युसुफच्या मदतीला, यशवंता धावला  
आज खऱ्या अर्थानं मला  
माणसातला माणूस घावला...  
ना ज्योतिबांन तारलं ना आंबाबाईनं तारल  
माणसावरल संकट माणसांनीच सारलं...  
गावच्या गाव पुरानं वेढली होती  
माणसासह घरदारं पाण्यात गाडली होती  
ना खंडोबा पावला, ना विठ्ठल पावला  
आज खऱ्या अर्थाने माणसातला माणूस घावला...  
काल ज्याच्या स्पर्शाने त्याचा धर्म बाटत होता  
आज त्याला तो देव वाटत होता  
निसर्ग कोपला पावसाने प्रताप दावला  
अन् खऱ्या अर्थानं माणसातला माणूस घावला...  
एकमेकांना वाचवण्याची धडपड मला दिसली  
बुडणाऱ्याला हात देण्याची तडफड मला दिसली  
आज खऱ्या अर्थान मला माणसातला माणूस घावला...  
(सातारा, सांगली, कराड, कोल्हापूर येथील पूग्रस्तांसाठी  
मदतीचा हात देणाऱ्या सर्वांचे मनापासून आभार!)

निलेश शिंदे  
एफ.वाय.बी.कॉम.



## हा माझा अंत नाही

विझलो आज जरी मी  
हा माझा अंत नाही...  
पेटेन उद्या नव्याने  
हे सामर्थ्य नाशवंत नाही...  
छाटले जरी पंख माझे  
पुन्हा उडेन मी  
अडवू शकेल मला  
अजून अशी भिंत नाही...  
माझी झोपडे जाळण्याचे  
केलेत कैक कावे  
जळेल झोपडी अशी  
आग ती ज्वलंत नाही...  
रोखण्यास वाट माझी  
वादळे होती आतूर  
डोळ्यात जरी गेली धूळ  
थांबण्यास उसंत नाही...  
येतील वादळे खेटेल तुफान  
तरी वाट चालतो  
अडथळ्यांना भिवून अडखळणे  
पावलांना पसंत नाही...  
(-सुरेश भट)  
संकलन : रोहीत पवळे  
टी.वाय, बी.कॉम.

## जीवनाचे मोल



जीवन खडतर आहे म्हणून जीवनाचे मोल  
जीवनाची वाट चालताना पाय रूततात खोल  
जीवनवाटेवर भेटतात कोणी परके कोणी आपले  
परक्यांचा त्रास नसतो उपद्रव करतात आपले  
जीवन एक पाऊल वाट,  
तिला असते फक्त आशेची पहाट  
सोनेरी सकाळ पहाण्यात मन माझे आतुरले  
आपलेपणाचे दाट धुके सभोवताली दाटले  
जीवन एक प्रवाह ज्याला असते काठाची सीमा  
अंतिम सत्य एवढेच सागराला जावून भेटणे  
अंतिम सत्य माहितीय तरी जीवन थांबत नाही  
कारण थांबण, हा जीवनाचा गुणधर्म नाही  
सुख, दुःखाची डोंगर-दरी ओलांडत  
सुखाच्या शोधात जगणं हेच जीवन असते  
जीवन किती खडतर असते  
म्हणूनच त्याचं मोल गगनाएवढे असते.

अश्विनी कपले  
टी.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)

## आईची आठवण

आई तुझी खूप आठवण येते गं आई ,  
वेडं मन माझं शोधत असते तुजला,  
तू ये ना गं आई....  
आठवणींनी डोळ्यात पाणी उभे राहते,  
तू जवळ हवीस असे वाटताना  
खूप दूर आहेस हे सांगून जाते....  
सुखद स्मृतींच्या कल्लोळांनी  
काळीज काजळते, खरंच गं,  
तुझ्या ओढीने नयन दाटून येते....  
वात्सल्याचा कुठे उमाळा,  
तव हातांचा नसे जिव्हाळा....  
डोळ्यात वाचून भाव माझे,  
कसे तू सारे ओळखते,  
खरंच गं आई तुझी खूप आठवण येते....  
कसं सांगू तुला किती तू आठवतेस,  
आयुष्याच्या प्रत्येक वळणावर  
फक्त तूच दिसतेस...  
खरंच गं आई तुझी खूप आठवण येते!  
प्रा.करिष्मा सातपुते बी.बी.ए.(सी.ए.विभाग)

अशी कशी लेक, देवा माझ्या पोटी येते  
असे कसे वेगळे हे तिचे माझे नाते  
एक दिवस अचानक ती मोठी होऊन जाते  
बाबा तुम्ही दमला का? हळूच मला विचारते  
कळत नाही मला देवा असे कसे होते  
कधी जागा बदलून ती माझीच आई होते  
देव म्हणाला ऐक पोरी तुझे तिचे नाते  
विश्वाच्या ह्या साखळीची एक कडी असते  
तुझ्या दारी फुलण्यासाठी हे रोप दिले असते  
सावली आणि सुगंधाशी तर तुझेच नाते असते  
वाहत्या प्रवाहाला कोणी मुठीत का धरते?  
मार्ग आहे ज्याचा त्याचा पुढेच असते जायचे  
माझ्याकडून ती पहिलं अक्षर शिकते  
तिच्यासाठी सुद्धा मी रात्र रात्र जागतो  
कुशीत माझ्या झोपण्यासाठी ती गाल फुगवून बसते  
मी आणलेला फ्रॉक घालून घर भर नाचते  
माझ्यासाठी कपडे, चप्पल खाऊ घेऊन येते  
नव्या जगातील नवीन गोष्टी मलाच ती शिकवते  
तिच्या दूर जाण्याने कातर मी होतो  
हळूच हसून मला ती कुशी घेऊन बसते!

## लेक



प्रिया रेड्डी  
टी.वाय. बी.कॉम.

## कोरोना आणि माणूस

एका देशातून निर्माण झालेला कोरोना  
कधी सगळ्या जगात पसरला कळलंच नाही.  
आपल्याच माणसांमधली माणुसकी  
हरवलेली बघायला मिळाली  
आणि परकी माणसं जी ओळखीचीही नव्हती  
ती मदतीला धावून आली.  
डॉक्टर आणि मंत्र्यांचे  
जणु काही धंदेच सुरू झाले,  
माणसात जीव असतो  
हेच मुळी विसरून गेले.  
बघता बघता हसते-खेळते घर  
कोरोनाने रिकामे झाले,  
काय ते दुर्भाग्य की आपल्याच व्यक्तिला  
शेवटचे बघता ना आले..  
कुठेतरी माणसानी  
निसर्गाची केलेली हालअपेष्टा  
माणसाच्याच अंगी आली,  
केलेले कुकर्म फेडण्याची  
सुरूवात मात्र झाली.

श्वेता भांडवलकर -एफ.वाय.बी.कॉम.

## बापाला बघितलं आहे का?

मोठा झाल्यावर बापाला कधी  
मिठी मारून बघितलं आहे का?  
मारून बघा, हृदय स्थिर होऊन जाईल.  
मोठ्या झाल्यापासून कधी बापाला  
मुका घेऊन बघितला आहे का?  
घेऊन बघा,  
बापाची दाढी गालावर रूतल्यावर,  
बापापेक्षा अजुन छोटच आहे  
याची जाणीव होऊन जाईल.  
बापाची चप्पल होते म्हणून  
कोणी बाप होत नाही  
त्यासाठी आयुष्यभर  
दुय्यम स्थान घ्यावं लागतं,  
कधी घेऊन बघितलं आहे का  
दुय्यम स्थान?  
घेऊन बघा,  
बापाची किंमत कळून जाईल.  
बापाला बुढा, म्हातारा  
असं म्हणून बघितलं,  
साधू लोकांना बाबा म्हटल,  
कधी बापाला बाबा म्हणून  
बघितलं आहे का?  
म्हणून बघा,  
खऱ्या संताची ओळख होऊन जाईल.  
बापाचं घरावर नाव नाही,  
बापाचं हातावर नाव नाही,  
बापाचं छातीवर नाव नाही,  
बापाचं गाडीवर नाव नाही,  
स्वतःच्या घरात असूनदेखील तो परका,  
कधी परका होऊन बघितलं आहे का?  
होऊन बघा,  
बाप किती खंबीर आहे  
याची जाणीव होऊन जाईल.  
आईच प्रेम जास्त आणि बाबाचं कमी  
असं कधी नसतं.  
कधी सूर्य आणि चंद्र यांच्यातलं  
साम्य बघितलं आहे का?  
बघून घ्या! दोघेही प्रकाश देतात  
फक्त वेळा वेगवेगळ्या असतात.  
बाप फक्त पाया पडण्यापुरता नसतो,  
त्याला कधी निरखून बघितलं आहे का?  
निरखून बघा, सर्वात मोठा मित्र  
तुमच्यासमोर असतो.  
प्रेरणा शंभुदास -टी.वाय.बी.कॉम.

## कुणी नसतं कुणाचं...

आयुष्य आहे इथे  
खूप लोक भेटत असतात  
काही सोडून जातात तर  
काही जवळच असतात!

जीव लावतो त्यांना आपण  
तेच दगा देतात  
सुखापेक्षा ते आपल्याला  
दुखःच जास्त देतात!

कुठं आपलं चुकत हे  
मात्र कधीच कळतं नाही  
चूक तुझी आहे हे दाखवून  
पुढचा कधीच सोंरी म्हणत नाही!

असंच असतं ह्या जगामध्ये  
इथे स्वार्थापुरती नाती जपतात  
जिवंतपणी ओळख देत नाहीत  
मेल्यावर आठवणी जपतात!

आनंदात सगळे सामील होतात  
इथे सुखं सगळ्यांना हवी असतात  
संकट आलं की पळ काढतात  
तिथे ते कामात बिझी असतात!

करा स्वतःलाच इतकं खंबीर  
की नसेल गरज कुणाची  
शब्द आपले सोबती आणि  
कविता कुणाला कुणाची!

दुःख व्यक्त करण्यासाठी  
जीव देणे हा पर्याय नाही  
ज्यांच्यामुळे दुःखी झालात  
त्याला सांगा, गरज तुझी नाही

काय शोधावं, काय हरवावं  
इथे जगणं तरी कुणाचं  
स्वार्थी जग आहे इथे  
कुणीच नसतं कुणाचं  
कुणीच नसतं कुणाचं...

अभिषेक भोसले  
एम. कॉम.(II)

## शाळा



ड्युटीवरील खुर्चीपेक्षा

माझ्या शाळेचा बाकच बरा होता  
कामाच्या या व्यापापेक्षा

आमचा गृहपाठच बरा होता...  
कितीही असला नोकरीचा लळा  
तरी शाळेचा फळाच बरा होता...

वरिष्ठांच्या सततच्या टेंशनपेक्षा  
गुरूजींच्या छडीचा मार बरा होता...

मोबाईलवरील व्हॉट्सअप फेसबुकपेक्षा  
मैदानी खेळांचा थाटच मोठा होता...  
हरवलो आहे शहरात सुख मिळवण्यासाठी  
पण मित्रा आपला तो काळच बरा होता

साक्षी वहिले  
एफ.वाय. बी.कॉम.

## दिली एक... कन्या

बरं झालं देवा, दिली एक कन्या  
तिच्यामुळं मला कळली ही दुनिया  
तुरूतुरू चालताना बोलायचे पैजण  
शोभा आली घरा, तिनं फुलवलं अंगण  
बोबडे तिचे बोल, तिचे केस भुरूभुरू  
बाबा आनंदुन म्हणती, किती लाड करू ?  
वाढू लागली लेक, झाली माझी आई!  
काढू लागली चुका...म्हणे 'तुला कळत नाही'!  
घरभर फिरत असे, खूप तिची बडबड  
'मदत करते तुला' म्हणत करते किती गडबड!  
येता-जाता घरात मला मारत असते मिठी  
सदान्कदा नाव तिचेच माझ्यासुद्धा ओठी  
खरंच का ही लेक कधी जाईल मला सोडून ?  
नुसत्या विचारानीसुद्धा कंठ येतो दाटून!

अंजली कांबळे  
टी.वाय.बी.कॉम.



## कोरोना

कधी सरणार रण  
किती मरती अजून  
एका आजाराने माणूस  
कसा आलाय शरण!  
विसरले सुख दुःख  
लोकं विसरले भांडणं  
माणसातून कसे गेले  
माणुसकीचे कोंदण!  
आपल्या घरातच आपण  
कसे झालो नजरकैद  
नाही लग्नीसराई  
ना साजरे होई सण!  
कसे जगावे आता  
प्रश्न पडला गहन  
झाले महाग जीवन  
स्वस्त झाले हे मरण!  
काय करायचा पैसा  
काय कामाची श्रीमंती  
एका कोरोनाने केले  
कसे गर्वाचे हरण!  
बंद झाले खेडेगाव  
बंद झाले हे शहर  
एका कोरोनाला कसे  
जग आले हे शरण!  
\*\*\*  
पूजा घुंडरे  
एस.वाय.बी.कॉम.

## जीवनाची चारोळी

जीवन कसे पक्षांसारखे असावे  
कुठेही उडावे... कसेही जगावे  
मरताना देखील कधी कुणावर  
आपले ओझे न देता जावे!  
छोट्याशा या आयुष्यामध्ये  
खूप काही हवं असतं  
असंख्य चांदण्या भरून सुद्धा  
आपलं आभाळ रिकामंच असतं..!

दैवशाला डोंगरे  
एस.वाय.बी.कॉम.

## प्रेम प्रेम प्रेम

प्रेमावर कविता करायला  
कुणावरती तरी प्रेम करावे लागते.  
त्याला सांगितले नसले तरी  
मनातून प्रेम अनुभवावे लागते.  
त्याला भेटण्याची उत्सुकता  
त्याच्या नकळत अनुभवावी लागते.  
तो हो म्हणेल की नाही  
ह्या विचारात रात्र घालवावी लागते.  
त्याच्यासाठी गुलाब तोडताना  
काट्यानी घायाळ व्हावे लागते.  
इश्काची आग त्याच्या नकळत  
त्याच्या हृदयातही पेटवावी लागते.  
प्रेम आपले त्याच्यावर असले  
तरी त्याचे दुसऱ्यावर असू शकते  
आणि जर दुर्दैवाने तसे निघाले तर  
विरहगीत लिहायची तयारी लागते!

अश्विनी होले  
एस.वाय.बी.ए.



## आयुष्य

आयुष्यातले काही कळत नाही  
कधीकधी दिवाही शांत जळत नाही  
सावली देणारेच करतात करार उन्हाशी  
पाझरणारे डोळेच खेळतात जीवाशी  
सोबत असणारेच तसे दूर असतात,  
पाऊलवाटच गुरफटून टाकतात...  
वाऱ्याची तक्रार पानांना  
करता येत नसते,  
नियतीचे गणित कधी मांडता येत नसते  
आयुष्यातले तसे नसते काही बेतलेले,  
आयुष्य हे उत्तर प्रश्न ठाऊक नसलेले...!

पुनम शिरोडकर  
टी.वाय.बी.कॉम.

## यालाच प्रेम म्हणावं

प्रेम म्हणजे प्रेम म्हणजे  
नक्की काय असतं?  
आज काल होत तसं तर  
अजिबात नसतं!  
दोन शरीर नाही तर  
दोन भावना एकत्र येणं  
म्हणजेच तर प्रेम असतं...  
शरीराने येतात एकत्र पण मन मात्र  
एकाभोवती घुटमळत राहण यालाच  
कदाचित प्रेम म्हणाव...  
फक्त गोड-गोड, गुलु-गुलु करत बोलणं  
हे नाहीच प्रेम  
न बोलताही अंतरातलं  
समोरच्याला कळणं  
म्हणजेच तर प्रेम असतं...  
ज्यात नसतो कोणताच स्वार्थ,  
असतो फक्त आपलेपणा  
यालाच कदाचित प्रेम म्हणाव.  
आयुष्यातील अशी हक्काची जागा  
जिथे गेल्यावर न कळत दुःख विसरणे  
म्हणजेच तर प्रेम असतं  
दिसण, वागण, पैसा याच्याही पलिकडे  
जे गेलेलं असतं  
यालाच कदाचित प्रेम म्हणावं  
शहाणी माणसं म्हणतात प्रेमात पडू नये  
प्रेमात दुःख मिळतं हे माहीत असूनही  
दुःख सोसायला तयार असणं  
हेच तर खर प्रेम असतं  
नाही होऊ शकणार एकत्र कधी  
हे माहीत असूनही  
सतत तुलाच आठवण  
यालाच कदाचित प्रेम म्हणावं...  
मनाला समजावणं दुःखाला विसरणं  
फक्त तुझा हसरा चेहरा पाहत राहणं  
हेच खर तर प्रेम असतं  
सगळं माहीत असूनही जो म्हणतो,  
प्रेम केलंय, प्रेम करतोय, प्रेम करेल  
यालाच निखळ प्रेम म्हणावं....!

आकाश भडगावी  
टी.बाय.बी.कॉम.

## जगायचं असतं!



झालं गेलं दुःख वळून  
कधी बघायचं नसतं  
सुख शोधण्यासाठीच तर  
पुढे जगायचं असतं!  
दुःखाचा डोंगर असेल तर  
सुखाचा क्षण पण असतो  
सुखदुःखाचे कोठार  
फक्त एक मनच असते  
क्षणाचेचं जीवन बनवायचं असतं  
सुख शोधण्यासाठीच तर  
पुढे जगायचं असतं!  
दुःखाचा डोंगर असेल तर  
सुखाचा सागर पण असतो  
छोट्याशा डोंगराआड  
एक विशाल सागर असतो.  
डोंगर चढताना कधी हरायचं नसतं  
सुख शोधण्यासाठीच तर  
पुढे जगायचं असतं!  
थेंबाथेंबाचा सागर बनतो  
तर क्षणाक्षणाचा दिवस  
दिवसाचे मग वर्ष बनते  
तर वर्षांचेच आयुष्य  
क्षणाला कधी विसरायचं नसतं  
सुख शोधण्यासाठीच तर  
पुढे जगायचं असतं!

निकिता गावडे  
एस.वाय.बी.कॉम.

## आई बाबा

आईने बनवलं, बाबांनी घडवलं  
आईने शब्दांची ओळख करून दिली  
बाबांनी शब्दांचा अर्थ समजावला  
आईने विचार दिले,  
बाबांनी स्वातंत्र्य दिले  
आईने भक्ती शिकवली,  
बाबांनी वृत्ती शिकवली  
आईने लढण्यासाठी शक्ती दिली,  
बाबांनी जिंकण्यासाठी नीती दिली  
त्यांच्या परिश्रमामुळे यश  
माझ्या हाती आले!  
म्हणून तर माझी आज ओळख आहे!!

राधिका वहिले  
एस.वाय.बी.ए.

## नशीब



१. नशीब कोणी दुसरं लिहित नसतं  
ते आपल्याच हाती असतं  
येताना काही आणायचं नसतं  
जाताना काही न्यायचं नसतं  
मग हे आयुष्य तरी कोणासाठी  
जगायचं असतं खरंतर  
याच प्रश्नाचं उत्तर शोधण्यासाठी  
जन्माला यायचं असतं....!
२. आयुष्य फार अवघड शाळा आहे  
आपण कोणत्या वर्गात आहोत हे  
आपल्याला ठाऊक नसतं  
पुढची परीक्षा कोणती  
याची कल्पना नसते आणि  
कॉपी करता येत नाही कारण  
प्रत्येकाची प्रश्नपत्रिका  
ही वेगळी असते!  
\*\*\*  
योगिता गावडे  
एस.वाय.बी.कॉम.

## प्रेम

### कुणावर करावे



प्रेम कुणावर करावे?  
जो आपल्याला आवडतो त्याच्यावर,  
की ज्याला आपण आवडतो  
त्याच्यावर?  
प्रेम कुणावर करावे?  
मन वेधून घेणाऱ्या गुलाबावर,  
की त्याला जपणाऱ्या काट्यावर?  
प्रेम कुणावर करावे?  
जन्म घेतलेल्या मायभूमीवर  
की तिच्यासाठी प्राणार्पण  
करणाऱ्या जवानांवर?  
प्रेम कुणावर करावे?  
सुंदर दिसणाऱ्या वेलीवर  
की तिला आधार देणाऱ्या वृक्षावर?  
प्रेम कुणावर करावे?  
रंगबिरंगी फुलपाखरांवर  
की तिला बागडण्याची  
चेतना देणाऱ्या वाऱ्यावर?  
तुम्हीच सांगा....  
प्रेम कुणावर करावे?  
परवा भेटलेल्या मुलीवर  
की आयुष्यभर आपल्यावरून  
जीव ओवाळून टाकणाऱ्या  
आई-वडीलांवर..!

कांचन तुपे  
एस.वाय.बी.कॉम.

# मैत्रीचे नाते

माणसाने प्रेमात पडावेच असे काही नाही,  
पण प्रेमाहून जास्त, जणू मैत्रीत असे काही...  
प्रत्येकाला एक प्रेयसी असावीच असे काही नाही  
समजूतदार एक मैत्रीण अशी काही..  
रस्त्यावरून चालताना जिने हात धरावा असे काही नाही  
पण सोबत चालताना कधी साथ न सोडावी अशी काही...  
जिने मनातले सर्व काही सांगावेच असे काही नाही  
पण माझ्या मनातले नकळत जाणून घ्यावे अशी काही...  
जिला कॉफीसाठी विचारताच हो म्हणेलच असे काही नाही  
पण घरी नेवून सर्वासमोर कॉफी पाजावी अशी काही...  
तिला गिफ्ट देता तिने स्वीकारावेच असे काही नाही  
पण वाढदिवशी हक्काने मागणारी अशी काही...  
मला भेटण्यासाठी घरी थाप मारावीच असे काही नाही  
पण उशीर झाल्यास माझ्यासोबत होती  
असे सांगणारी अशी काही...  
जगात प्रेमाचे नाते म्हणजे सारे काही नसते असे काही नाही  
तर प्रेमाहूनही अधिक जपता येणारे  
जसे 'मैत्रीचे नाते' असे काही...!!

ज्ञानेश्वर गवळी  
एस.वाय.बी.ए.

## हे जग कोरोनाचे

कोरोना... कोरोना... कोरोना...  
म्हणतो हा बघा कसा... मुझसे सब डरोना;  
घरेच काय? गावं राष्ट्र, देश काय?  
यानं तर सगळे जगच हदरवले.  
महामारीचे याने सगळीकडे थैमानच मांडले!  
कित्येक चांगली माणसे हरपली  
कित्येक लेकरं-बाळं याने पोरकी केली  
हरले सगळे जग याच्यापुढे  
थकले सगळे डॉक्टर इथले,  
सांगतात एकच आता सगळे,  
एकमेकांपासून दूरच राहिलेलं बरे.  
घराबाहेर पडताना तोंडावर मास्क  
अन् हातावर सॅनिटायझरचे फवारे,  
नाही दुसरा पर्याय काही आता;  
घरात रहा आणि सेफ रहा.  
हेच भेटतात इशारे...

प्रतिभा शेळके  
टी.बाय.बी.कॉम.

## पंढरीची (कोरोना) वारी

पंढरीच्या विठुराया कसं काय रे बरंय का?  
यंदा वारी नाय म्हणे आ खरंय का?  
म्हणजे आम्ही यंदा रखुमाई आणि पांडुरंगाला पहायचं नाही  
अरे, लेकरांनीच कस आपल्या आई न् बापाकडे यायचं नाही  
नाय नाय आम्हांला काय अडचण नाही  
आम्ही डोळे झाकून घेतो  
अन् नुसतं श्रीहरी म्हणलं की तुझा चेहरा येतो  
पण विचार कर रे बाबा तुला खरंच जमलं का?  
अरे, पंढरीच गजबजली नाही तर तुझा जीव रमल का?  
पण पंढरीच्या विठुराया वारी नाही हे वाईटच झालं  
पण खरं सांगू यंदा तुझ दर्शन गावोगावी झालं  
अरे, तू होतास की रे दवाखान्यात असाच उभा ठाकलेला  
चंदनाचा लेप नाही पण पीपीई कीट घातलेला  
तू बंदोबस्तालाही होतास देवा खाकी वस्त्र घालून  
कचरासुद्धा उचललास की रे खाली मान घालून  
पंढरीच्या विठुराया किती धडपडलास रे  
एवढे सगळं करून पुन्हा सीमेवर पण लढलास की रे  
इतकं करतोस की, नाय देवा तुझं नाही चुकत रे  
युगे अष्टावीस उभा... पाय नाही का दुखत रे  
नाही येत बघ यंदा देवा तुला आराम देतो  
पण पुढच्या वर्षी तुला भेटायला वारी करून येतो  
पण तेव्हा मग गर्दीच्या मनात कसलीच भीती आणू नको  
अन् तुझ्या भक्तीशिवाय दुसरा कुठला संसर्गच ठेवू नको  
संसर्ग भक्तीचा आणि स्वच्छता त्या चंद्रभागेच्या स्नानाची  
अन् या सगळ्यांवर मग एकच लस ग्यानबा तुकाराम नामाची  
पंढरीच्या विठुराया पुढल्या वर्षी येतो मग  
पण तोवर तुझ्या भक्ताकडं असेच लक्ष ठेव बघ,  
असेच लक्ष ठेव बघ...!

ज्ञानेश्वर पागिरे  
टी.वाय.बी.कॉम.

## कोरोनाला इशारा

कोरोना तू आता आवरायला हवं  
जगानंही स्वतःला सावरायला हवं  
अरे बाबा! बघता बघता तू आख्ख वर्ष घेऊन गेलायंस  
अन् त्याबदल्यात फक्त नैराश्य दिलयंस  
अरे! या वर्षाच्या सुरूवातीला  
नवीन वर्षीच्या शुभेच्छांनी सगळ्यांचे इनबॉक्स भरले  
पण मार्चच्या अखेरीस तू मात्र सगळ्यांचं जगणंच डिलीट केले  
अरे वैताग आला तुझ्या या उद्धटपणाचा  
सांग कधी मार्ग मिळेल आम्हा नव्याने जगण्याचा  
अरे, दिसला असतास तर निधड्या छातीने लढलो असतो  
पण तू मात्र पाठीमागून वार करणाऱ्या शत्रूच्या गटात बसतो  
तुझ्या हाहाकाराने सगळी दुनिया हादरली  
ड्युटीवर डॉक्टर जाताना त्याची चिमुकलीही चिंतेने बिथरली  
अरे बाबा, दिवसभर काम करून संसाराचा गाडा चालतो  
अन् लॉकडाऊनच्या घोषणेनंतर इतभर भूकेच काय?  
हा प्रश्न मनाच्या अंतरात राक्षस बनून राहतो  
अरे, टीचभर आयुष्याच्या शर्यतीत तुझीच जास्त उंची  
दरवर्षी चंद्रभागेच्या तिरी माऊलीच्या गर्दीत विडल उभा राहीतो  
यावेळी पोलिसांच्या वर्दीत आम्ही आमचा विडल पाहिला

नम्रता ठाकुर  
टी.वाय.बी.कॉम.



## कोरोना विषाणू

कोण कुठला आला हा विषाणू  
जणू स्फोट व्हावा परमाणु  
गरगर फिरला जीवनाचा सुकाणू  
सांगा तरी काय करायचं  
बाहेर आहे लॉकडाऊन  
आणि घरी अस्तित्व गौण,  
त्यामुळे घडे सक्तीचे मौन,  
सांगा तरी काय करायचं  
कंपनीने दिलंय वर्क फ्रॉम होम  
पण त्यातच आहे खरी गोम  
नुसतेच कॉल्स, कामाच्या नावाने बोंब  
सांगा तरी काय करायचे  
म्हटलं जरा करावा व्यायाम,  
बोरिंग रुटीनला नवीन आयाम  
गाळू दररोज बादलीभर घाम  
घामच माहित नाही पण  
वेळ बराच जातोय  
वाढू नये वजन म्हणून  
दोनच टाईम खातोय।  
तरी तो शनिरूपी काटा,  
ऐंशीच्या घरातच राहतोय!  
सांगा तरी काय करायचं  
टाळ्या थाळ्या वाजवल्या  
दिवे पण झाले लावून,  
नेक्स्ट टास्कची वाट पाहत  
बातम्या झाल्या साऱ्या पाहून,  
चिडून लाखोली अपशब्दांची  
चीन निजला आकंठ न्हाऊन,  
सांगा तरी काय करायचं?  
परंतु जरी वाटे आहेत का  
उलीस आपलं बराबरं आहे,  
बाहेर पडणारे डॉक्टर आणि पोलीस  
हेच रियल हिरो-एवढं खरं आहे!  
ह्यावर मात्र हे नाही विचारायचं  
की सांगा तरी काय करायचं,  
आता फक्त एकच करायच की  
येईना का फ्रस्ट्रेशन,  
आपण फक्त घरातच राहायचं  
आपण फक्त घरातच राहायचं!!

तन्वी कुन्हाडे  
एस.वाय.बी.कॉम.

## कोरोनाबरोबर युद्ध

चिनने पाठवली कसली लहर  
भारतात आली भीतीची कहर  
भीतीने केलयं मनात घर  
देशावर कसलं हे संकट आलय  
पण मोदीजीकडे बघून त्याच रूपांतर  
आशेच्या किरणात झालंय  
गमती करणं सोडा मित्रांनो  
मेमेज काढणं फार सोपं आहे  
जीवावर बेतली की कळेल  
कोरोना म्हणजे काय धोका आहे  
मस्करी नसून हा विषय फार गंभीर आहे  
कारण भारतीयांनी सोडला आपला धीर आहे  
पोलीस, डॉक्टर, नर्स जणू काही देवदूत आहेत  
ज्यांच्यामुळे भारताला मिळाले जीवनाचे अमृत आहे  
पण भारतीयांना कोणतेही संकट भारी नाही  
कारण इथे "Unity in diversity" आहे!  
So guys respect our nature  
Because we are also one of it's creature.  
तुषार टाले - एम.कॉम.॥



## कोरोनाच्या राज्यात

कोणीच दिसेनासे झाले, महाराष्ट्रात या  
कोरोनाच्या विळख्यात, अडकली दुनिया;  
दोन शब्द बोलणे झाले आता मुश्किल  
सर्वांच्या हाती आज कोरोनाचेच कंदिल  
अश्रू गाळावे तेही घरी बसल्या बसल्या  
स्वप्न रंगवावे, लॉकडाऊनच्या पिंजऱ्यात असल्या  
जात नाही घशाखाली घास, बातम्या पाहिल्याशिवाय  
सज्ज राहतो एक योद्धा, कुठल्याही स्वार्थाशिवाय  
वाटले पहिल्यांदा आभार मानावे त्याचे,  
कारण परीक्षाच नाय  
ते झालेच रे  
पण करोडोंच्या जीवांचं काय?  
जगामध्ये झाली सुरू आता राणनीती  
जो घरी, त्याचीच झळकेल कीर्ती  
दिवस थोडे, होईल आता बाप्पाचे आगमन,  
गर्दीत नाचल्याशिवाय भरेल का आमचे मन?  
जीवघेण्या प्रवासाचे चालले होते वर्षापासून प्रयोग  
सुटेल सावट त्याचे, येईल चांगला योग,  
भविष्यासाठी पुढे करूया, गरजूंना आपले मदतीचे हात,  
हसेल पृथ्वीमाता, जर असेल भारतियांची साथ  
विजय आपलाच, करू कोरोनावर मात!!

तेजल चव्हाण  
एफ.वाय.बी.ए.

## कोरोना

ठेवा स्वच्छता आणि घाबरू नका ना!  
विनाकामी कोठेही कधीही फिरू नका ना!  
सद्यस्थितीत सुरक्षा हेच आपले प्रथम कार्य  
मग कसा पसरू शकेल कोरोना ना?  
कोरोनाची लक्षणे दिसून आल्यास  
स्वतः आपली तपासणी करून घ्या ना?  
न घाबरता हीच सूचना कुटुंबीय व शेजारी यांना द्या  
आज संपूर्ण विश्व परिस्थितीशी तोंड देत आहे  
मग आपले आपसातील भांडणतंटे विसरणार ना?  
महामारी प्राण घेती अचानक  
विना माहिती मरण पत्करू नका ना?  
कळत नकळत झाला जरी स्पर्श कोणाचा  
तात्काळ उपाय करून घ्या ना?  
घ्या काळजी एकमेकां सहाय्य करा  
आपले कुटुंब आपली जबाबदारी समजा ना?  
गणेश रेड्डी  
एफ.वाय.बी.कॉम.



## माय लेक

लेक वाचली वाढली, तर माणूस जगलं।  
बाई बोलली चालली, नवा दिस उगवलं।।  
लेक बापाची लाडकी, जशी दुधावर साय।  
लेक होई बापासाठी, पुन्हा लेकराची माय।।  
बाई कष्टे राबते, तेव्हा भाकर फुगते।  
माय होवूनी जगाची, नवी वाट दाखविते।।  
बाई संसाराचा पाया, बाई सृष्टीचं सपान।  
बाई घराची लक्ष्मी, बाई प्रेमाची तहान।।  
आई शिवाय कुणाचा, जन्म झाला का सांगावा।  
जन्म मुलीला घरात, तेव्हा कशाला दुरावा।।  
तिच्या हातात लक्ष्मी, तीच सरस्वती खरी।  
नको गर्भातच सुरी, आता लेकीला वाचवा।।  
नख लावू नको जीवा, नारी पोटी जन्मे नर।  
मग वंशाचा तो दिवा, जीनं करी तो बेकार ।।  
आई तुझ्या कुशीमध्ये, मला सावली भेटली।  
लेक जन्माला येताना, माया का गं आटली।।  
तिच्या पायात लक्ष्मी आणि उरात शारदा।  
तिला वाचवा वाचवा, हवा कशाला कायदा?

प्रिया झाल्ते  
टी.वाय.बी.ए.

## सुंदर विचार

\* आयुष्यातील सगळ्यात मोठा गुन्हा आपल्यामुळे  
एखाद्याच्या डोळ्यात पाणी येणे आणि आयुष्यातील  
सगळ्यात मोठे यश आपल्यासाठी एखाद्याच्या डोळ्यात  
पाणी येणे.  
\* जगण्यातील मजा वाढविण्याचे उपाय पटलं तर असे वागा.  
जिथे राहता त्या कॉलनीत चार तरी कुटुंब जोडा. अहंकार जर  
असेल तर खरंच लवकर सोडा. जाणं येणं वाढलं की  
आपोआप प्रेम वाढेल. गप्पांच्या मैफिलीत दुःखाचा विसर  
पडेल.  
मनिषा गरगंटे  
एस.वाय.बी.कॉम.





आयुष्याच्या वाटेवर चालताना  
सुख-दुःखाच्या ठेचा लागल्या  
म्हणून थांबायच नसतं  
उलट रक्ताळलेल्या पायांनीच  
आयुष्याच्या पैलतिरी जायचं असतं  
अहो, नशीब मात्र कुणीच कोणाचं  
लिहिलेलं नसतं,  
म्हणून तर स्वतःच आयुष्य  
स्वतःलाच घडवायच असतं  
सुख-दुःखं येत असतात  
म्हणून खचून जायचं नसतं  
भट्टीतून निघालेल्या सोन्यासारखं  
झळाळून निघायचं असतं!

प्रतिक्षा बवले

एस.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)

## हवं तसं

तू हस ना तर ते जळतील,  
तू रड ना तर ते हसतील,  
काही नवं केलं तर पाप म्हणतील,  
जून्यात अडकलं तर शाप म्हणतील,  
गमावलं तर दळिंद्री म्हणतील,  
कमावलं तर माज म्हणतील,  
पुढे निघाला तर मागे ओढतील,  
मागे राहिला तर तुडवतील,  
स्वतःचा विचार केला तर स्वार्थ म्हणतील,  
त्यांचं कौतुक केलं तर वाहं म्हणतील,  
काही केलं तर.... काय केलं म्हणतील,  
नाही केलं तरी.... काय केलं म्हणतील,  
म्हणून  
तू जग तुला हवं तसं... जगाच काय?  
ते काहीही म्हणतील....

वैष्णवी पाटील

एम.ए.1 इंग्रजी

## ध्येय

जी माणसं ध्येयाकडे  
नजर ठेवून वाटचाल करतात,  
ती सतत धडपडत असतात,  
लोकांच्या दृष्टीने ती धड नसतात  
कारण ती नेहमी पडत असतात.  
पण खर म्हणजे, ती पडत नसतात  
तर पडता पडता, घडत असतात  
त्यामुळे पडत जा... घडत जा  
यशाची प्रत्येक पायरी  
दिमाखात चढत जा  
तेव्हा एक दिवस ती व्यक्ती  
आपले ध्येय गाठते....!

ऋतुजा संगवे

टी.वाय.बी.ए.



## लढाई

फुलाने अपेक्षा केली का,  
कधी काट्याकडून आधाराची?  
जमिनीने कधी वाट पाहिली का,  
आभाळाच्या सावलीची?  
किनाऱ्याला वाटली का,  
कधी भीती समुद्राच्या पाण्याची?  
कधी वान्याने संगत धरली का,  
शेवटच्या पाचोळ्याची?  
अशीच लढाई आहे हो,  
आपल्या एका जीवनाची,  
एकएकट्यानेच लहून  
आहे ती जिंकायची...!

ऋतुजा संगवे

टी.वाय.बी.ए.

## काय रे... कोरोना

काय रे कोरोना, असं तू का केलं  
गरिबांचे जीवन उद्ध्वस्त करून का ठेवलं  
संपूर्ण वर्ष तू लोकांना नुकसानीत टाकलं  
तरीही तुझं मन नाही भरलं  
काय रे कोरोना, असं तू का केलं  
वर्षाच्या अखेरीस माणसाने  
नवीन पहाटेचा विचार केला  
परंतु तू तेही घेऊन गेला....  
वैताग आला तुझ्या वागण्यातून  
सांग तू जाणार कधी जगातून  
काय रे कोरोना, असं तू का केलं  
अरे रोज कामावर जाताना  
एकच आस राहते मनात  
सुखरूप पोहचेल का घरी,  
छोटी पिढे आहेत अंगणात  
दिवसभर काम करून  
दोन वेळच जेवण असे मिळत,  
अरे तुझ्या या स्वभावामुळे  
आम्हाला नाही काहीच कळतं  
काय रे कोरोना, असं तू का केलं  
अरे दिसला असता तर  
जीव जाईपर्यंत लढला असता,  
पण तू मात्र पाठीमागून  
वार करणाऱ्या शत्रूत बसला  
तुझ्या हाहाकाराने  
सगळी दुनिया हादरली  
गरीब-श्रीमंत सगळी  
दुनिया बिथरली  
काय रे कोरोना, असं तू का केलंस  
क्षमायाचना झाली करून आता,  
सांग तू काय करू मी दाता  
कधी जाणार तू सोडून या विश्वाला,  
कधी आस लागणार आमच्या या मनाला  
काय रे कोरोना, असं तू का केलं  
थकलो रे आता तुझ्या या वागण्यावरून  
तुझ संकट कधी उठणार या जगावरून  
काय रे कोरोना, असं तू का केलं...  
काय रे कोरोना, असं तू का केलं...!!

वैष्णवी घोरपडे

एफ.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)



## माणूस कधी शिकल ?

मरण झालंय सोपं,  
इथ कठिण झालंय जगणं,  
माणूस कधी शिकल देवा,  
माणसासारखं वागणं!  
देशात मेला, राज्यात मेला,  
बाजूचा पण मरतोय  
तरीबी हा कारण शोधून,  
घरा बाहेर पडतोय!  
पोलिसाला आवडत व्हयं  
तुला असं मारणं  
माणूस कधी शिकलं देवा,  
माणसासारखं वागणं!  
कित्येक जण मरून गेलं  
या कोरोनापायी  
राजा समजून मज्जा करतोय  
याला समजत कसं नाही  
अरे! डॉक्टर, सिस्टरला,  
मुश्किल झालयं घरच्यांना बघणं  
माणूस कधी शिकलं देवा,  
माणसासारखं वागणं!!  
हा सांगतोय, तो सांगतोय  
अरे, बाबा घरात थांब,  
लागणं लागली तर तुला बी  
जाशील एवढा लांब!!  
घरच्यांना बी मुश्किल होईल  
तुला शेवटचं बघणं,  
माणूस कधी शिकलं देवा,  
माणसासारखं वागणं.  
हात धुणं, मास्क लावणं  
शिकून घे लेका सध्या  
एवढे नियम पाळणं  
तुझ्यामुळे दुसऱ्याचं नको ना  
करू मुश्किल जगणं!

दिव्या गरूड  
एफ.वाय.बी.कॉम.

## माझे कॉलेज



शरदचंद्र पवार कॉलेज  
आहे पंचक्रोशीची शान  
यासारखा नाही, कुणाला मान  
यातील शिक्षक आहेत महान  
यामध्ये शिकतात मुले छान छान  
प्राचार्यांचा आहे एकच ध्यास  
विद्यार्थ्यांना यश मिळावे खास  
सर्व शिक्षकांची आहे  
हीच एक आस  
सर्व विद्यार्थ्यांनी व्हावे  
चांगल्या गुणांनी पास!!

वैशाली जाधव  
टी.वाय.बी.ए.

## ऑनलाईन

जग सर्व ऑनलाईन झालं तरी  
काही नाती ऑनलाईन नाही ठेवता येत  
भेटीची आतुरता असते  
आशीर्वादासाठी डोक्यावर हात हवा असतो  
नमस्कारासाठी इमोजीचे हात नाही तर,  
डोके पायावर, नतमस्तक व्हावे लागते  
बाप स्वर्गवासी होतो  
मुलगी व्हिडीओद्वारे अंत्यविधी बघते  
तिला कुठे बापाची उणीव जाणवते  
डोळ्यात आलेले पाणी  
बावळट इमोजीमधून दाखवणे  
डोळे पुसणारे हात मायेचा पाझर  
यांसारखे सुख कुठे लाभते  
खरंच या ऑनलाईनच्या दुनियेत  
नात्यांची मात्र कोंडी होऊन जाते!!

लक्ष्मी रेचे  
एम.ए. 1

## माझं अस्तित्व



आई बाबा तुम्हांला सांगते  
तुमचा नक्की विश्वास बसेल,  
खरंच माझं अस्तित्व तुम्हाला  
आनंद देणारं असेल!!१॥  
फार त्रास नाही देणार  
तुम्ही निश्चिंत रहा  
या चिमुकलीला एक संधी  
देऊन तर बघा!  
असू द्या तुमची कितीही दौलत  
ती मुलीशिवाय व्यर्थ आहे  
मुलगा असेल शब्द जरी  
मुलगी त्यातला अर्थ आहे  
मी रूसून बसेन कधी  
कधी खुदकन गाली हसेल!!१॥  
माझ्या बोबड्या बोलांनी सर्वांना  
आपलंस करून टाकेन  
चिमुकल्या पावलांनी चालताना  
दुध भात चाखेन  
भातुकलीच्या खेळामध्ये  
होऊन जाईल गुंग  
देत राहिल जगाला  
आपुलकीचा रंग  
या अयोध्येच्या अथांग सागराला  
कधी किनारा नसेल!!२॥  
खूप मेहनत करेन मी  
कधीच मागे सरणार नाही  
शिकून होईल मोठी तुम्हांला  
चिंता हुंड्याची लावणार नाही  
वंशाची मी पणती होईल  
दोन्ही घरी प्रकाश देईल  
लग्नादिवशी तुमची चिमुकली  
क्षणात परकी होऊन जाईल  
मी सासरी जाताना तुमच्या  
अश्रूंना बांध मात्र नसेल!!३॥

शिवानी इंगोले  
एस.वाय.बी.कॉम.

## कोरोनाला हरवा

मनामध्ये सर्वांनी ठरवा  
कोरोनाला आहे तिथेच हरवा  
आपले अंगण स्वच्छ सारवा  
आणि कोरोनाला हरवा!

त्या झाडावरून ओरडत आहे  
कोरोनाचा पारवा  
त्याची शिकार करायची ठरवा  
लॉकडाऊनमध्ये गोरगरिबांना  
पोटभर घास भरवा  
पण कोरोनाला जरूर हरवा!

जास्त करू नका घरामध्ये गारवा  
आणि घराच्या बाहेर काढू नका  
उगीच गर्दीचा कालवा  
म्हणूनच म्हणतो कोरोनाला हरवा  
कोरोनाला हरवा!

अमोल कोथाळकर  
तृतीय वर्ष बी.कॉम.

## Thank you Goggle

कोणीच सोबत नसताना ...  
तू साथ असताना ...  
पेपर झाले मस्ताना...!!

कोरोनाच्या काळात  
गेलो अश्मयुगात  
तुझ्याचमुळे कळली news  
काय सुरू आहे जगात.  
म्हणून राहिलो ह्या जगात!.

दिवसाच्या सुरवातीला तू  
आणि शेवटला ही तूच  
नाशत्याला instagram  
जेवताना YouTube  
झोपताना web series....

तुझ्याच मुळे शक्य झाले  
कोरोना काळातील वनवास  
म्हणून धन्यवाद...

स्नेहल भोईर  
टी.वाय.बी.बी.ए. (सी.ए.)

## कोरोनाशी युद्ध

कुठला आला हा विषाणू,  
जणू स्फोट व्हावा परमाणू,  
गरगर फिरला जीवनाचा सुकाणू,  
सांगा तरी काय करायचं?  
बाहेर आहे लॉकडाऊन,  
आणि घरी अस्तित्व गौण,  
त्यामुळे घडे सक्तीचे मौन,  
सांगा तरी काय करायचं?  
कंपनीने दिलंय वर्क फ्रॉम होम,  
पण त्यातच आहे खरी गोम,  
नुसतेच कॉल्स-कामाच्या नावाने बॉब,  
सांगा तरी काय करायचं?

म्हटलं जरा करावा व्यायाम,  
बोरिंग रुटीनला नवीन आयाम,  
गाळू दररोज बादलीभर घाम  
कामाचं माहीत नाही!  
पण वेळ बराच जातोय!

वाढू नये वजन,  
म्हणून दोनच टाईम खातोय  
तरी तो शनिरूपी काटा,  
ऐंशीच्या घरातच राहतोय!  
सांगा तरी काय करायचं?

टाळ्या थाळ्या वाजवल्या,  
दिवे झाले लावून...  
नेक्स्ट टास्कची वाट पाहत,  
बातम्या झाल्या सान्या पाहून  
चिडून लाखोली अपशब्दांची,  
चीन निघाला आकंठ न्हाऊन  
सांगा तरी काय करायचं?

जरी वाटे आहोत का ओलीस,  
आपलं जरा बरं आहे  
बाहेर पडणारे डॉक्टर, पोलीस,  
हेच रियल हिरोज हे खरं आहे!  
ह्यावर मात्र हे नाही विचारायचं,  
सांगा तरी काय करायचं?

आता फक्त एकच करायचं,  
की येईना का फ्रस्ट्रेशन  
आपण फक्त घरातच राहायचं  
आपण फक्त घरातच राहायचं!!  
बळवंत मोरे -  
एम.कॉम. II

## ऑनलाईन शाळा

फळा आणि खडू  
लागेल आता रडू  
विचार आहे प्रश्न  
शाळा कधी सुरु?

छम छम छडीचा  
लागला नाही धाक  
ढींगभर सुट्टी आणि  
परीक्षाही माफ!

Digital फळ्यावर  
Online शाळा  
Google वर हजेरी  
You tube चा लळा!

आता वाजेल का घंटा  
शिजेल का खिचडी  
लक्षात तरी राहिल का  
इयत्ता आणि तुकडी?

गोपाल घुगे  
एस.वाय.बी.ए.

## आई



आईची असते कोमल माया  
लेकरावर सदा तिची छाया  
आईमुळे निर्माण झालं राष्ट्र  
तीच घेते सर्वाधिक कष्ट  
आई आहे एक पवित्र नातं  
म्हणून जग तिचा महिमा गातं  
आई कधीही न तुटणार नातं  
लेकरासाठी ते कष्ट झेलतं राहतं  
आई जगाची मोठी शक्ती  
म्हणून जग करत तिची खरी भक्ती  
आई आहे देवाचं वरदान  
म्हणून जग देतो तिलाच मान!

शितल काकडे  
टी.वाय.बी.ए.

# शब्दबूँद

आसमान से छलक कर धरती पर आनेवाली बारिश की बूँदे सृष्टी को मनभावन कर जाती है। चारो ओर हरियाली और सुहावना मौसम छा जाता है। जब यही बूँदे अपने मन में समा जाती है तो भीतर की भावना शब्दों से छलकती है।

ऐसे ही छात्रद्वारा बरसी शब्दबूँदों की यह बारिश



(हिंदी विभाग)



## जिंदगी और कोरोना

नमस्ते!!! आशा करता हूँ आप सब अपने पूरे परिवार सह स्वस्थ और सुरक्षित होंगे। ये सवाल कुछ ज्यादा ही मायने रखने लगा २०२० के बाद से।

सब कुछ बहुत सही चल रहा था जीवन, नौकरी, परिवार और दोस्त, आनंद आदि, पर अचानक से कोविड १९ एक वायरस आया और हम सबको अपने - अपने घर में कैद कर दिया। कभी सोचा भी नहीं था के इतना सारा समय हमें अपने परिवार के साथ बिताने को मिलेगा और हमें सच में अपने परिवार का अपने जीवन में महत्त्व पता चलेगा। वरना हम तो मस्त जी रहे थे अपनी ही दुनिया में, मोबाइल की दुनिया में, मोबाइल; एफबी की तरह आभासी जीवन; इंस्टा; ट्वाटर आदि। कभी किसी से व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले बस। वस्तुतः जानते थे एफबी और अन्य प्लेटफॉर्म पर!! पर देखो आज कोई नहीं है यहा, बस अपने और जो आस पास है वही भाग रहे हैं मदद के लिए। कुछ या काफ़ी अनजान लोग बहुत सारी मदद भी कर रहे हैं इसी वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर, जिसका अर्थ है की हम किस चिज का इस्तेमाल कैसे करना चाहते हैं ये हम पर निर्भर करता है।

हम चाहे तो इस प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल सही तरिके से सही काम के लिए भी कर सकते हैं, या फिर नफरत या गलत संचार फैलाने के लिए।

पर क्या सच में बस यही है असली दुनिया या इससे परे भी कुछ है, शायद है और कोविड१९ ने हमें वही सिखाया।

शायद ही कभी हमने एक पेड़ लगाया हो ऑक्सीजन के लिए या पर्यावरण के लिए, और देखो आज हवा खरीदनी पड़ी है। है न कमाल की बात। कुछ सालो बाद पानी का भी यही हाल होने वाला है, यदी हमने समय रहते उसका सही इस्तेमाल नहीं किया या करना सिखा तो।

जब सब कुछ अच्छा था तब हमने अपने शौक पूरे करने के लिए बैंक से लोन लिया और वास्तविक सुखो का मजा लिया, और जीने के लिए जो चाहिए सच में उसे ही भूल गए, और देखो आज उसने हमें कहा लाकर खड़ा कर दिया।

लॉकडाउन सभी के लिए आरामदाई नहीं था और ना ही होगा।

बहुत लोगो की जाने गई, बहुत बेघर हुए, बहुत अधिक लोगों को काम से हाथ धोना पड़ा, अब तो पेमेंट भी आधा आने के वजह से अपनी जमा पूंजी खतम होने लगी है, बैंक के ईएमआई चुकाते चुकाते, जो लोन हमने अपने वास्तविक सुखो उपभोगने के लिए लिया था उसके कारण।

अब ईएमआई के लिए या कह सकते हैं जिन चिजो का हमने इस्तेमाल किया जरूरत न होते हुए भी लोन लेकर, उस की ईएमआई चुकानी पड रही है। मगर जॉब तो अब रही नहीं इसी वजह से काफ़ी लोग आत्महत्या कर रहे हैं और कुछ ऐसा ही करने का सोच रहे हैं।

काफ़ी संगीन सा है पर सत्य है, हमें इन सब के बारे में सोचना चाहिए। बस एक कोविड१९ ने हम जीने के लिए क्या जरूरी है ये सिखा दिया, पर क्या अब भी हम इन सब से कुछ सिख पाएंगे या फिर से वही वापिस लौट जाएंगे अपनी आभासी दुनिया में? ये एक सवाल सा है जिसका जवाब हम सबको ढूढ़ना होगा।

स्कूल और कॉलेज बंद है, सभी छात्रों के भविष्य का क्या? क्या ऑनलाइन अध्ययन का इतना असर होगा उनपर? क्या ये बीते हुए साल हम उने वापस दे पाएंगे? क्या सच में हम समय से कुछ सिख पाएंगे, क्या अब हम अपने प्रकृति का मोल समझेंगे?

या बस हम अपनी ही दुनिया में अपने लिए जैसे पहले हुआ करते थे वैसा ही जीते चले जाएंगे? ये एक सवाल सा है जो बस हर दिन मुझे सताए जाता है। अभी तो शायद कोविड१९ से भी ज्यादा असरदार कोई और बीमार आएगी, तब हम क्या करेंगे? ये एक सवाल है और हम सबको मिलकर इसका जवाब ढूढ़ना है, ताकी आने वाली हमारी नस्ले हम से ये सवाल ना करे की हमने उनके लिए कुछ क्यों नहीं किया?

तो चले हम सब मिलकर आज और अभी से ही इन सवालो के जवाब ढूढ़ने में लग जाते हैं और आने वाले कल को आज से बेहतर और बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं।

दिनेश उकाते

एफ.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)



कोरोना वायरस एक सूक्ष्म और जानलेवा वायरस है। इसे पुरे विश्व में कोविड १९ के नाम से भी जाना जाता है। कोरोना वायरस यह एक संक्रमित बिमारी है। इससे इन्सान किसी भी कोरोना संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से वायरस तेजी से फैल जाता है। कोरोना वायरस का संक्रमण सबसे पहले दिसम्बर २०१९ में चीन के वुहान शहर के एक लॅब में हुआ था। धीरे-धीरे कोरोना वायरस तेजी से पुरी दुनिया में फैल गया। इसके चलते मार्च २०२० विश्व स्वास्थ्य संगठनने कोरोना को वैश्विक महामारी घोषित कर दिया है।

कोरोना वायरस एक नये प्रकार का विषाणू है। जिसके संक्रमण से मरीज को खाँसी, जुकाम और बुखार जैसे लक्षण देखने को मिलते है। अगर यह संक्रमण गले से होता हुआ फेफडों तक पहुंच गया, तो बीमार व्यक्ति की जान भी जा सकती है। इसकी कोई दवाई या वैक्सीन ना होने के कारण यह महामारी पुरे विश्व में फैल चुकी थी। इस कोरोना महामारी के चलते कितने हसते खेलते परिवार बिखर चुके थे। जब तक इस महामारी का कोई इलाज नहीं निकल आता, तब तक इससे सिर्फ खुद की सावधानी जैसे कि मास्क पहनना, सॅनिटाइझर का इस्तेमाल आदि से ही बचा जा सकता है। कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के लिए भारत सरकारद्वारा लॉकडाऊन पुरे जिल्हा, शहरों में लगाया गया था।

भारत के प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदीजी ने साल २०२० में कोरोना वायरस के कारण फैली वैश्विक महामारी से लडने हेतु “दो गज की दुरी और माक्स पहनेना है बहुत जरूरी” यह स्लोगन सुरक्षा कवच के रूप में बीमारी से बचने के लिए भारत की जनता को दिया था। हमें बिमारी से लडना है, बिमार से नहीं। यह समय जात-पात का भेद-भाव का नहीं। बल्की यह समय एक दूसरे की मदद करने का है। देशवासियों डरो नहीं, डटकर सामना करो, कोरोना को मिलकर हरार्येंगे।

“कोरोना हारेगा । इंडिया जीतेगा।”

उन्नती खोंड

एस.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)

## कोरोना पर भारतवासियों का ऐलान

सुन लो कोरोना, जान लो कोरोना..  
तु मरेगा, तु मिटेगा तुम्हे तुम्हारे पापों का  
दंड अवश्य मिलेगा।  
तुमने देश रोका, तुमने दुनिया रोकी  
जहाज, विमान के साथ तुमने  
रेल को भी रोका।  
स्कूल, कॉलेज और युनिवर्सिटी में  
रुक गयी पढाई

शिक्षक विद्यार्थी एवं शिक्षा-विदों पर  
तुम्हे जरा भी दया नहीं आयी  
तू मरेगा, तू मिटेगा तुम्हे तुम्हारे पापों का  
दंड अवश्य मिलेगा..

तू क्या समझता है, तू सर्वशक्तीमान है,  
तेरा कभी नहीं सत्यानाश होगा  
अरे हमने तो प्लेग, हैजा,  
कॉलरा, मलेरिया तथा पोलिओ को  
पराजित किया,  
तो तुम किस खेत की मुली है।  
जो तू नहीं होगा पराजित।

तुने संक्रमण फैलाया  
हमने लॉकडाऊन लगाया  
और सॅनटाईझिंग कराया,  
तुने कोरोना मरिज का आकडा बढ़ाया  
हमने कॉरनटाईन का दायरा बढ़ाया  
तुने मौत का तांडव मचाया,  
हमने उपचार का तरिका सुझाया।  
कर लो जितना करना है अत्याचार,  
हमारे डॉक्टर, नर्सस और मेडिकल स्टाफ  
करते रहेंगे कोरोना मरिजों का उपचार  
न रुकेंगे, न थकेंगे लॉकडाऊन का विस्तार करेंगे,  
तुम्हारी मौत का इंतजार करेंगे।  
अब भी यदी तुम्हारे अंदर थोडी सी भी  
इंसानियत बची है तो जहाँ से आए वही चले जाओ।  
हमे चैन से रहने दो, और जिने दो।  
तुम्हे तो सभी बच्चे और बुजुर्गों की  
बदुआ लगेगी और सजा भी मिलेगी।  
क्योंकी तू एक दिन अवश्य मरेगा।  
कोरोना तेरे पापों का दंड तुझे अवश्य मिलेगा।

मुकेश चव्हाण  
एफ.वाय.बी.ए.

## शहीद का संदेश

प्रियतम किसी का था।  
किसी की आँखों का तारा।  
नन्ही सी उंगलियों का था।  
मैं ही तो सहारा।

प्यारे से बहन का भाई था दुलारा।  
जिंदगी की जंग मैं पुलवामा में हारा।  
कह दो मेरे भाई से कि सेना में वो जाये।  
और दुश्मनो के सीने पे गोली वो चलाये।  
दोहराये न दुश्मन कभी घटना ये दोबारा।  
जिंदगी की जंग मैं पुलवामा में हारा।  
जाके कहो माँ से, हिम्मत न तुम खोना।  
पोते को लेकर गोद में बिल्कुल नहीं रोना।  
माँ बदला तेरे लाल का, भाई मेरे लेंगे।  
आतंकवादियों को चैन से सोने नहीं देंगे।  
इन कायरों के आगे तुम झुकना नहीं कभी,  
कर्तव्यपथ में हार कर रुकना नहीं कभी।  
छिना है जिसने लाल ये प्यारासा तुम्हारा।  
जिंदगी की जंग मैं पुलवामा में हारा।

आकाश भडगावी  
टी.वाय.बी.कॉम.



अदृश्य कोरोना  
छुपा हुआ है तू, ऐ अदृश्य कोरोना।  
जिद है तेरी हमे मिटाने की।  
तो ये हमने भी मन में है ठाना।  
एक उंगली भी न उठेगी।  
पर विजय तुझपर है पाना।  
न तीर न तलवार न निकलेंगे बाहर  
तेरे सामने भी न आएंगे,  
लेकिन करेंगे तेरा उद्धार।  
कर के तेरा अनछुआ अभिषेक।  
सुरक्षित करेंगे, ये संसार-ये देश।

छाया आरण  
एम.कॉम II

## जीवन की सच्ची बातें

मुस्कराकर देखो तो  
सारा जहाँ रंगीन है,  
वरना भीगी पलकों से तो  
आयना भी धुंधलासा दिखता है।

क्यों बनूं मैं किसी और के जैसा  
जमाने में जब मुझसा कोई नहीं।

जो अच्छा लगता है।  
उसे गौर से मत देखो  
ऐसा न हो, कोई बुराई निकल आए।  
जो बुरा लगता है। उसे गौर से देखो  
मुमकीन है, कोई अच्छाई  
नजर आ जाए।

मुस्कराहट एक दुवा है।  
दिया किजिए लिया किजिए।

शब्द शब्द बहु अंतरा,  
शब्द के हाथ न पाँव।  
एक शब्द करे औषधी,  
एक शब्द करे घाव।

शब्द सम्भाले बोलिए,  
शब्द खींचते ध्यान।  
शब्द मन घायल करे,  
शब्द बढ़ाते मान।

शब्द मुँह से छुट गया,  
शब्द न वापस आए।  
शब्द जो हो प्यार भरा,  
शब्द ही मन में समाए।

अगर आप सही हो तो  
कुछ भी साबित करने कि  
कोशिश मत करो।  
बस सही बने रहो...  
गवाही वक्त खुद दे देगा।

सुप्रिया यादव  
एफ.वाय.बी.कॉम.

## भारतीय सेना

माँ तुमसे मिलने आया था,  
कुछ पल साथ बिताने को  
कुछ खुशियाँ देकर जाने को,  
कुछ खुशियाँ लेकर जाने को  
दुश्मनोंने धावा बोला है माँ,  
उसको धूल चटाना है।  
अब तुम मुझको मत रोको,  
मुझको सरहद पर जाना है।  
याद बहुत आते है पापा,  
कंधो पर जो आप घुमाते थे।  
कभी मम्मी थप्पड लगाती थी,  
चॉकलेट से हमें मनाते थे।  
बहुत दिखाए गांधी हमने,  
भगत सिंह को अब दिखाना है।  
पापा, अब मुझको मत रोको,  
मुझको सरहद पर जाना है।

सोनाजी टिळेकर  
टी.वाय.बी.कॉम.

## माँ बाप

कदम कदम पर खंजर  
रखे थे मेरे अपनोंने  
पर इसी खंजरोपे चलकर  
मुझे मेरे माँ बाप ने पाला है।

क्या बताऊं, वो पुरा आसमान है।  
मैं तो एक तारा हूँ।  
मैंने उपरवाला न देखा।  
मेरे माँ-बाप ही भगवान है।

मेरे बाप की शिकायत  
करू भी तो क्या करूँ।  
जो भी हो वक्त से पहले मिल जाता है।  
मैं काला, गोरा, पिला कैसा भी हूँ।  
मेरी माँ का चेहरा खिल जाता है।

हर्षवर्धन खुटवड  
एस.वाय.बी.ए.

## मेरा कॉलेज

हँसनेवालो को रुला देता है S.P.  
रोनेवालो को हँसा देता है S.P.  
पढाई की याद दिलाता है S.P.  
यही है हमारा S.P.  
यही है हमारा S.P.  
जमकर करना पढाई मेरे भाई  
तभी तो हासिल करोगे अपनी कमाई  
यही है हमारा S.P.  
यही है हमारा S.P.  
थोडासा मन को एकाग्र तो कर  
तभी जीवन में सफल होगा तू  
ये वादा करता है हमारा S.P.  
यही है हमारा S.P.  
यही है हमारा S.P.

सौरभ धांडेकर  
टी.वाय.बी.कॉम.

## एक पिता का संदेश

मेरे कंधे पर बैठा मेरा बेटा  
जब मेरे कंधे पर खडा हो गया।  
मुझी से कहने लगा देखो पापा  
मैं तुमसे बडा हो गया।  
मैने कहा, बेटा इस खूबसूरत  
गलतफहमी में भले ही जकडे रहना।  
मगर मेरा हाथ पकडे रहना।  
जिस दिन ये हाथ छूट जायेगा।  
मेरा रंगीन सपना भी टूट जाएगा।  
दुनिया वास्तव में उतनी हसीन नहीं है।  
देख तेरे पाँव तले अभी जमीन नहीं है।  
मैं तो बाप हूँ बेटा, बहुत खूश हो जाऊंगा।  
जिस दिन तू वास्तव में  
मुझसे बडा हो जाएगा।  
मगर बेटे कंधे पे नही  
जब तू जर्मी पे खडा हो जाएगा।  
ये बाप तुझे अपना सब कुछ दे जाएगा।  
तेरे कंधे पर ही इस जहाँसे चला जाएगा।

प्रसाद भोळे  
एस.वाय.बी.कॉम.

## चार लाईनें

चुहे का सेहरा सुहाना लगता है।  
चुहिया का तो दिल दिवाना लगता है।  
पलभर मैं ऐसे कुतरते है कपडे।  
अब तो हर कपडा पुराना लगता है।

मित्रांची बेरीज करता करता  
मैत्रीचा गुणाकार करू या  
दुःख... अपमान... वजा करून  
जीवनांचे गणित सोडवूया!

दोस्ती तो, एक झोंका है हवा का  
दोस्ती तो, एक नाम है वफा का  
औरों के लिए चाहे कुछ भी हो  
हमारे लिए तो,  
दोस्ती हसीन तोहफा है खुदा का।

ऋतू बदलत जातात  
दिवस उजाडतो-मावळतो  
सागरालाही येत राहते,  
ओहोटीसाठी भरती  
बदलत नाहीत ती फक्त  
माणसा-माणसांमधली  
अनमोल नाती प्रेमाची...

दोस्ती किसी की  
रियासत नही होती  
जिंदगी किसी की  
अमानत नहीं होती  
हमारी सलतनत में  
देख कर कदम रखना  
क्योंकि हमारी दोस्ती के कैद में  
जमानत नहीं होती।

जिंदगी के तुफानों का साहिल है दोस्ती  
दिल के अरमानो की मंजिल के दोस्ती  
जिंदगी भी बन जाएगी अपनी तो जन्नत  
अक्सर मौत आने तक साथ दे दोस्ती।

प्रतिक्षा शिवरकर  
एस.वाय.बी.कॉम.

## अग्निपथ

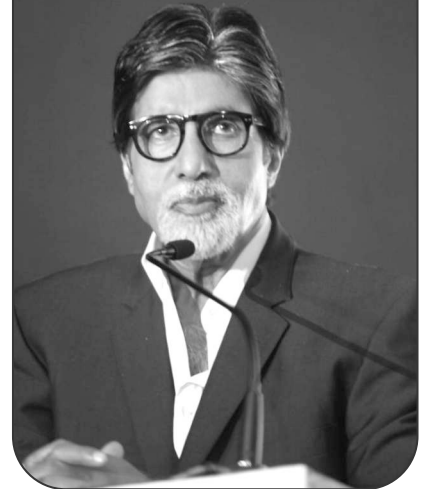


वृक्ष हों भले खड़े,  
हों घने हों बड़े,  
एक पत्र छाँह भी,  
माँग मत, माँग मत, माँग मत,  
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

तू न थकेगा कभी,  
तू न रुकेगा कभी,  
तू न मुड़ेगा कभी,  
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,  
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

यह महान दृश्य है,  
चल रहा मनुष्य है,  
अश्रु श्वेद रक्त से,  
लथपथ लथपथ लथपथ,  
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

- हरिवंशराय बच्चन







## The Word Rain

Rainfall is important in life. Rain and childhood in particular are intertwined. Everyone must have enjoyed making a paper boat in the rain and releasing it into the water. Now that he is older, he remembers all those moments. But even greatness can be enjoyed, in words! It's as if the students left with a boat of words! Let's see that...

English



## Journey of Discovering Me : While Knowing Me

Going beyond the domain of religious traditions, beliefs and practices; spirituality is an amazing journey of unraveling inner 'Me' an internal part of our development process.

From the time I was a little girl, I remember religiously praying a daily routine that I followed without actually giving much thought to it. My parents were happy when I did that and I was cool about it. Even in school we had our daily prayers and stories of God were the part of discussion in our Moral Science class. This was my first brush with that I thought as spirituality.

Through the years, the prayer changed, the indication was different & somewhere deep within there was a huge transformation taking place the magical evolution from just being 'Me' to knowing 'Me' within is what I today understand as the true definition of spirituality. I had found a kind of serenity, a new maturity, that surpassed all emotions and helped me to deal with situations in a much better way. It is not that I felt better or stronger than anyone else; nor was there an achievement above the ordinary; but the journey of discovering the 'I' within Myself empowered 'Me' with a total that was essence of life. The academic setup that we so vigorously follow is an unfair measure of our so-called intelligence leaving us at the mercy of a parameter called 'marks' that determine the future course of our time while this measure of IQ can help us in achieving a status to lead life, it can't provide us with the skills needed for living life.

The power of thinking, reasoning and the power of decision making are

our inner capabilities and the ultimate power of self-discovery can only be unchain when we cannot with inner self and it is this awaking of the real 'Me' within that we term as spirituality... going beyond the horizon of religious beliefs and practices.

The contribution of spirituality to the development of an individual is immeasurable. It is therefore ironical that a country with post of being a spiritual destination to the world has just fused form of spirituality related to just being a graded subject in the curriculum and that spirituality is a concept which can only be understood by maturity is complete misconception instead spiritual development is developing the self and the impressionable years in schools is the best period to lay the foundation of this process through the use of varied mediums like art, culture, language, meditation and reflection. While spirituality nurtures the intrinsic virtues of an individual taking them close to the Divine, it also subtly promotes excellence in all forms, academic, co-curricular and life management.

This is the power of spirituality the power of self-discovery that will keep you stable in the face of negativity enveloping you with grace, teaching you to see only the best in yourself and also in others. Following this path will churn out the goodness that dwells within you developing positive relationship through life, seeking opportunities to make worthwhile contributions to society thereby deriving divine happiness from each moment.

**Sonal Sonawane**  
M.A. English II

## Good Thoughts

- I Everyone can survive without junk food.
- I Actors are only entertainers, they are not Real Heroes.
- I How animals feel into the Zoo.
- I Many people are not educated as they appear.
- I Living a hygienic lifestyle is not too difficult to follow.
- I Health professionals are worth more than a cricketers or footballer.
- I Humanity is still alive .
- I We want to be negative when surrounded by corona positive patient.
- I Always be with the people who see the world differently.
- I Life always teach us through obstacles.
- I Life is all about being real, humble and kind.
- I In a war of ego... loser always wins.
- I The most precious gift you can give to someone is your time and attention.
- I Family is anyone who loves you unconditionally.
- I Beauty always lies in the heart of every person.
- I Money can buy you medicine but not health.
- I No one is ever too busy, You're just not important enough.
- I 'Time' heals almost everything.

**Prof. Prerana Patil**  
B.B.A. (C.A.) Dept.

## India Fight Against Covid-19

The World faces the situation of unprecedented in recent history virus that is aquired the acronym Covid-19 has brought economies across the globe to their knees the health crisis-led to grow global & lockdown have brought economic activity and the movement of people to standstill according to United nations Department of Economics & Social Affairs, the global economy likely to shrink by one percent 2020 and could further contract.

In India there is government fights a head-on introducing various measure to sustain most vunurable sections of society also support Indian industries hour of need. The only implementation of precaution measure has helped contain from spreading Covid-19.

While the Union government fighting bottle head on. The state ecosystem across India working tricciowly ensure that a citizens and industry face.

**Prathamesh Swami**  
F. Y. B. B. A. (C.A.)



## What Quarantine has Made Me Realize?

I guess the most trending hash-tag right now is #“Quarantine” and people are sharing how they are spending their time at home across all media platforms. From celebrities to footballers and mothers to grandmothers, everybody is posting about their own sweet/sour quarantine. So, here I am, giving you a sneak peek into my quarantine days and what I've realised during these lazy days spent at home.

Every alternate post that you click on is based on the quarantine and it is the only time when the entire feed feels relatable. Whether it's memes, videos, photos and everything is just the same. You're just done with anything and everything possible during this time. Whether it's Netflix, Bingo, or challenges on social media, there is nothing left to do now. I can bet that everybody's screen time just on their smart-phones has surpassed their all-time records and they are consistently maintaining it. If I don't count the time spent on my laptop or Television, even then my screen time is close to 10 hours/day because somebody invented smart-phones ten years ago to entertain us now. House-party and Ludo King are the most used applications and to such an extent that their servers crash ten times a day. Oh no, I guess you've deleted House-party, right? So, it's back to FaceTime and Google Duo, I guess. Anyways, going out to the balcony feels like going for a walk and clicking pictures of the sky, and the sunset feels like standing at Nariman Point. I'm sure you all have been through the same, but let's take a look at what I've learned and realised during this period, which is, why I started writing this in the first place.

Our family craved for our presence at home. Yes, that is true. All the time that we spent out of our houses socialising with hundreds of people at college, they have made us sideline our family to a great extent. Even for the older generation, their loved ones always wanted more family time. So here it is, we have all the time to spend peacefully with our families and revive some old memories.

It is the best time to reconnect with older friends who you stopped talking to or who became just an acquaintance. There is no better opportunity than this quarantine to speak to those who you once cared for and loved. Try it and who knows your long-lost friend becomes your best buddy once again.

All the workout challenges accepted, but this might be the best time to start your fitness journey. Yes, the home workout is essential. I've always been someone who felt that without going to the gym, there is no fitness. But all you ever need for fitness is the will to do it and not the equipment to do it. Home workouts might be boring, but it certainly livens up your otherwise boring day. Try it yourself, start with 50 pushups and 50 squats a day and you'll feel fitter, fresher, and brighter the next day.

This might just be the best and the most appropriate time to start your own business or follow your passion. Yes, I'm talking to all those young entrepreneurs and aspiring actors or artists or bloggers who felt that they are not worth it. This is the time when you can decide a path, make a plan and implement it once everything is back to normal.

Well, most of us are already doing it, but sleeping like you're the happiest person in the world is the best thing that anyone can do right now... In times where there is no lot of work or problems at college/office, keeping the lights out and calling it a night feels more impressive than ever. The bliss of sleeping without anything on your mind is the best past time ever so sleep well, but don't sleep the whole day.

These were some of the things that I realised and I'm sure you would relate to most of them even if you never thought about it. For sure, I don't like staying at home for this long, but it is the need of the hour so that we can roam around freely in the coming days.

Stay Home, Stay Fit, Keep Reading!

**Jambhale Harshada**

T.Y. B.B.A. (C.A.)

# Incredible India

*Vande Mataram,  
Sujalama Sufalam  
Malayaja Shitalam  
Shasya Samalam Mataram  
Vande Mataram*

This means that my mother land India is rich within hurrying streams bring with orchard, gleam, cool with the winds of delight green fields waving my mother of might. This is how my nature is rich with all natural resources. She is filled with diversity right from North to South and from East to West. So we firmly say 'East or West India is the best.'

We have the oldest culture and tradition. It is the only nation where people of different caste and religion live together as commonly said we use a 'Unity in Diversity.' We have our own constitution and biggest democracy in the world.

To protect our sovereignty, we have third largest defense force in the corporate world. Economically India is seventh biggest economical powerful country in the world with two trillion dollars and expected to be third economic power by 2050.

Most of the population of the Indians is in rural area. Their main source of income is agriculture. Even our progress in space technology is remarkable we are the only nation to send satellite on Jupiter successfully in the first attempt. That too at cheaper cost.

Apart from this achievement we have lots of issues to be addressed. Population in one of them. It is growing an alarming rate which should be controlled immediately. Unemployment is the another issue which need to do something. So that the youth power should not turn towards wrong path.

As an ideal citizens we should first and foremost be a patriot a love for my country, ready to serve my company to anytime when needed. We should not support social evils such as dowery system. Female child infanticide, corruption etc. I wish all politicians citizens of our country should have feeling like I have. Then nobody can stop India regaining the title 'Golden Sparrow.' We can create heaven on the earth by shunning all the bad qualities, so that we can become a well developed and lead nation in this corporate world with the light of humanity and love.

**Every Indians should take this OATH that :**

"We the citizens of India will contribute in keeping my nation clean, we will oppose all illegal practices and inhumanity practices and also encourage others to follow the same. Eliminate the wastage of natural resources and to contribute to regain the nature's beauty by planting more trees and protecting them.

Jay Hind, Jay Bharat !"

**Rohini Mahadik**

M. A. English (II)

## Proud Moments



Dr. Vishal Gaikwad awarded as Best Teacher by "20th National Brotherhood Literary Convention" in associate with Rashtriya Bandhuta Sahitya Parishad and Mahavir Education Society Bhosari in 2019



Prof. Shahuraj Yevate awarded as Best Teacher by "7th Student and Teacher Literary convention" in association with Rashtriya Bandhuta Sahitya Parishad and Maharashtra Vikas Kendra, Pune



# Let's Come TOGETHER

Hello!!!

Hope you all are healthy and safe with your entire family? This question started to matter a little more from 2020 onwards.

Everything was going very well life, job, family and friends, joy etc., but suddenly Covid19, a virus came and imprisoned all of us in our respective homes. Never thought that we would get to spend so much time with our family and we would really know the importance of our family in our life. Otherwise we were living cool in our own world, in the world of mobile; virtual life like FB; Insta; Twitter etc.

Never met anyone in person, just actually knew on FB and other platforms, but look today no one is here, just yourself and those around you are running for help. Some known or some unknown people are also providing a lot of help on this virtual platform, which means that what all things we want to use depends on us.

If we want, we can also use this platform for the right work with the right intention or to spread hatred or miscommunication.

But, is this really just the real world or is there something beyond it? Perhaps it is and that is what Covid19 taught us.

Rarely we have planted a tree for oxygen or for the environment and look! Today we have to buy air. Isn't it amazing? After a few years, the same condition is going to happen to water if we do not use it properly in time or if we learn to do so.

When everything was going good, then we took a loan from the bank to fulfill our sorrows and enjoyed the real pleasures and really forgot what we needed to live and look! Where it brought us today.

The lockdown was not comfortable for all and will not be the same. Many people lost their lives, many became homeless and many people had to lose their work. Now a

days too many employees are getting half of the payment and has started running out of their deposits. The bank Dues of to the loan which we had taken to enjoy our real pleasures.

Now for EMI or we can say that the things which we used even if we did not need to take loan. It has been a duty to pay the EMI, but the job is no longer there. Due to this, many people are committing suicide and doing something similar or thinking of.

It is a bit serious, but it is true! We should think about all of these.

Just one Covid19 taught us what is necessary to live, but will we still be able to learn anything from all this or will we return to the same virtual world again? This is a question that we all have to find an answer to.

Schools and colleges are closed, what about the future of all the students? Will online study have such an impact on them? Will we be able to give them back these by gone years?

Will we really be able to learn something from time? Will we now understand the value of our nature?

Or Will we just go on living in our own world as it used to be for ourselves?

These are the questions that haunts me every day.

Now maybe some more serious or effective than Covid19 Pandemic may arrive, then what will we do?

This is a question and we all have to find the answer together. So that our coming generation will not ask us why we have not done anything for them?

So let's all come together today and from now onwards to find answers of these questions and try to make tomorrow a better and better world than today.

**Dinesh Ukate**

F. Y., B.B.A. (C.A.)

## The Magical Bottle



Once upon a time a young couple Radha and Raman were living in the city. They had a beautiful daughter named "Madhu". Madhu looked like a fairy. They all were living happily in the city Rampura. In Rampura, there was a Gold park, but according to people that was the oldest park in that city. One day Radha and Raman plan to visit that park with Madhu and they went. Though that park was so old there much natural beauty was there. So many old trees, a small pond for birds, toys for children and benches for visitors were there. There was no crowd. In the Gold Park Radha and Raman found a box, Raman was excited to open that box, but Radha said "No". Radha was suspicious and not ready to open it, but Raman's mind was stuck to open that box. Helpless Radha gave challenge to Raman to divert his mind from box to other thing, she said, "I'll allow you to open that box if you collect 100 black stones and 10 different leaves from different trees in 2 minutes only. But, if you lose this challenge you'll not force to me to change my decision." Raman said, "I accepted" and he started to collect stones. Radha kept that box with her thinking whose box was that? What may be in this box? Is it safe or not to open? And many more questions humming in her mind and suddenly she heard voice, "hurray, I have completed the challenge given by you. Come and see Radha." Now Radha had no option, so she gave permission to Raman to open that box. Both were excited, finally he opened that box and they found a colorful and beautiful bottle. As He hold that bottle, that bottle started talking with them. Bottle said, "Thank You both of you. You make me free from that box." Tell me what do you want from me? I'll fulfill your wish, tell me." Radha and Raman both were in shock and thinking that how is it possible? How could the bottle talk with them? While they were at puzzled situation, they heard laughing voice very loudly. They saw here and there, but no one was there. That time they got scared very badly and throw that bottle

and ran fast and went back to their home, but bottle also went with them. When they reached at home they saw that magical bottle was already present at there. Raman got emotional and asked to that bottle, "what do you want from us? Why are you following us? Please forgive us for our silly mistake. Don't trouble my family. I'll give you what you want." The magical bottle laughed loudly and said, "oh really, you think like so." Then bottle said, "I want your smile as well as your happiness, can you give me your all good things, tell me could you give me all this?" Raman said, "How is it possible?" "How can I give you all this to you?" The magical bottle said, "Don't worry, I was just kidding." Actually I'm not bad and I want your help too. I am a princess Indu of "Ratanpura" village and lived there happily.

After some days, some wicked people cursed me that "You and your loved one cannot live together until and unless you defeat to me and my favorite crow "Raven". If you able to defeat me by killing Raven then only this curse will be removed and you'll live happily, but this is not possible because we are very strong. That bottles herded tears and told her past story and asked its for help to Radha and Raman. They listened carefully. Bottle started telling about its past life. My best friend Jenny who was a prince of another village and I went to the jungle for collecting some wild flower. That time some bad people came there and attacked Jenny because Jenny was the witness of their bad deeds. He will make sure to give punishment to those evil persons, but before that they attack on Jenny and tried to kill him. That time they didn't know I was there and I saw them. One person saw me and told I was there too. They tried to kill me, but coincidentally one fairy came and saved my life. That fairy made me a beautiful bottle and put me in this box which you opened earlier and bless me. She said, "whoever open this box and make you free, he or she will able to help you and make Jenny free." And other side they caught Jenny

instead to kill him and hide him in the den in jungle. Jenny was Astrologer and he knew all things may go to happened and he was ready to face them. Indu and Jenny loved each other and wanted to live together happily. Then bottle asked to Radha and Raman, "Please help me to end that evil power and get my life back." Radha and Raman both got emotional and ask that bottle, "How can we help you? We are so common people? And why you selected me to help you in whole village?" That bottle said, "You are so brave that's why I chose you to help me. I saw when your wife gave challenge to you, you accepted that challenge so quickly. It's heart touching and hopeful moment for me." So many people were open that box and I asked help from them, but no one was ready to help me. All were so coward except you. Please help me save not only my love, but my villagers also. After listening all things Raman got ready to help Indu (the magical bottle). He asked to Indu, "How can I help you dear, please tell me. And tell me first in current time where is Jenny?" That magical bottle tells first to fall Jenny is in the den. Your daughter Madhu looks like me so please send her to my village. Don't worry I'll give my power to her to defeat all bad powers and I assure you about her safety. Madhu got ready to help bottle and quickly said Yes to Raman. But, Radha said a big No to bottle. She said, "I apologies, I can understand your pain and ready to help you, but my Madhu is small and what if she lost her life in your battle?" As you said earlier, they are wicked people and they are so dangerous too. They already tried to kill you and Jenny. My Madhu, how can she deal with them? That bottle said, "I understand your concern Radha, I know the Strength and weakness of those people, so I'll give magical power and object to Madhu for her safety. Finally, Madhu came to Ratapura village and started welfare activities for villagers. She helped villagers in their need and silently she started searching for Jenny too. After some days she found jenny in den in jungle. She tried to talk with him, but he lost his memory and got angry at Madhu. Madhu asked for help to Indu (the magical bottle), she said first we have to kill those wicked people and his crow Raven, then only Jenny will get his memory back. Indu gave some magical object and power to Madhu to fight and kill the evil personality. As per the instruction given by Indu, Madhu placed a magical weapon against evil power and ended the evil power. As evil power ends in Ratanpura, village filled with new energy and positiveness. Jenny got whole this memory back and here members his whole past life with Indu. Finally that fairy came and released to Indu from that bottle and blessed them with best wishes. Indu and Jenny got married and became king and queen of Ratanpura villege. Madhu returned to her home with lots of gifts given by Indu and Jenny. She lived with her mom and dad happily. After some years Indu and Jenny blessed with a baby girl and they decided to give her name as "Madhu" because she saved their life in past.

*Moral:-Help the needy person because your single help can change their life.*

**Ashwini Wagh**  
M.A. English II

## A Mother Amidst Chaos



The wisps of hair, she carefully adores,  
The paths on the cheeks,  
is the only sunshine in store.  
The riot, the noise and a maddening chaos;  
You still see the serenity of a smile in gloss.  
The pain is connected in flesh and blood.  
The mind and stress through an unseen flood;  
And then one morning, disguised as a usual one,  
the idea flashed "DANGER",  
in a calm way done.  
She smiles and shrivels and says,  
it is but NAUGHT A mere hurdle,  
but what hasn't life brought.  
She commands and requests and scoffs and asserts,  
GET WHAT NEEDS TO BE DONE  
(Social Distancing),  
to prevent seeing the desert (isolation).  
She adjusts, thrives, works and never rests,  
and appears all strong, ever ready for the tests.  
And yet, in the deepest loneliest of hours,  
poorly, the thought has crossed...  
WHAT IF... WHAT IF...  
NO... NOT MY FAMILY.  
A slight distorted sound,  
the frequent hand on arm is not only the love,  
but also a check for the alarm (fever).  
The challenge of life,  
a slight hindered breath, w  
akes her and shakes her, from a sleep,  
she doesn't often get.  
She sighs a million times, and her head,  
she will fight,  
A sigh loud as a needle drop,  
in the silence of a night.  
The irony is that the pain  
is not contained on the shelf,  
Her worry is for both...  
The piece of her heart and  
for the heart,  
whose piece she is herself...!!

\*\*\*

**- Kinny Gupta**  
M.A. English II

## International Yoga Day



International Yoga day (Antarashtriy Yog Divas) or commonly and unofficially referred to as 'Yoga Day', is celebrated annually on 21st June since its inception in 2015. An international day for Yoga was declared unanimously by the United Nations General Assembly (UNGA) on 27th September 2014.

Yoga is a physical, mental and spiritual practice attributed mostly in India. The Indian Prime Minister, Narendra Modi in his address suggested the date of 21st June, as it is the longest day of the year in the northern hemisphere and share special significance in many parts of the world.

*Yoga is like music  
the rhythm of the body  
the melody of the mind  
and the harmony of the soul  
creates the symphony of life  
you cannot always control  
what goes on outside  
but you can always control  
what goes on inside.*

**Ashwini Wagh**  
M.A. English II

## Growing Friendship

Friendship is like garden flowers fine & rare. It can not reach perfection except through loving care, Then new & lovely blossoms with each new day appear. For friendship like a garden grows in beauty year by year. There's happiness in little things, There's joy in passing pleasure But friendship are From year to year The best of all life's treasure..

### The life

The life is an opportunity, the golden way to get success. So when word says I am impossible, but it self says i am possible. A beautiful life is full of joy so it demands one to look up to it at any times, so that at moment it's surround by any problems, but that can be solved. You should always think about positive, that after every end there is beginning. The life is a mystery! I will never be able to understand.....

**Laxmi Reche**  
M.A. English - I

## About Friends



Being friend is about sharing our lives with others. There are some aspects of our lives requires, that we spend a lot of time together or sent lot of messages to convey our feelings

Sometimes, we share only few words are adequate. It is not always the long conversation that conveys the deepest feelings. Sometimes, longer modes of expression may seem redundant and lacking in profundity.

Putting just the right combination of words on paper in a succinct style may just hit the spot.

Love you Friends!  
**Shrinivas Coure**  
F. Y. B. Com.

## Importance of Motivation

Motivation is a very important for an organization. Every concern requires physical, financial and human resources to accomplish the goals. It is through motivation that the human resources can be utilized by making full use of it. This can be done by building willingness in employees to work. This will help the enterprise in securing best possible utilization of resources. The level of subordinate or an employee does not only depend upon his/her qualifications and abilities for getting best of his/her work performance.

Motivation is important to an individual as motivation will help him/her achieve his/her personal goals. If an individual is motivated, he/she will have job satisfaction. Motivation will help in self-development of individual. An individual would always gain by working with a dynamic term motivation is important to a business as : The more motivated the employee are the more empower the term is. The more is the term work and individual employee contribution, more profitable and successful in the business. During period of amendments, there will be more adaptability and creativity.

**Rutuja Patil**  
S. Y. B. Com.



## Life Analysis of Young Generation FROM REEL TO REAL.

Since childhood we have been hearing, 'study hard' that's when you'll be successful, but nobody told us the meaning of success or what we should study. Success isn't getting popular or having a six figure salary. Success is a way more different concept which have been misinterpreted by many. I have often seen people saying cracking that exam or buying that particular thing is the ultimate aim of their life. But, what after cracking the exam or buying that desired thing. We'll feel like there is no goal left in our life. I have seen people who have achieved academic excellence, but still unhappy in life, why is it so? Success isn't cracking any exam or it isn't in any thing, success is in you. Rather than using the word success I'll use the word happiness. Ultimate aim of life isn't being successful, it's being happy in every phase of life, but most people don't understand this and end up doing suicides and all in the way of finding success. Since childhood we have been taught drawing, dancing, singing, football along with our studies, but with this a line is always accompanied and that's "These things are just for fun purpose, your main task is studying your subject ". Apart from this we have been seeing people saying do this course or do that course this will make you scale great heights, but how will the course decide our future? Even the most underrated things such as making lanterns can make us successful, so is the matter with the course you do. No, it's about what we like and which things we can do without getting tired.

We see a number of courses on social media or any other platform showcasing benefits of doing those course, but there isn't any course available for making us choose the right career course. Obviously, there won't be such course available ever because everybody's life is different and everybody's aspirations too. So who will guide us? What will help us take the right decisions in life? The answer is "you, yourself". A guide can only show us the way, but for showing that way obviously you need to tell that guide about your desired location. Right? Similarly it's about careers and goals. You are the one who will decide your location of life.

Life isn't to go through the right track always, if it would have been all right things in life then it would have been so boring to live life. Right? That's why, it's necessary to discover different things in life, make mistakes in life, waste some years of life, that's when you'll understand the real you and accordingly choose your career.

Discovering different things isn't just about getting knowledge and all its about discovery yourself, what are your likes and dislikes, which things soothes and which one's terrifies you. Because, when you'll know these things then you can easily choose the right path for yourself not just in career, but overall life decision too. So, next comes, how will we discover ourselves? How will we know what are our likes and dislikes? It's by reading different books, watching

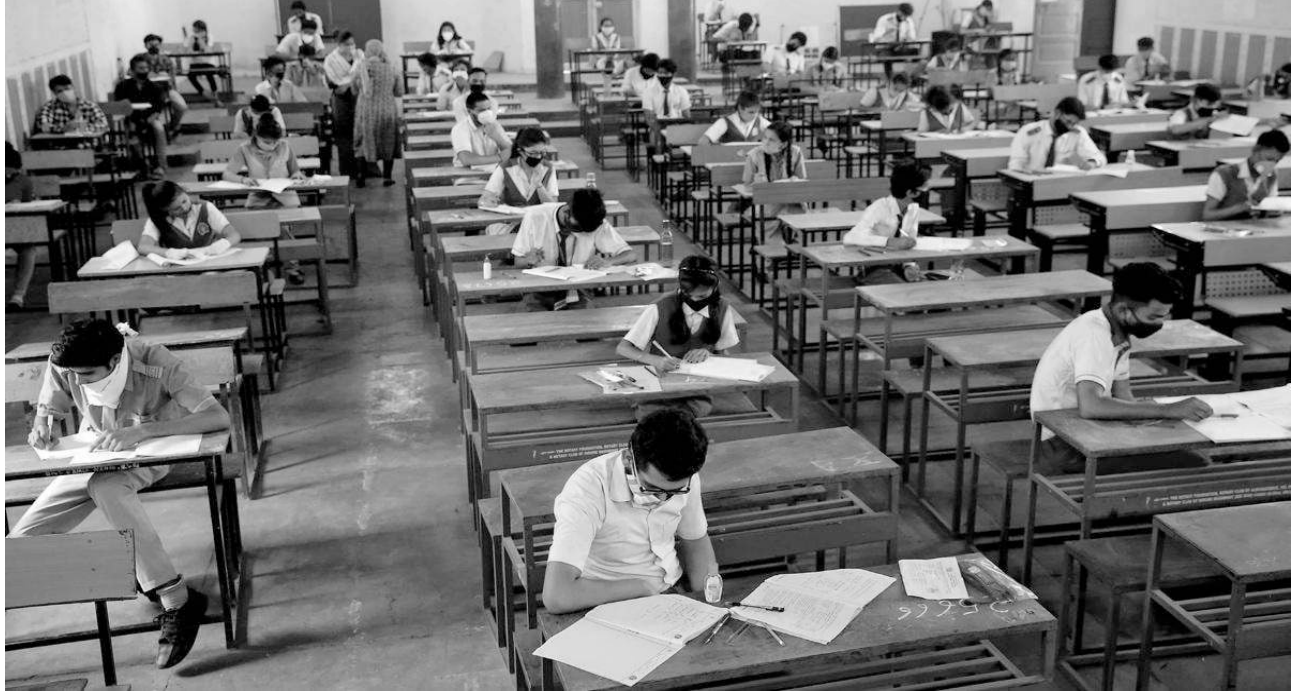


different stories, talking with different people, having different hobbies or just by our mistakes. That's when you'll know what decision you should take in life and that's when you'll be able to be successful i.e happy in life. Often it's been said that the age between 16 to 20 is time to enjoy because you don't have any responsibilities. But, in actual it's the most life changing, full with ups and downs and tremendous hardworking stage of life.

A teenagers life isn't easy, it's filled with insecurities, low moral and confusion. Everyday they are fighting with themselves to be at least 1% better than yesterday, if you're not going through all such things in life then you're unfortunately on the wrong path. The problem is there are so many course available in market on stock market, designing, baking, dancing and so many, but there isn't any course available to teach us how to live our life. Because, that's taught to us by the different things which we do in life such as even while cooking we learn that if we follow the instructions our dish will definitely be the best, but why don't we follow the instructions of life ? The instruction of life is just to keep discovering things till you find the right one for you. Whatever career you take, but the way of living life is same for all and that way is being happy, having a positive approach, having a productive day, being consistent, learning from mistakes, taking care of our body as well as state of mind that's when you'll be at peace and you're life would be called as a successful life in any field.

Remember, success isn't the moto, the real moto is to be happy. Run after the things which make you happy , success will get in your way. My dear friends, I red somewhere one sentence just apply in your life, You have it in you, just try to unfold yourself.

**Hrushikesh Raut**  
M.A. English II



## COVID-19's Effects on Students

The corona virus has spread around the world, because of that school and colleges are closed and for that reason 29 crore students + schools are sank most of countries has decided to be closed. 50 lacks+ students school has sank such information is given by social media.

Schools are being set up to prevent the spread of corona. The colleges are also closed. More than 33 crore students in India from primary to college level are currently sitting at home.

About 70 percent of the world's students have been affected by the global outbreak and lockdown. This has resulted the loss of education in the future of the students, So as a solution to that education teachers are asked to take online classes. But, how is it possible? As most of the students do not have mobile phones. Then what about them? Many people cannot afford a mobile phone. This is also a big question.

Until the children can go to school, the school will go to the children's home through online classes. In this changed situation, the way of teaching and learning has changed since the beginning of this year. As a solution to this, online classes are suggested by the Minister of Education. State Educational Research Instrumental will be used to evaluate the academic performance of students of class I to IX and XI and informed to announce the results immediately.

The Research and Training Council has conducted all the schools and junior colleges in the state, but the component test as well as the results of the semi-final results are remain in the school and the lockdown for a month and a half has made it impossible for teachers to go to school.

Due to the lockdown announced by the government in

the background of the outbreak of doing. Schools and colleges across the state have been closed, prompting the education department to order students to pass the first to eighth examinations and to cancel the ninth and eleventh examinations after assessing their academic year and announcing the results. Accordingly, the State Council for Educational Research and Training had asked all schools and junior colleges in the state to immediately report the results of the academic year 2019-20 on TV or sms or online. The council said that after the announcement of the results, there would be no confusion among the students and they would be able to study for the next academic year on the basis of available materials. They have passed without giving the exam.

The decision was taken at a meeting between Prime Minister Narendra Modi and Ramesh Pokhriyal Nishank in Shikshe. CBSC's board exam for class X has been canceled and class XII is currently in abeyance

CBSC 10th-12th exam have been canceled due to crisis in CBSC, Haryana, Gujarat, Madhya Pradesh, Uttarakhand, and also in Maharashtra exam has been canceled.

Passing students like this has had a huge impact on students' studies. Children study because students pass while studying for exams. The children are neglecting to study. They will have to go through a lot of hurdles to get into the next class and get a job. Their intellectual level is affected In my opinion corona had a detrimental effect on students.

**Aarti Jaiswal**  
12th Commerce

## Effects of COVID-19 Pandemic in Daily Life

COVID-19 has rapidly affected our day to day life, businesses, disrupted the world trade and movements. Identification of the disease at an early stage is vital to control the spread of the virus because it very rapidly spreads from person to person.

### Healthcare

- Challenges in the diagnosis, quarantine and treatment of suspected or confirmed cases.
- High burden of the functioning of the existing medical system.
- Patients with other disease and health problems are getting neglected.
- Overload on doctors and other healthcare professionals, who are at a very high risk.
- Overloading of medical shops
- Requirement for high protection
- Disruption of medical supply chain

### Economic

- Slowing of the manufacturing of essential goods
- Disrupt the supply chain of products
- Losses in national and international business
- Poor cash flow in the market
- Significant slowing down in the revenue growth

### Social

- Service sector is not being able to provide their proper service
- Cancellation or postponement of large-scale sports and tournaments
- Avoiding the national and international traveling and cancellation of services
- Disruption of celebration of cultural, religious and festive events
- Undue stress among the population
- Social distancing with our peers and family members
- Closure of the hotels, restaurants and religious places
- Closure of places for entertainment such as movie and play theaters, sports

clubs, gymnasiums, swimming pools and so on.

- Postponement of examinations. These are the effects of COVID-19 pandemic in daily life

**Sahil Pathan-S.Y. B.B.A.(CA)**

## Lockdown at Home

Everywhere the lockdown have been encountered, I felt uncomfortable and lonely.

I have elder brother and he is doing his work but because of the corona virus the lockdown is done. Due to it he has closed the shop and the earning got stopped. He was busy in his work, but I was thinking about the collage. When it be open again? Now, only the collage will open after few days as the increase of corona virus patient. The whole city is affecting by corona virus again.

As was calling and messaging the friends about current situation of COVID-19 patients discussion about this with my friends. After few days, I was discussing with my father about what the situation is now of the COVID-19. My father said that it is critical situation is now in our city. We are spent time by playing cards, carom, Business games, etc. We spend such a liality time after so, many years with my family. But, I have read in the paper that. School would be closed, Schools are not such important topics in news paper now it got realised in this year.

**Yash Gore**

12th commerce



## I Call Him Dad....

The greatest gift  
I ever had  
I call him Dad...!  
The sweet person  
very special  
looking at him I become glad  
I call him Dad...!  
The great courage who feels  
spirit & helps me in my bad  
I call him Dad...!  
The noble man, who encourages  
me in my fade  
I call him Dad...!  
The wiser who  
fulfill my wishes & gives me  
promissory notepad  
I call him my Dad...!  
**Anuja Alhat**  
F.Y. B.A.

## LIFE



Life is Like a note book  
Two pages are  
Already written  
By 'God'  
First page is Brith  
Last page is Death  
Middle pages are empty  
Fill them with smile & love  
When we focus a money  
We build a company  
But, when we focus people  
We build an Empire  
This is real life  
Life is a cricket  
Parent's are umpires  
Teacher's are coach  
Friend's are commentator  
Problems are opposite team  
Society is audience  
Years are overs, age is run  
Job is half century  
Marriage is Century  
Death is Wickel!  
**Rohan Shinde**  
F. Y. B. A.

## LOVE

Don't let it be confined  
As it can't be defined  
Don't make it rational,  
As it is unconditional  
The more you give,  
The more shall you live  
----  
"Life" – give it a try  
Let's fly  
Give it a try...  
Let's fight  
Till everything is right....  
Let's live  
Learn to forgive  
Let's chase  
Before it fades  
Let's Wake up  
Before it's too late!!  
**Divyanshu Bhatia**  
T.Y.B.A.

## Oh Mother...



You vanished like a fog  
You vanished like a bubble.  
This wind is not allowing me  
to see you, to meet you.  
Whole world is embedded  
in the brittleness of ailment.  
O' God tell me  
what is your supposition?  
You are acting like a grave stone.  
she was like a preserver  
and idol of forbearance.  
She was winsome  
and hardness of gemstone.  
But, she disappear  
in wave of the gale.  
This darkness of misery  
pulling me in.  
Help me, help me,  
God just finish this darkness  
of illness like a quantum leap of sap.  
Then no one will be waif.  
**Ujwala Kathale**  
M.A. English I

## Nature Trail / My Garden

At the bottom of my garden  
There's a hedgehog and a frog  
And a lot of creepy-crawlies  
Living underneath a log  
There's a baby daddy long legs  
And an easy-going snail  
And a family of woodlice  
All are on my nature trail  
There are caterpillars waiting  
For their time to come to fly  
There are worms turning the earth over  
As ladybirds fly by,  
Birds will visit, cats will visit  
But, they always chose their time  
And I've even seen a fox visit in  
This wild garden of mine  
Squirrels come to nick my nuts  
And busy bees come buzzing  
And when the night time comes  
Sometimes some dragonflies come  
humming  
My garden mice are very shy  
And I've seen bat that growl  
And in my garden I have seen  
A very wise old owl.  
My garden is a lively place  
There's always something happening  
There's constant search for food  
And then there's all that flowering  
When you have a garden  
You will never be alone  
And I believe we all deserve  
A garden of our own.  
**Karan Gawade**  
S. Y. B. Com.

## My Teacher

A teacher is like a God  
Who teaches us  
Who entertain us  
And always helps us  
She is strict, but loving too  
Just like a mother  
She is our guide, mentor too  
Just like Guru  
She is our dearest  
Who guides us to be the finest  
oh! our teacher  
You are our future  
A teacher is like a candle  
Always showing the right path  
God, really thank you!  
That we have got a teacher  
Like my college's teacher for us.  
**Ashwini Kaple**  
T. Y. B. B. A.(C.A.)

## Quarantine

What if I just want to be  
In the same room as you?  
Keeping up conversations  
Is not my strong suit, I am better at  
Breathing when I hear you breathe  
Typing at my laptop while you're  
Biting your pen and flipping pages  
Or scrolling through your phone  
Laughing occasionally  
You'd ask to open my window  
As it's gotten too hot  
I'd stretch out on the carpet  
If I needed a break  
Silence on a video call means  
It's time to hang up  
But if you were here  
We'd have the kind of silence  
One would never want to leave.  
My friendship with you  
Is better side by side,  
not face to face.

**Roshani Pagar**  
T.Y.B.B.A.(C.A.)

## My Little Brother



My buddy brother fat as fat  
As any boy can be  
And he is just the sweetest duck  
That every you did see.  
I count the dimples in his hands  
A dozen times a day  
And often wonder when he was  
What he would like to say  
I comb the down upon his head  
he hasn't any hair  
It must be could without and get  
He never seems to care  
It is so nice to see him kick  
He has such a pretty feet  
I think if we might eat him up  
it would be quit a threat.

**Vinayak Bharati**  
F.Y.B.A.

## What Is Maturity?

Maturity Is when,  
You start taking care,  
of your self respect.  
Maturity Is when,  
You start enjoying your own company,  
Rather than being with  
fake peoples.  
Maturity Is when,  
You start realizing  
Who you are.  
Maturity Is when,  
You start ignoring negative people's.  
**- Prathamesh Botwe**  
F.Y.B.A.

## WE

When stepping into college journey,  
I was choked with many fears.  
I got some people, who always cheer.  
And now, they are very near to me.  
They know my flaws better than me,  
I always find their hug & love to my side  
Very soon they became my soul  
partners and my pride  
Now our friendship has no I,  
no you, but we.  
Whenever I am lost somewhere,  
They bring me back to my right place.  
Because you people are my life's ace  
I wish of you in all my prayers.

**Neetu Sharma**  
M.A. English II

## HOPE

So, I failed one of the  
placement interview,  
& for me, that is something not new  
As, I have seen many  
failures since birth.  
Sometimes it appears  
I'm losing my worth.  
So one day at stroke of midnight  
I was thinking for me what is right.  
Again I started chasing  
my ambitions. And, I tried handling  
all the tough situations.  
though it didn't end up like  
complete success  
But a step towards my vision  
has relieved my stress  
in this battle, I have learnt many things,  
And am restoring hope,  
to attain all my dreams.

**Neetu Sharma**  
M.A. English II

## The Key To My Mind

Pause for a moment  
A moment in true  
I know who you are  
Now take a deep breath  
Listen closely to me  
Look into my words  
And tell me what you see  
I know you won't stop  
you'll read with glance  
What you do not know  
Is my heart's in our hands  
Within my soft words  
The poems I write  
Is a piece of my mind  
Only now in the light  
I warn you my friend  
That the key to my mind  
Is through what I write &  
What I let you find  
**Shrinivas Choure**  
F. Y. B. Com.

## 10 Lessons From Rich Dad to Poor Dad

1. Learn to listen
2. Pay yourself first
3. Buy luxuries last not first
4. Reduce expenses and liabilities
5. Aim for more valuable Assets
6. Be in control of your Emotions
7. Work to learn, Don't work for money
8. You become what you study really
9. Reinvest excess cash
10. Surround yourself with people who are smarter than you.

**Hrushikesh Kale**  
T. Y. B. Com.

## LOVE

What is love? ...Love is life  
Love is best feeling of life  
Love is happiness  
Love is beautiful feeling of life  
Love is madness  
Love is pure relation of life  
Love is selfless feeling  
Love is the every problem solution  
Love is a gentle caring  
Love is to share life together  
Love is the hope of survival  
Love is life  
**Neha Tamboli**  
T. Y. B. A.

### Corona is Waiting Outside

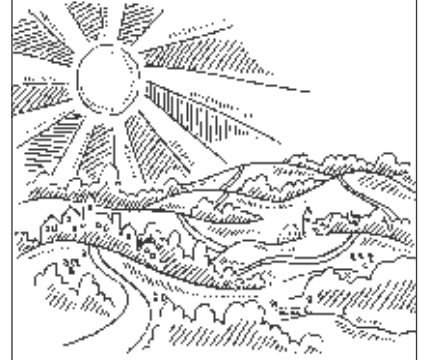
I want to go outside,  
but I'm scared  
Corona is waiting outside,  
My Dad says  
I want to go to the college  
and meet my friends  
My mummy  
not giving me permission,  
now feeling bad?  
My Mom and Dad act,  
like my friend  
Corona is waiting  
outside My Dad says  
No extra people around me,  
now at my place  
But first time I feel,  
what is the family and friend  
Nature cleaning air  
and water itself  
Corona is waiting  
outside My Dad says  
Man believe that, the earth  
is only my property  
By nature, corona was sent,  
to break that myth  
Stupid we still,  
don't understand this  
Corona is waiting  
outside My Dad says  
**Rakesh Mali**  
M. Com. II

### Money Can not Buy Man

Money can buy a bed  
but not sleep  
Money can buy a book  
but not a brain  
Money can buy a food  
but not appetite  
Money can buy a medicine  
but not health  
Money can buy a sanitary  
but not sanctity  
Money can buy a cosmetics  
but not beauty  
Money can buy a servants  
but not friends  
Money can buy a wealth  
but not equality  
Money can buy a lust  
but not love  
Money can buy a goods  
but not peace  
Money can buy a position  
but not greatness  
Money can buy a power  
but not authority  
Money can buy a man  
but not god !!

**Laxmi Reche**  
M. A. English I

### Corona Time I Saw

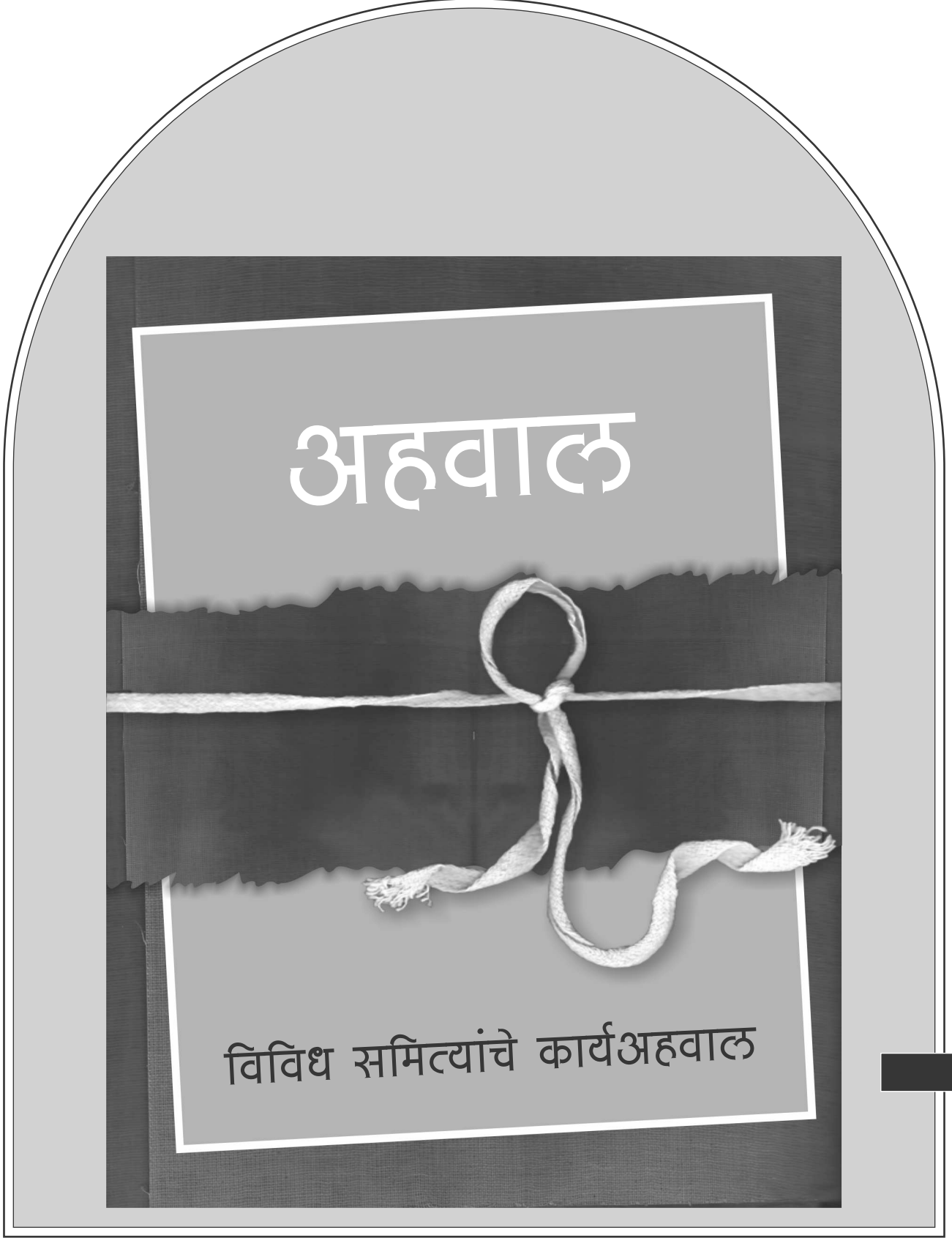


Let your unique  
Awesomeness and positive  
Energy inspire confidence  
in affects  
Wherever you go,  
no matter  
What the weather always  
bring your own  
sunshine  
If you want light to come  
in to your life  
you need  
to stand where  
it is shining  
Success is the sun of  
small effort's!  
**Amita Vasave**  
F. Y. B. A.

## OUR TEAM

Teaching and Non Teaching Staff !





शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१

महाविद्यालयातील विविध विभाग व समित्या

|  |   |
|--|---|
| १. राष्ट्रीय सेवा योजना  | : डॉ. विशाल गायकवाड                       |
| २. वाणिज्य प्रयोगशाळा समिती                                      | : प्रा. कृष्णा मिटकर                      |
| ३. ग्रंथालय समिती  | : प्रा. शैला वाळुंज                       |
| ४. राज्यशास्त्र विभाग  | : प्रा. माणिक कसाब                        |
| ५. रांगोळी समिती   | : प्रा. दिपाली ताम्हाणे                   |
| ६. प्रसिद्धी समिती   | : प्रा. माणिक कसाब                        |
| ७. सहल समिती   | : प्रा. शाहूराज येवते                     |
| ८. इंग्रजी विभाग   | : डॉ. छाया जोशी                           |
| ९. वेळापत्रक समिती   | : प्रा. कैलास अस्तरकर                     |
| १०. स्पर्धा परिक्षा मार्गदर्शन समिती                             | : प्रा. कैलास अस्तरकर                     |
| ११. जिमखाना समिती  | : डॉ. रणजित कदम                           |
| १२. सांस्कृतिक विभाग   | : प्रा. परमेश्वर भताशे                    |
| १३. स्त्रियांवरील लैंगिक छळवादविरोधी अंतर्गत तक्रार निवारण समिती | प्रा. प्रेरणा पाटील<br>डॉ. पांडुरंग मिसाळ |
| १४. रॅगिंग प्रतिबंधक समिती                                       | : डॉ. विशाल गायकवाड                       |
| १५. बी.बी.ए.(सी.ए.) विभाग  | : प्रा. शाहूराज येवते                     |
| १६. वार्षिक दिनदर्शिका समिती                                     | : प्रा. परमेश्वर भताशे                    |
| १७. परिक्षा विभाग  | : प्रा. संजीव कांबळे                      |
| १८. मराठी साहित्य विभाग  | : डॉ. पांडुरंग मिसाळ                      |
| १९. अर्थशास्त्र विभाग  | : डॉ. विशाल गायकवाड                       |
| २०. शैक्षणिक प्रवेश व नियोजन समिती                               | : डॉ. विशाल गायकवाड                       |





# विविध समित्यांचे वार्षिक अहवाल

शैक्षणिक वर्ष  
२०१९-२० व २०२०-२१

## परीक्षा समिती अहवाल

सन २०१९-२० व २०२०-२१ या शैक्षणिक वर्षामध्ये विद्यार्थ्यांच्या महाविद्यालयातील इतर कलागुणातील यशाबरोबरच परीक्षेतील यश हे देखील अत्यंत महत्त्वाचे असते. यासाठी परीक्षेचे वेळापत्रक परीक्षा सुरू होण्यापूर्वी १५ दिवस नोटीस बोर्डवर लावण्यात येईल याची व्यवस्था वर्षभरातील होणाऱ्या परीक्षांसाठी करण्यात आली होती. परीक्षा विभागात वर्षभरातील परीक्षांचे नियोजन खालीलप्रमाणे करून वेळेत व शिस्तीत परीक्षा घेतल्या होत्या.

सर्व वर्गाच्या अंतर्गत परीक्षा घेतल्या होत्या. या बरोबरच बी.ए., बी.कॉम., बी.बी.ए.(सी.ए.) या वर्गातील जे विद्यार्थी रिपीटर आहेत, त्यांची अंतर्गत परीक्षा व सप्टेंबर, ऑक्टोबर टर्म एन्ड बॅकलॉग परीक्षा खालील तारखांना घेण्यात आल्या.

१. बी.ए., बी.कॉम. आणि बी.बी.ए.(सी.ए.) परीक्षा इंटरनल बॅकलॉग दिनांक १२-०९-२०१९ ते २१-०९-२०१९ तसेच सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ पुणे ऑक्टोंबर / नोव्हेंबर परीक्षा

१०/१०/२०१९ ते २१/१०/२०१९ बी.ए., बी.कॉम.

१५/१०/२०१९ ते २१/१०/२०१९ एम.ए.

०१/११/२०१९ ते १९/११/२०१९ बी.बी.ए.(सी.ए.)

२०/११/२०१९ ते २८/११/२०१९ एम.कॉम.

यासाठी महाविद्यालयातील सिनियर सुपरवायझर म्हणून प्रा. कृष्णा मिटकरी, डॉ.छाया जोशी, प्रा.दिपाली ताम्हाणे, प्रा. कैलास अस्तरकर, प्रा. माणिक कसाब व डॉ. रणजित कदम यांनी कामकाज पाहिले.

द्वितीय सत्रातील बी.ए., बी.कॉम., बी.बी.ए.(सी.ए.), एम.ए., एम.कॉम. या शाखेतील अंतर्गत परीक्षा तसेच जे विद्यार्थी बॅकलॉग आहेत यांची अंतर्गत परीक्षा दिनांक ०९/११/२०१९ ते १९/११/२०१९ या कालावधीत घेण्यात आल्या. त्याचप्रमाणे सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ अंतर्गत मार्च, एप्रिल, मे या वार्षिक परीक्षेचे नियोजन महाविद्यालयात करण्यात आले होते. ही १२ मार्च २०२० पासून सुरू करण्यात आली होती. परंतु कोविड १९ च्या वाढत्या प्रभावामुळे ही परीक्षा घेण्याचे बंद करण्यात आले.

मार्च / एप्रिल २०१९-२० सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या अंतिम वर्षाच्या परीक्षा कोविडच्या वातावरणामुळे विद्यापीठाने १२ ऑक्टोंबर २०२० ते २१ ऑक्टोंबर २०२० या कालखंडात विद्यापीठाच्या आदेशानुसार परीक्षा घेतल्या. या परीक्षेसाठी सिनिअर सुपरवायझर म्हणून डॉ.रणजित कदम व ज्युनिअर सुपरवायझर म्हणून प्रा.कैलास अस्तरकर यांनी काम पाहिले. परीक्षा घेताना कोविडच्या वातावरणामुळे विद्यापीठाने दिलेल्या नियमांचे पालन करून परीक्षा घेतल्या.

शैक्षणिक वर्ष २०२०-२१ मधील बी.ए. टर्म अॅन्डची परीक्षा



बी.ए., बी.कॉम. व बी.बी.ए.(सी.ए.) या वर्गातील रेग्युलर व बॅकलॉग परीक्षा दिनांक ११-०१-२०२१ ते १९-०१-२०२१ कालावधीत घेण्यात आल्या.

तसेच कोविडच्या वाढत्या प्रभावामुळे बी.ए., बी.कॉम. बी.बी.ए.(सी.ए.)च्या प्रथम सत्रांत परीक्षा विद्यापीठाने एप्रिल/मे या कालावधीत ऑफलाईन पद्धतीने घेण्यात आल्या. द्वितीय सत्रातील बी.ए., बी.कॉम., बी.बी.ए.(सी.ए.) या शाखेतील अंतर्गत परीक्षा या बरोबरच याच वर्गातील जे विद्यार्थी बॅकलॉग आहेत, त्यांच्या अंतर्गत परीक्षा ऑफलाईन पद्धतीने दिनांक ०१/०६/२०२१ ते १२-०६-२०२१ या कालावधीत घेण्यात आल्या. वर्षभरात परीक्षेचे फॉर्म भरण्यासाठी विद्यार्थ्यांना फॉर्म भरण्याची सुरू झालेली तारीख आणि शेवटची तारीख यांच्या संदर्भातील सूचना नोटीस बोर्डवर जाहीर केल्या.

विद्यापीठाचा निकाल जाहीर झाल्यावर विद्यार्थ्यांना स्वतः निकाल घेऊन जाण्यासाठी सूचना नोटीस बोर्डवर लावण्यात आल्या. विद्यार्थ्यांना परीक्षा प्रमाणपत्र मिळवण्यासाठी फॉर्म भरण्यासाठीची सूचना नोटीस बोर्डवर लावण्यात आल्या. शैक्षणिक वर्षातील गुणवंत विद्यार्थ्यांची नावे नोटीस बोर्डवर लावण्यात आली. शैक्षणिक वर्षातील सर्व विषयांचा तसेच सर्व शाखांचा एकूण निकाल जाहीर केला. अशा पद्धतीने वर्षभरातील परीक्षांचे नियोजन करून परीक्षा घेतल्या.

परीक्षा विभागाचे काम करीत असताना अनेकांचे सहकार्य लाभले. त्यामध्ये प्रा. कैलास अस्तरकर, प्रा. कृष्णा मिटकरी, डॉ. रणजित कदम, प्रा. प्रेरणा पाटील, परीक्षा विभागासाठी लिपिक म्हणून काम करणारे प्रा. चाँदपाशा मुल्ला, सौ. वर्षा ताजने व श्री. वैभव बडवे इत्यादींचे सहकार्य मिळाले.

उल्लेखनीय बाब म्हणजे महाविद्यालयाचे डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांचे वेळोवेळी मार्गदर्शन व सहकार्य लाभल्यामुळे परीक्षा विभाग, परीक्षा विभागाची अवघड वाटणारी जबाबदारी व्यवस्थित पार पाडू शकलो.

**प्रा. संजीव कांबळे**

परीक्षा विभाग प्रमुख

## रॅगिंग प्रतिबंधक समिती

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२०२० व २०२०-२१ महाविद्यालय परिसरामध्ये विद्यार्थी भीती व तणावमुक्त वातावरणात राहण्यासाठी रॅगिंग प्रतिबंधक समिती नियुक्त करण्यात आली होती. समितीमार्फत प्रवेश अर्जासोबत प्रत्येक विद्यार्थ्यांना महाविद्यालयीन अॅन्टी रॅगिंग कायद्याबाबत माहिती व्हावी म्हणून रॅगिंग कायदा, रॅगिंगचे स्वरूप व शिक्षा याबाबतचे परिपत्रक वाटप करून प्रत्येक विद्यार्थ्यांकडून अॅन्टी रॅगिंगचे फॉर्म भरून घेण्यात आले. त्यामुळे विद्यार्थी त्याबाबत अधिक जागृत झाले.

महाराष्ट्र रॅगिंग प्रतिबंधक अधिनियम कायद्यानुसार महाविद्यालयात विद्यार्थ्यांकडून कोणत्याही विद्यार्थ्यांचा शारीरिक, मानसिक छळ, लैंगिक गैरवर्तन किंवा गुन्हेगारी स्वरूपाचा दबाव आणणे, आर्थिक शोषण, खंडणी मागणे इत्यादी कारणांमुळे रॅगिंग घडून येऊ शकते.

वरीलप्रमाणे कोणताही गुन्हा केल्यास सदर विद्यार्थ्यांला रॅगिंग प्रतिबंधक गुन्हा नियमानुसार त्याचा प्रवेश रद्द करणे, महाविद्यालय परिसरात प्रवेश बंदी घालणे, गुन्हेगारी कृत्याविरूद्ध कायदेशार पोलिस कारवाई करणे इत्यादी कार्य केले जाते.

महाविद्यालयात रॅगिंगचा कोणताही प्रकार घडू नये म्हणून मा.प्राचार्यांच्या अध्यक्षतेखाली रॅगिंग प्रतिबंधक समिती स्थापन करण्यात आली. यामध्ये डॉ. विशाल गायकवाड, प्रा. शाहुराज येवते, प्रा. दिलिप बारी, प्रा. संजीव कांबळे यांची नियुक्ती करण्यात आली होती. विद्यार्थीनींची छेडछाड व त्यांच्याबरोबर कोणतेही गैरवर्तन घडू नये म्हणून दामिनी भरारी पथक महाविद्यालयात वारंवार भेट देत होते. पोलिस काका, फलक तसेच अॅन्टी रॅगिंग कायदा स्वरूप व शिक्षा यांचेदेखील फलक महाविद्यालयाच्या परिसरात लावण्यात आले.

संस्थेचे खजिनदार श्री. मयुर ढमाले यांचे मार्गदर्शन व प्राचार्यांच्या सूचना तसेच समितीतील सदस्यांनी जागरूकपणे व सतर्क राहून कार्य केल्यामुळे महाविद्यालयात कोणताही रॅगिंगचा अनुचित प्रकार घडला नाही.

### डॉ. विशाल गायकवाड

रॅगिंग प्रतिबंधक समिती प्रमुख

## बी.बी.ए.(सी.ए.) विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ मध्ये बी.बी.ए.(सी.ए.) विभाग विकासासाठी व विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकास व गुणवत्ता वाढीसाठी या चालू शैक्षणिक वर्षात विविध कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

४ फेब्रुवारी २०२१ रोजी विद्यार्थ्यांच्या बौद्धिक व सर्वांगीण विकासासाठी महाविद्यालयाकडून विविध कंपन्यांमध्ये नोकरीच्या संधी उपलब्ध करून देण्यासाठी महाविद्यालयाकडून Resume

writing, Technical skill improvement संदर्भात विविध सेमिनार घेण्यात आले.

तसेच इंग्रजी भाषा सुधारण्यासाठी स्पोकन इंग्रजीचे प्रशिक्षण देण्यात आले. ९ मे २०२१ पासून महाविद्यालयात 'विद्यार्थी-पालक दत्तक योजना' सुरू करण्यात आली.

अशाप्रकारे वरील सर्व कार्यक्रमांमुळे विद्यार्थ्यांची बी.बी.ए.(सी.ए.) कोर्स विषयी आवड निर्माण झाली. याचा उपयोग पुढील शैक्षणिक वर्षासाठी होईल अशी अपेक्षा आहे.

बी.बी.ए.(सी.ए.) विभागाला वेळोवेळी महाविद्यालयाचे नव-निर्वाचित प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात तसेच प्राधापकेतर कर्मचारी यांचे बहुमोल मार्गदर्शन व सहकार्य लाभते.

### प्रा. शाहुराज येवते

बी.बी.ए.(सी.ए.) विभाग प्रमुख

## अर्थशास्त्र विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ मध्ये अर्थशास्त्र विभागांतर्गत बी.ए., बी.कॉम. व पदव्युत्तर वर्गांमध्ये अर्थशास्त्र असणाऱ्या विद्यार्थ्यांसाठी विशेष मार्गदर्शनपर व्याख्यान आयोजित करण्यात आली होती.

अर्थशास्त्र विषयाची गोडी वाढावी म्हणून चालू आर्थिक वर्षातील चालू घडामोडीतील महत्त्वाच्या विषयावर जसे जी.एस.टी., बँक व्यवसायातील नवीन तंत्रज्ञान, आंतरराष्ट्रीय व्यापारातील बदल यावर चर्चासत्र व गटचर्चा घेण्यात आली. विद्यार्थ्यांना अर्थशास्त्राचे सखोल व अद्ययावत ज्ञान प्राप्त व्हावे यासाठी ग्रंथालयाच्या माध्यमातून दर्जेदार पुस्तके उपलब्ध करण्यात आली. अर्थशास्त्र विषयाच्या वेगवेगळ्या आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय चर्चासत्र व कार्यशाळांमध्ये विभागातील प्रा. कैलास अस्तरकर यांनी अरिहंत कला व वाणिज्य महाविद्यालय, पुणे राष्ट्रीय चर्चासत्रामध्ये 'Roll of financial inclusion in India' तसेच मातोश्री कला व वाणिज्य महाविद्यालय, नेरळ, रायगड या ठिकाणी 'Nationalized Banks Scheme in India' विषयावर शोधनिबंध सादर केले तर डॉ. विशाल गायकवाड यांनी बाबुरावजी घोलप महाविद्यालय (सांगली) या ठिकाणी 'बँक व्यवसाय आणि गैरनिष्क्रीय मालमत्ता समस्या' या विषयावर पेपर सादर केला.

अर्थशास्त्र विभागाने राबविलेल्या सर्व उपक्रमांमध्ये विभागातील सहकारी प्रा. कैलास अस्तरकर व प्रा. परमेश्वर भताशे यांनी मोलाचे सहकार्य केले. तसेच महाविद्यालयाचे प्राचार्यांनी अर्थशास्त्र विभागाच्या कार्यक्रमांना वेळोवेळी मार्गदर्शन केले.

### डॉ. विशाल गायकवाड

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख



## मराठी विभाग अहवाल

श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाचे, शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२०२१ मराठी विभागाच्या वतीने महाविद्यालयात 'मराठी साहित्य अविष्कार मंडळांची' स्थापना मराठी विभागात करण्यात आली. मराठी साहित्य विभागाच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांना वाङ्मयीन प्रवाहाचे ज्ञान व्हावे, त्याचप्रमाणे मराठी विषयात भाषिक कौशल्य आत्मसाथ व्हावे, विद्यार्थ्यांमध्ये आपुलकी, प्रेम, अस्था, जिव्हाळा, आवड, अभिरूची निर्माण व्हावी व विद्यार्थ्यांना मुक्त व्यासपीठ निर्माण व्हावे यासाठी निबंध, वक्तृत्व, वादविवाद, कथाकथन, काव्यवाचन-लेखन व गायन इत्यादी स्पर्धांचे आयोजन केले जाते. तसेच मराठी भाषादिन, मराठी भाषा पंधरवडा, जागतिक महिला दिन इत्यादी उपक्रम राबविण्यात आले.

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाचे मराठी विभाग प्रमुख डॉ. तुकाराम रोंगटे, डॉ. संदिप सांगळे, उपप्राचार्य, तळेगाव ढमढेरे कॉलेज इत्यादी त्यांनी महाविद्यालयास भेट देऊन विद्यार्थ्यांना बहुमोल मार्गदर्शन केले. त्यामुळे माहिती तंत्रज्ञान युगात मराठीचे महत्त्व, गरज इत्यादीबाबत विद्यार्थ्यांना योग्य मार्गदर्शन मिळाले. विद्यार्थ्यांची अभिरूची वृद्धिंगत झाली.

**डॉ. पांडुरंग मिसाळ**  
मराठी विभाग प्रमुख

## स्त्रियांवरील लैंगिक छळवाद विरोधी अंतर्गत तक्रार निवारण समिती

श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाचे, शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात स्त्रियांवरील लैंगिक छळवाद विरोधी अंतर्गत तक्रार निवारण समितीची स्थापना व सभा महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात यांच्या अध्यक्षतेखाली संपन्न झाली.

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२०२१ मध्ये सर्व महिला प्राध्यापिकांसाठी सभा घेतली गेली. यामध्ये सर्व महिला प्राध्यापिकांना विश्वासात घेऊन समस्या विचारण्यात आल्या. या सभेत सर्व महिलांना मनमोकळेपणाने बोलण्याची संधी देण्यात आली. त्यांना स्वरक्षणाबाबत योग्य ते मार्गदर्शन केले.

महिला संबंधित तक्रारींचे निवारण करण्यासाठी पोलिस महिला भरारी पथकाकडून वेळोवेळी भेट दिली जाते.

**प्रा. अनिता भालेराव**  
समिती प्रमुख



## ग्रंथालय समिती अहवाल

ग्रंथालय म्हणजे महाविद्यालयाचा अविभाज्य घटक नव्हे तर त्यास महाविद्यालयाचा आत्मा संबोधले जाते. या ग्रंथालयरूपी आत्म्यास बळकटी देण्याचे काम ज्ञानरूपी ग्रंथांच्या माध्यमातून सातत्याने केले जाते आहे. महाविद्यालयाच्या ग्रंथालयात शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० मध्ये ७०८४ इतकी ग्रंथसंख्या उपलब्ध आहे. तसेच वाचकांना दैनंदिन घडामोडींची माहिती उपलब्ध व्हावी यासाठी दैनिक वृत्तपत्रांची उपलब्धता करून देण्यात आली आहे. स्पर्धा परिक्षांसाठी माहिती उपलब्धतेसाठी एकूण चार मासिकांची सोय उपलब्ध आहे.

शैक्षणिक वर्ष २०२०-२०२१ मध्ये नवीन अभ्यासक्रमानुसार ग्रंथ खरेदी करण्यात आले असून एकूण ग्रंथसंख्या ७३७२ इतकी उपलब्ध आहे. कोरोना काळात म्हणजे मार्च २०१९ ते आजपर्यंतच्या निर्बंधांचे पालन करण्यासाठी विद्यार्थी वाचक ग्रंथापासून ग्रंथालयाकडून मिळणाऱ्या सेवांपासून वंचित राहून नये यासाठी अभ्यासक्रमांच्या पाठ्यपुस्तकांचे PDF तयार करून ते विद्यार्थ्यांपर्यंत पोहचवण्याचे काम ग्रंथालय विभागातर्फे सुरू आहे. तसेच E-Book खरेदीचा उपक्रमही राबवला जात आहे.

**प्रा. शैला वाळुंज**  
ग्रंथपाल

## राज्यशास्त्र विभाग अहवाल

शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात शिक्षण घेणाऱ्या कला शाखेतील प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्षांच्या अभ्यासक्रमाव्यतिरिक्त राजकीय घडामोडी तसेच स्पर्धात्मक परीक्षेचे सखोल व अद्ययावत ज्ञान प्राप्त व्हावे यासाठी राज्यशास्त्र विभाग सतत कार्यरत आहे.

राज्यशास्त्र विभागाच्या माध्यमातून विविध उपक्रम राबविले जातात. यामध्ये स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन, चर्चासत्रे, राजकीय घडामोडींचे विश्लेषण, विद्यार्थ्यांमध्ये नेतृत्व गुण विकसीत करण्यासाठी भाषण कौशल्य व विकास यांच्या वाढीसाठी विविध कार्यक्रम घेतले आहेत. विद्यार्थ्यांमध्ये वाचन संस्कृती रूजावी याकरिता ग्रंथालयांच्या माध्यमातून राज्यशास्त्र विभागातर्फे राजकीय विषयावरील साप्ताहिक मासिके व नियतकालिके उपलब्ध करून देण्यात आलेली आहेत. यासाठी राज्यशास्त्र विभागातील प्रा. बद्रीनाथ नागरे यांनी वेळोवेळी सहकार्य केले तसेच महाविद्यालयाचे मा. प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ (सन २०१९-२०) व विद्यमान प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात (२०२०-२१) यांचे सतत मार्गदर्शन व सहकार्य मिळाले.

**प्रा. माणिक कसाब**  
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

## प्रसिद्धी समिती अहवाल

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२०२१ मध्ये महाविद्यालयात घेण्यात आलेल्या कार्यक्रमांना प्रसिद्धी देऊन विद्यार्थी व त्यांच्यातील कलागुणांना तसेच महाविद्यालयातील विविध विभाग व समित्यांनी राबविलेल्या समाजाभिमुख उपक्रम लोकांपर्यंत पोहचविण्याचे कार्य प्रसिद्धी विभागाने केले आहे. यामध्ये प्रामुख्याने खालील महत्त्वपूर्ण उपक्रमांची नोंद घेता येईल.

- श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाच्या ३० व्या वर्धापन दिनानिमित्त विविध कार्यक्रमांचे आयोजन.
- स्वामी विवेकानंद जयंती निमित्त राष्ट्रीय सेवा योजना अंतर्गत 'युवा सप्ताह' निमित्त स्वच्छता अभियान, सामाजिक जनजागृती, महिला सबलीकरण, निबंध स्पर्धा व वादविवाद स्पर्धा अशा विविध कार्यक्रम व उपक्रमांचे आयोजन.
- लोकनेते मा. शरदचंद्र पवार साहेब यांच्या ७९व्या वाढदिवसानिमित्ताने घेण्यात आलेले विविध कार्यक्रम.
- स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन व स्वयंरोजगार या विषयावर आयोजित करण्यात आलेली व्याख्याने.
- राष्ट्रीय सेवा योजना हिवाळी शिबिरांतर्गत 'निमगाव दावडी' येथे स्वच्छतेविषयी सादर केलेले पथनाट्य, वृक्षारोपण, नदीघाट व स्मशानभूमी स्वच्छता, बांधलेले बंधारे, जनजागृती तसेच यांसारखे इतरही विविध कार्यक्रम.
- शिक्षणमहर्षी स्व. विलासराव तांबे साहेब यांच्या ७२ व्या जयंती निमित्त घेण्यात आलेले विविध उपक्रम.
- जागतिक महिला दिनानिमित्त घेण्यात आलेले विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम.
- क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले यांच्या १८८ व्या जयंतीनिमित्त 'मी महात्मा फुले बोलतोय' हा एकपात्री नाट्यप्रयोग घेण्यात आला.
- शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयाचा पदवीग्रहण समारंभ.
- राज्यशास्त्र विभागाने संविधान दिनाचे केलेले आयोजन.
- जागतिक मराठी भाषा दिनाचे औचित्य साधून काव्यवाचन या स्पर्धेचे केलेले आयोजन.
- महाविद्यालयाने 'अंतरंग २०२०' या नावाने वार्षिक स्नेहसंमेलनाचे केलेले आयोजन.
- राष्ट्रीय सेवा योजना वार्षिक पारितोषिक वितरण सोहळा. मागील संपूर्ण वर्षभरात व २०२०-२१ मध्ये कोरोना संकटाच्या काळात ऑनलाईन महाविद्यालयाने राबविलेल्या उपक्रमात व कार्यक्रमात उत्कृष्टरित्या कार्य करणाऱ्या स्थानिक व जिल्हा वृत्तपत्रातून लोकांपर्यंत पोहचवून एक प्रकारे त्यांना प्रोत्साहन दिले. त्यामुळे नकळतपणे महाविद्यालयाच्या प्रसिद्धीत भर पडली. या कार्यक्रमांमध्ये प्रा.कृष्णा मिटकर, प्रा. संजीव कांबळे व डॉ. विशाल गायकवाड यांचे मोलाचे सहकार्य मिळाले. तसेच महाविद्यालयाचे मा. प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ (२०१९-

२०) व प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात(२०२०-२१) यांचे बहुमोल मार्गदर्शन मिळाले.

**प्रा. माणिक कसाब**

प्रसिद्धी विभाग प्रमुख

## शैक्षणिक प्रवेश व नियोजन समिती

ग्रामीण भागातील अगदी तळागाळापर्यंत शिक्षणाचा प्रकाश उजळवण्याच्या उद्देशाने स्थापन झालेली श्री. गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ ही संस्था ते ब्रीद मनामध्ये सतत ठेवून आपण ज्ञानदानाचे कार्य अतिशय अभ्यासपूर्वक नियोजनातून करत आहोत. त्याचबरोबर जे शिक्षण आपण देऊ त्या माध्यमातून नंतर येथील विद्यार्थ्यांनी भविष्यात स्वतःसोबतच राष्ट्राच्याही प्रगतीत योगदान द्यावे असा आमचा प्रयत्न असतो. याची जाणीव आम्ही प्रवेश देतेवेळी प्रत्येक विद्यार्थ्याला करून देत असतो. शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ मध्ये महाविद्यालयाची प्रवेश प्रक्रिया विद्यापीठ शैक्षणिक कॅलेंडरनुसार जून महिन्यामध्ये सुरू करण्यात आली. विद्यापीठ सूचनेनुसार सर्व वर्गांचे प्रवेश प्रक्रिया महाविद्यालयाच्या संकेत स्थळावर ऑनलाईन पद्धतीने घेण्यात आली. महाविद्यालयीन प्रथम वर्ग (कला, वाणिज्य व बी.बी.ए.(सी.ए.)) प्रवेश क्षमता विचारात घेऊन गुणवत्तेच्या निकषानुसार इ.१२वी च्या मिळालेल्या टक्केवारीनुसार तीन टप्प्यात प्रवेश देण्यात आले. महाविद्यालयातील सर्व विद्याशाखा निहाय प्रवेश संख्यापुढील प्रमाणे आहे.

| विद्याशाखा                | २०१९-२०    | २०२०-२१    |
|---------------------------|------------|------------|
| पदवी - कला                | २३२        | २१५        |
| वाणिज्य ३२७               | ३०७        |            |
| बी.बी.ए.(सी.ए.)           | १४२        | १४५        |
| पदव्युत्तर वाणिज्य (I&II) | ९२         | ९१         |
| अर्थशास्त्र (I&II)        | २७         | २१         |
| इंग्रजी (I&II)            | २१         | ३०         |
| डी.टी.एल.                 | १९         | ४५         |
| <b>एकूण प्रवेश संख्या</b> | <b>८६०</b> | <b>८५४</b> |

वरीलप्रमाणे शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० मध्ये सर्व विद्याशाखांतील प्रवेश संख्या ८६० होती. तर २०२०-२१ मध्ये प्रवेश संख्या ८५४ होती. शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ मधील प्रवेश घेतलेल्या सर्व विद्यार्थी विद्यार्थ्यांनीना कल्याण व विकासासाठी महाविद्यालयातील कार्यरत विद्यार्थी विकास मंडळ, राष्ट्रीय सेवा योजना व विविध शिष्यवृत्तीबाबत माहिती देण्यात आली. संस्थेचे खजिनदार, श्री. मयुर ढमाले व मा.प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी संपूर्ण प्रवेश प्रक्रियेमध्ये वेळोवेळी मार्गदर्शन व सूचना दिल्या. तसेच प्रा. संजीव कांबळे, प्रा. माणिक कसाब, प्रा. शाहुराज येवते, डॉ.रणजित कदम, प्रा. दिलिप बारी, डॉ. छाया जोशी, प्रा. कृष्णा मिटकर व श्री. अनिल आमले यांचे सहकार्य लाभले.

**डॉ. विशाल गायकवाड**

समिती प्रमुख

## आरोग्य शिक्षण समिती अहवाल

विद्यार्थ्यांच्या आरोग्य हिताच्या दृष्टीने सावित्रीबाई फुले, पुणे विद्यापीठाने विद्यार्थ्यांची वैद्यकीय तपासणी सक्तीची केली आहे. त्यानुसार शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ या शैक्षणिक वर्षात ९ सप्टेंबर २०१९ व २० ऑक्टोबर २०२० मध्ये महाविद्यालयातील प्रथम वर्ष कला, वाणिज्य, बी.सी.ए., एम.ए., एम.कॉम. अशा सर्व विद्यार्थी व विद्यार्थिनींचे वैद्यकीय तपासणी शिबिर आयोजित करण्यात आले होते.

या प्रसंगी डॉ. ज्योती माटे व डॉ. स्मिता पाटील ह्या वैद्यकीय अधिकारी म्हणून उपस्थित होत्या. त्यांनी व त्यांच्या सहकारी डॉक्टरांनी तपासणीचे काम पाहिले.

या तपासणीस विद्यार्थ्यांकडून उत्तम प्रतिसाद मिळाला. त्यासोबतच विद्यार्थिनींचे रक्तगट व हिमोग्लोबीन तपासणी करण्यात आली. स्वतःच्या आरोग्याची काळजी स्वतः कशी घ्यावी यासाठी महाविद्यालयातील आरोग्य शिक्षण समिती वेळोवेळी मार्गदर्शन करीत असते.

**प्रा. दिपाली ताम्हाणे**  
समिती प्रमुख

## वाणिज्य प्रयोगशाळा समिती

वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ मध्ये महाविद्यालयाकडे वाणिज्य विभागासाठी लागणारे सर्व प्रकारचे शैक्षणिक साहित्य उपलब्ध आहे. वाणिज्य प्रयोगशाळेमार्फत विद्यार्थ्यांना वेळोवेळी योग्य ते सर्व मार्गदर्शन केले जाते व त्यांच्या समस्या सोडविल्या जातात. सध्याचे स्पर्धेचे युग लक्षात घेता विद्यार्थ्यांनी संगणकाच्या सहाय्याने बँक पतसंस्था व कंपन्यांमध्ये आर्थिक व्यवहाराच्या नोंदी कशा केल्या जातात, रेकॉर्ड कसे ठेवले जाते याविषयी प्रशिक्षण दिले जाते. यासाठी महाविद्यालयाचे प्राचार्य मा. डॉ. पांडुरंग मिसाळ व सर्व सहकाऱ्यांनी विशेष प्रयत्न केलेले आहेत.

**प्रा. कृष्णा मितकर**  
समिती प्रमुख

## जिमखाना समिती अहवाल

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ मध्ये सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ आणि शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय डुडुळगाव (आळंदी) यांच्या संयुक्त विद्यमाने महाविद्यालयामध्ये आंतरमहाविद्यालयीन स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. यामध्ये कबड्डी, खो-खो, व्हॉलीबॉल, क्रिकेट, बुद्धिबळ, कॅरम अशा खेळांमध्ये विद्यार्थ्यांनी चांगला सहभाग नोंदवला. अशा मैदानी आणि पारंपरिक खेळांच्या स्पर्धा घेऊन विद्यार्थ्यांमध्ये खेळांविषयी अभिरूची निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला जातो. विद्यार्थ्यांना दैनंदिन अभ्यासक्रम तासिकाबरोबर खेळाच्या संदर्भात व्याख्याने व मार्गदर्शनपर

शिबिरांचे आयोजन करण्यात आले. त्यामुळे विद्यार्थ्यांमध्ये चैतन्याचे वातावरण निर्माण होते. सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या विद्यापीठ स्तरीय, कुस्ती, बॉक्सींग, वेट-लिफ्टिंग अशा विविध खेळांमध्ये महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांचा सहभाग असतो.

या समितीच्या माध्यमातून विद्यार्थ्यांमध्ये खेळाची आवड निर्माण करून त्यांच्यामधल्या विविध कला गुणांना वाव देण्याचा प्रयत्न सातत्याने केला जातो.

**डॉ. रणजित कदम**

जिमखाना समिती प्रमुख

## वेळापत्रक समितीचा अहवाल

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ हे जूनमध्ये सुरू झाले. सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या नियमानुसार महाविद्यालयातील कला शाखा, वाणिज्य शाखा व बी.बी.ए. विभागासाठी वेळापत्रक तयार करण्यात आले.

स्पर्धा परीक्षा विशेष मार्गदर्शन योजना विद्यार्थ्यांनी व्यक्तिमत्त्व विकास, प्रात्यक्षिक परीक्षा, ज्ञानदीप व्याख्यानमाला व अभ्यासक्रमातील विषयासाठी विविध महाविद्यालयातील तज्ज्ञ व अनुभवी प्राध्यापकांची, विविध क्षेत्रातील नामांकित व्यक्तींची मार्गदर्शनपर व्याख्याने आयोजित करण्यात आली होती. तसेच एम.ए.इंग्लिश, एम.ए.इकॉनॉमिक्स, अर्थशास्त्र एम.कॉम. या वर्गासाठी स्किल डेव्हलपमेंट इन्ट्रोडक्शन टु सायबर सिक्युरिटी, ह्युमन राइट्स या विषयासाठी चर्चासत्र व तज्ज्ञ मान्यवरांची व्याख्याने आयोजित करण्यात आली. डी.टी.एल.च्या अभ्यासक्रमासाठी वेळापत्रक तयार करण्यात आले. या शैक्षणिक वर्षांमध्ये वेळापत्रकाप्रमाणे तास घेऊन प्राध्यापकांनी दिलेल्या वेळेत अभ्यासक्रम शिकवून पूर्ण केला.

**प्रा. कैलास अस्तरकर**

समिती प्रमुख

## स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन समिती

शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२१ मध्ये स्पर्धा परीक्षा समितीची स्थापना करण्यासाठी महाविद्यालयाच्या सभागृहामध्ये मा. प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांच्या अध्यक्षतेखाली सर्व प्राध्यापकांच्या उपस्थितीत आयोजित सभेमध्ये स्पर्धा परीक्षा समिती विभागाच्या प्रमुखपदी प्रा. कैलास अस्तरकर यांची निवड करण्यात आली.

३१ जानेवारी २०२० रोजी सक्सेस अॅकॅडमीचे प्रमुख श्री. श्रीराम यांचे स्पर्धा परीक्षा तयारी कशी करावी, या विषयावर मार्गदर्शनपर व्याख्यान आयोजित करण्यात आले.

त्यांनी सरळसेवा भरती तयारी करण्यासंबंधी मौलिक मार्गदर्शन केले.

महाविद्यालयात बी.कॉम., बी.ए., बी.सी.ए. नंतर करिअर गाईडन्ससाठी विविध व्याख्याने आयोजित करण्यात आली. नियमित तासिकाच्या व्यतिरिक्त विद्यार्थ्यांना बँकींग, सी.ए., सी.एस., आर. सी.डब्ल्यू.ए., एम.बी.ए. पोलीस भरती, तलाठी भरती यांसारख्या परिक्षांना सामोरे जाण्यासाठी तज्ज्ञ व्यक्तींची व्याख्याने वेळोवेळी आयोजित केली जातात. वरील सर्व व्याख्यांना विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उत्स्फूर्तपणे सहभाग नोंदवतात.

अशाप्रकारे स्पर्धा परीक्षा समिती वर्षभर कार्यरत आहे. या समितीसाठी वेळोवेळी महाविद्यालयांचे संस्थापक, संचालक, प्राचार्य, प्राध्यापक स्पर्धा परीक्षा समितीचे सदस्य व प्राध्यापकेतर कर्मचारी यांचे बहुमोल सहकार्य लाभले त्यांचा मी मनःपूर्वक आभारी आहे.

**प्रा. कैलास अस्तरकर**  
समिती प्रमुख

### स्त्रियांवरील लैंगिक छळवादविरोधी अंतर्गत तक्रार निवारण समिती



श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाचे शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात स्त्रियांवरील लैंगिक छळवादविरोधी अंतर्गत तक्रार निवारण समितीची स्थापना व पहिली सभा 04/08/2019 रोजी सकाळी 11.30 वा. महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांच्या अध्यक्षतेखाली संपन्न झाली.

शैक्षणिक वर्ष 2019-20 व 2020-2021 मध्ये सर्व महिलांसाठी सभा घेतली गेली. यामध्ये सर्व महिला प्राध्यापिकांना विश्वासात घेऊन समस्या विचारण्यात आल्या. व त्यांच्या समस्यांचे निवारण करण्यात आले. महाविद्यालयातील विद्यार्थीनींना निर्भिडपणे वावरता यावे तसेच त्यांच्या अडचणीचे निवारण व्हावे; या हेतूने महिन्याच्या शेवटी महाविद्यालयातील सर्व मुलींसाठी एक सभा ठेवली जाते. या सभेत त्यांना त्यांच्या समस्या मांडण्याची संधी दिली जाते व त्यांचे निवारण केले जाते.

अशाप्रकारे संपूर्ण वर्षभर महाविद्यालयात शिस्तबद्ध रीतीने काम केले जाते व यासाठी सर्व सदस्यांचेही सहकार्य लाभले.

**प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ**  
समिती प्रमुख

### रांगोळी समिती अहवाल



भारतीय संस्कृतीमध्ये रांगोळीचे असलेले महत्त्व लक्षात घेऊन शैक्षणिक वर्ष 2019-20 व 2020-2021 मध्ये महाविद्यालयातील विविध उपक्रम व कार्यक्रमांमध्ये सतत सतर्क राहून बोधात्मक अशा कलाकृतीने म्हणजेच रांगोळीद्वारे त्या दिवसाचे महत्त्व अधिक व्यापक पद्धतीने रेखाटता आले. तसेच महाविद्यालयात महिला दिनानिमित्त अनेक स्पर्धा घेण्यात आल्या. त्यात रांगोळी स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. या स्पर्धेमध्ये मोठ्या प्रमाणात विद्यार्थी, विद्यार्थीनींनी सहभाग घेतला व उत्कृष्टरित्या रांगोळीचे रेखाटन केले. अशा विद्यार्थ्यांचा प्रमाणपत्र देऊन गौरव करण्यात आला.

या उपक्रमांमध्ये महाविद्यालयातील मा. प्राचार्य, प्राध्यापक, शिक्षकेतर कर्मचारी व विद्यार्थ्यांचे सहकार्य लाभले.

**प्रा. दिपाली ताम्हाणे**  
समिती प्रमुख

### सांस्कृतिक विभाग अहवाल

सांस्कृतिक समितीने शैक्षणिक वर्ष 2019-20 व 2020-2021 मध्ये अनेक शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, स्पर्धात्मक असे वैचारिक व गुणात्मक कार्यक्रम आयोजित केले होते.

श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ ओतूर या संस्थेच्या वर्धापन दिनानिमित्त निबंध स्पर्धा आयोजित करण्यात आली तसेच डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन यांच्या जयंती निमित्त शिक्षक दिन व गीतगायन स्पर्धा आयोजित केली होती.

महाविद्यालयात श्री. गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ ओतूर या संस्थेचे संस्थापक, अध्यक्ष शिक्षणमहर्षि स्व. विलासराव तांबे सर यांच्या 62 व्या जयंती निमित्त ज्ञानदीप व्याख्यान मालेचे चौथे वर्ष साजरे करण्यात आले.

2020-21 मध्ये लोकनेते मा. श्री. शरदचंद्र पवार साहेब यांच्या वाढदिवसानिमित्त 'ज्ञानविलास' ऑनलाईन राज्यस्तरिय वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित करण्यात आली. या स्पर्धेत महाराष्ट्रातील 180 विद्यार्थ्यांनी सहभाग नोंदविला होता.

महाविद्यालयातील पथनाट्यांचा विद्यार्थ्यांचा संघ विविध महाविद्यालयात सहभागी झाला तसेच गीतगायन, राज्यस्तरीय स्पर्धेत महाविद्यालयातील संघाला उत्तेजनार्थ क्रमांक मिळाला. याशिवाय संस्थेत गुरूपौर्णिमा, महात्मा गांधी जयंती, भारतीय संविधान दिन, सावित्रीबाई फुले जयंती, स्वामी विवेकानंद जयंती, आंतरराष्ट्रीय महिला दिन साजरा केला गेला. विशेष म्हणजे शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० मध्ये महाविद्यालय स्थापनेपासूनच तिसरे वार्षिक स्नेहसंमेलन अंतरंग २०१९-२० घेण्यात आले. यातील ४५ कार्यक्रमात जवळपास १०० विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेतला. या सर्वच उपक्रमांना चांगला प्रतिसाद मिळाला.

**प्रा. परमेश्वर भताशे**

समिती प्रमुख

### वार्षिक दिनदर्शिका समिती अहवाल

श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाच्या शरदचंद्र पवार महाविद्यालयात शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० व २०२०-२०२१ मध्ये होणाऱ्या कार्यक्रमाचा तारखानिहाय उल्लेख वार्षिक दिनदर्शिकेमध्ये केलेला असतो. या दिनदर्शिकेमध्ये महाविद्यालयातर्गत व सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ अंतर्गत होणाऱ्या परीक्षांच्या तारखांचा उल्लेख केलेला असतो.

यामध्ये विद्यार्थी विकास कल्याण मंडळांतर्गत होणाऱ्या कार्यक्रमांच्या सप्ताहांचा उल्लेख केलेला असतो. राष्ट्रीय सेवा योजनेतर्गत होणाऱ्या श्रमसंस्कार शिबिर सप्ताहांचा उल्लेख केलेला असतो. तसेच या दिनदर्शिकेमध्ये विद्यापीठीय सुट्ट्यांचा आणि प्रत्येक महिन्यात सादर करण्यात येणाऱ्या जयंती व पुण्यतिथीचा समावेश असतो. म्हणून महाविद्यालयातील सर्व कामकाजाचे नियोजन करण्यासाठी वार्षिक दिनदर्शिकेचा सर्वांना उपयोग होतो. महाविद्यालयाची वार्षिक दिनदर्शिका सर्वांसाठी उपयुक्त आहे. २०१९-२० या वर्षाची महाविद्यालयातील वार्षिक दिनदर्शिका बनविण्यासाठी सर्वांचे सहकार्य लाभले.

**प्रा. परमेश्वर भताशे**

समिती प्रमुख

### Department of English & English Language Development Committee

The department of English has been organizing student oriented activities along with curricular activities since establishment.

The activities of the department begun with great zeal and enthusiasm in the academic year 2018-19. The activities and programmes were inaugurated by the speech of hon. Mayur Dhamale, the director of our institution under the English Language Development Committee (2018-19).

Dr. Joshi C. K. organized and conducted extra lectures on grammar for the students who are preparing for the competitive exams like M.B.A. / M.P.S.C./ STI/ PSI throughout the whole year. The faculties of the department have been successfully conducting English Speaking activities for proficiency and competence in English Language for the students of U.G. and P.G. Remedial teaching course was conducted by Prof. Reshma Landge & Prof. Vyavahare V. J. The guidance of personality development and soft skills as well as communication skills was given to the students by department faculties through the academic year. Dr. Joshi C. K. (Head of Dept.), Prof. Landge R. R. and Prof. Vyavahare V. J. have been working on this thought, the whole year.

All the students of special as well as compulsory English actively participated in all the activities with interest and enthusiasm.

In the academic year 2020-21 all the activities, programmes as well as courses were conducted through online mode due to pandemic situation Dr. Joshi C. K. (Head of the Dept.), Prof. Dolas P. D. , Prof. Sutar S. P. conducted online activities and courses through zoom, Goggle form and Goggle classroom. In the academic year 2020-21 through online mode also the students response was good.

Our Hon. principle Dr. P. U. Misal (2019-20) and Dr. Hansraj Thorat (2020-21) have co-operated and motivated for the success of all the activities and programmes

**Dr. Chhaya Joshi**

Head, Department of English



## प्राध्यापक व शिक्षकेत्तर सेवक वर्ग

| वाणिज्य शाखा                  |                           |  |
|-------------------------------|---------------------------|--|
| क्र. प्राध्यापकाचे नाव        | हुद्दा                    | शैक्षणिक पात्रता   |
| १. प्राचार्य डॉ. हंसराज थोरात | प्राचार्य                 | एम.कॉम.(अॅड. अकौंटिंग अॅड अॅड. कॉस्टिंग, एम.कॉम. (टॅक्सेशन अॅड को-ऑपरेशन), एम.फिल.,जी.डी.सी.अॅन्ड ए., पीएच.डी., डी. लिट. |
| २. डॉ. रणजित कदम              | वाणिज्य विभाग प्रमुख      | एम.कॉम.,एम.फिल., पीएच.डी.,सेट जी.डी.सी.अॅड ए.,बी.एड.,एम.बी.ए.,डी.टी.एल.  |
| ३. प्रा. कृष्णा मितकर         | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.कॉम.,एम.फिल.,सेट.जी.डी.सी.अॅड ए.  |
| ४. प्रा. दिलीप बारी           | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.कॉम., बी.एड.,नेट,सेट.   |
| ५. प्रा.दिपाली ताम्हाणे       | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.कॉम., जी.डी.सी.अॅड ए.   |
| ६. प्रा. सरिता भंडारी         | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.कॉम., एम.फिल.,नेट, सेट,जी.डी.सी.अॅड ए.  |
| संगणक शाखा                    |                           |  |
| १. प्रा. शाहूराज येवते        | संगणक शाखा प्रमुख         | एम.सी.ए.(व्यवस्थापन)   |
| २. प्रा. प्रेरणा पाटील        | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.एस्सी.(संगणक शाखा)  |
| ३. प्रा. सोनाली अभंग          | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.एस्सी.(संगणक शाखा)  |
| ४. प्रा. करिश्मा सातपुते      | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.ई. (माहिती तंत्रज्ञान)  |
| ५. प्रा. धनश्री चिखलीकर       | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.सी.ए. (व्यवस्थापन)  |
| कला शाखा (मराठी विभाग)        |                           |  |
| १. डॉ. पांडुरंग मिसाळ         | मराठी विभाग प्रमुख        | एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी.,नेट   |
| २. प्रा. संजीव कांबळे         | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.ए.,सेट,नेट  |
| इंग्रजी विभाग                 |                           |  |
| १. डॉ. छाया जोशी              | इंग्रजी विभाग प्रमुख      | एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी.   |
| २. प्रा. संतोष सुतार          | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.ए.  |
| ३. प्रा. प्रविण डोळस          | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.ए.  |
| अर्थशास्त्र विभाग             |                           |  |
| १. डॉ.विशाल गायकवाड           | अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख  | एम.ए., एम.फिल.,पीएच.डी.,सेट  |
| २. प्रा. कैलास अस्तरकर        | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.ए., एम.फिल.,नेट   |
| ३. प्रा. परमेश्वर भताशे       | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.ए.एम.फिल.   |
| राज्यशास्त्र विभाग            |                           |  |
| १. प्रा. माणिक कसाब           | राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख | एम.ए.,नेट  |
| २. प्रा. बद्रीनाथ नागरे       | सहाय्यक प्राध्यापक        | एम.ए.  |
| भूगोल विभाग                   |                           |  |
| १. प्रा. चांदपाशा मुल्ला      | भूगोल विभाग प्रमुख        | एम.ए.,बी.एड.,डी.टी.एल.   |
| ग्रंथालय विभाग                |                           |  |
| १. प्रा. शैला वाळुंज          | ग्रंथपाल                  | एम.ए.,एम.लिब., सेट, एम.एस. सी.आय.टी.   |
| कार्यालयीन विभाग              |                           |  |
| क्र. शिक्षकेत्तर सेवकाचे नाव  | हुद्दा                    | शैक्षणिक पात्रता   |
| १. श्री. अनिल आमले            | अधीक्षक                   | एम.बी.एस्सी.   |
| २. श्री. प्रविण भावे          | लेखापाल                   | एम.कॉम.  |
| ३. सौ.वर्षा ताजणे             | कनिष्ठ लिपिक              | एम.ए., टॅली  |
| ४. श्री. आनंद मोरे            | संगणक प्रयोगशाळा सहाय्यक  | बी. एस्सी.   |
| ५. श्री. विनोद मोगल           | शिपाई                     | आठवी   |
| ६. श्री. वैभव बडवे            | शिपाई                     | नववी   |





## विविध स्पर्धा व विजेते

७३ व्या स्वातंत्र दिनानिमित्त पोस्टर प्रदर्शन स्पर्धा (१५ ऑगस्ट २०१९-२०)

शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय

कला शाखा : प्रथम तीन क्रमांक

| क्र. नाव            | वर्ग           | विषय     |
|---------------------|----------------|----------|
| १. अर्पिता शिवनेरकर | प्रथम वर्ष कला | देशभक्ती |
| २. अभिषेक गणगे      | प्रथम वर्ष कला | देशभक्ती |
| ३. मंजू भाडाळे      | प्रथम वर्ष कला | निसर्ग   |

वाणिज्य शाखा : प्रथम तीन क्रमांक

|                 |                      |                   |
|-----------------|----------------------|-------------------|
| १. धनश्री वाजे  | प्रथम वर्ष वाणिज्य   | स्त्रीभ्रूण हत्या |
| २. मोनाली माने  | प्रथम वर्ष वाणिज्य   | देशभक्ती          |
| ३. वैभव वाघमारे | द्वितीय वर्ष वाणिज्य | पर्यावरण          |

बी.बी.ए.(सी.ए.) शाखा : प्रथम तीन क्रमांक

|                       |                              |           |
|-----------------------|------------------------------|-----------|
| १. ज्ञानेश्वरी कोतवाल | प्रथम वर्ष -बी.बी.ए.(सी.ए.)  | बेटी बचाव |
| २. अश्विनी कपले       | तृतीय वर्ष - बी.बी.ए.(सी.ए.) | देशभक्ती  |
| ३. प्रतिक्षा बवले     | प्रथम वर्ष - बी.बी.ए.(सी.ए.) | देशभक्ती  |

रामचंद्र पाटील औटी कनिष्ठ महाविद्यालय

इ. ११वी १२वी कला वाणिज्य व विज्ञान शाखेतील प्रथम तीन क्रमांक

|                 |                |                   |
|-----------------|----------------|-------------------|
| १. वर्षा खराडे  | १२ वी. वाणिज्य | देशभक्ती          |
| २. एकता राजगुरव | १२ वी. वाणिज्य | जागतिक तापमान वाढ |
| ३. वैभव बोंद्रे | ११ वी. कला     | देशभक्ती          |

राज्यस्तरीय ऑनलाईन ज्ञानविलास वक्तृत्व स्पर्धा २०२०

अंतिम निकाल

| क्र.नाव           | वर्ग                 | विषय                                  | महाविद्यालयाचे नाव                                |
|-------------------|----------------------|---------------------------------------|---|
| १ ऋषिकेश पवार     | टी.वाय.बी.एस्सी.     | खा. शरदचंद्रजी पवार सामाजिक योगदान    | कृषी महाविद्यालय बारामती, पुणे                    |
| २ हर्षवर्धन आलासे | टी.वाय.बी.ए.         | लोकशाहीचा चौथा स्तंभ ढासळत आहे का ?   | शांतीनिकेतन स्टडी सेटर, सांगली                    |
| ३ संजना बंडी      | एफ.वाय.बी.कॉम.       | कोरोना : संकट की संधी                 | महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे            |
| ४ भास्कर शिवले    | बी.बी.ए. (चौथे वर्ष) | दुर्लक्षित कृषिक्षेत्र : कारणे व उपाय | कृषी महाविद्यालय, नारायणगाव                       |
| ५ अमृता लोणारी    | टी.वाय.बी.एस्सी.     | खा. शरदचंद्रजी पवार राजकीय योगदान     | एम.आय.टी.कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आळंदी |

कॅरम स्पर्धा निकाल - मुली (प्रथम तीन क्रमांक)

|   |               |                |
|---|---------------|----------------|
| १ | ऋतुजा पाटील   | एस.वाय.बी.कॉम. |
| २ | अंजली कांबळे  | टी.वाय.बी.कॉम. |
| ३ | सानिया मुलाणी | एफ.वाय.बी.कॉम. |

कॅरम स्पर्धा निकाल - मुले (प्रथम तीन क्रमांक)

|   |               |                |
|---|---------------|----------------|
| १ | मुरलीधर राठोड | एफ.वाय.बी.कॉम. |
| २ | आनंद ठोसर     | एस.बाय.बी.कॉम. |
| ३ | धिरज वहिले    | एफ.वाय.बी.कॉम. |

## EXAMINATION RESULTS

Heartiest Congratulations to All B. A. Students \* Academic Year - 2019-20

### F. Y. B. A.

| No. | Seat No. | Students Name     | Credit Point |
|-----|----------|-------------------|--------------|
| 1   | 23315    | Gopal Ghuge       | 162          |
| 1   | 23347    | Arpita Shivanekar | 162          |
| 1   | 23356    | Akash Tengale     | 162          |
| 1   | 23363    | Radhika Vahile    | 162          |
| 2   | 23320    | Nikita Hole       | 159          |
| 2   | 23348    | Sunita Shriram    | 159          |
| 2   | 23353    | Simran Tamboli    | 159          |
| 2   | 23357    | Rutuja Thakur     | 159          |
| 2   | 23361    | Sonali Thosar     | 159          |
| 3   | 23306    | Shila Bidve       | 156          |
| 3   | 23328    | Ramdas Karhale    | 156          |

### S. Y. B. A.

| No. | Seat No. | Students Name    | Marks(600) | Percentage % |
|-----|----------|------------------|------------|--------------|
| 1   | 20527    | Shivkanya Shelke | 560        | 93.33        |
| 2   | 20519    | Neha Kumari      | 530        | 88.33        |
| 3   | 20525    | Rutuja Sangve    | 520        | 86.66        |

### T. Y. B. A.

| No. | Seat No. | Students Name   | Marks(1200) | Percentage % |
|-----|----------|-----------------|-------------|--------------|
| 1   | 20591    | Shubham Sawant  | 985         | 82.08        |
| 2   | 20585    | Komal Pawar     | 953         | 79.41        |
| 3   | 20580    | Ashwini Kurhade | 972         | 77.66        |

### M. A. Economics I

| No. | Seat No. | Students Name   | Credit Point |
|-----|----------|-----------------|--------------|
| 1   | 22171    | Sangita Joshi   | 272          |
| 2   | 22165    | Supriya Gaikwad | 268          |
| 3   | 22169    | Poonam Pawar    | 268          |

### M. A. English I

| No. | Seat No. | Students Name | Credit Point |
|-----|----------|---------------|--------------|
| 1   | 22158    | Anagha Barde  | 276          |
| 2   | 22160    | Nitu Sharma   | 264          |
| 3   | 22161    | Vinod Dengale | 264          |

### M. A. Economics II

| No. | Seat No. | Students Name    | Marks(1600) | Percentage % |
|-----|----------|------------------|-------------|--------------|
| 1   | 12300    | Aarti Thorve     | 1183        | 73.94        |
| 2   | 12301    | Pratiksha Vahile | 1168        | 73.00        |
| 3   | 12298    | Megha Chaudhary  | 1097        | 68.56        |

### M. A. English II

| No. | Seat No. | Students Name  | Marks(1600) | Percentage % |
|-----|----------|----------------|-------------|--------------|
| 1   | 12285    | Sonal Sonavane | 1207        | 75.44        |
| 2   | 12283    | Rohini Mahadik | 1144        | 71.50        |
| 3   | 12282    | Monika Bhagwat | 1141        | 71.31        |

## EXAMINATION RESULTS

Heartiest Congratulations to All Commerce Students \* Academic Year - 2019-20

### F. Y. B. Com.

| No. | Seat No. | Students Name    | Credit Point |
|-----|----------|------------------|--------------|
| 1   | 29788    | Yogita Bhadalkar | 205          |
| 2   | 28793    | Sakshi Chaudhari | 204          |
| 2   | 29809    | Prajakta Ghodke  | 204          |
| 3   | 29848    | Saniya Mulani    | 202          |

### S.Y.B. Com.

| No. | Seat No. | Students Name      | Marks(600) | Percentage % |
|-----|----------|--------------------|------------|--------------|
| 1   | 51934    | Namrata Thakur     | 532        | 88.66        |
| 2   | 51873    | Yogita Gawade      | 509        | 84.83        |
| 2   | 51903    | Dnyaneshwar Pagire | 509        | 84.83        |
| 3   | 51870    | Nikita Gawade      | 497        | 82.83        |

### T. Y. B. Com.

| No. | Seat No. | Students Name       | Marks(1200) | Percentage % |
|-----|----------|---------------------|-------------|--------------|
| 1   | 52031    | Kiran Mhaske        | 904         | 75.33        |
| 2   | 52025    | Geeta Kothare       | 899         | 74.92        |
| 3   | 52049    | Pratiksha Shivarkar | 891         | 74.25        |

### M.Com. (Academic Year - 2019-20)

#### M.Com. I

| No. | Seat No. | Students Name   | Credit Point |
|-----|----------|-----------------|--------------|
| 1   | 22811    | Pooja Thakar    | 272          |
| 2   | 22808    | Pratiksha Maske | 268          |
| 3   | 22812    | Swapnali Thorve | 264          |

#### M.Com II

| No. | Seat No.S | Students Name  | Marks(1600) | Percentage % |
|-----|-----------|----------------|-------------|--------------|
| 1   | 13070     | Monika Gaikwad | 1248        | 78.00        |
| 2   | 13080     | Arati Parande  | 1228        | 76.75        |
| 3   | 13051     | Divya Kamath   | 1226        | 76.63        |

### B. B. A. (C.A.) \* Academic Year - 2019-20

#### F. Y. B. B. A. (C.A.)

| No. | Seat No. | Students Name    | Credit Point |
|-----|----------|------------------|--------------|
| 1   | 3740     | Monusingh Rathod | 207          |
| 2   | 3736     | Pooja Munde      | 201          |
| 3   | 2939     | Sahil Pathan     | 192          |

#### S. Y. B. B. A. (C.A.)

| No. | Seat No. | Students Name | Marks(1200) | Percentage % |
|-----|----------|---------------|-------------|--------------|
| 1   | 39292    | Umesh Dhamale | 1077        | 89.075       |
| 2   | 39294    | Gulshan Kumar | 945         | 78.75        |
| 3   | 39301    | Roshani Pagar | 853         | 71.80        |

#### T. Y. B. B. A. (C.A.)

| No. | Seat No. | Students Name   | Marks(2400) | Percentage % |
|-----|----------|-----------------|-------------|--------------|
| 1   | 39350    | Pranita Shinde  | 1938        | 80.75        |
| 2   | 39352    | Savita Waldiya  | 1920        | 80.00        |
| 3   | 39342    | Suvarna Dhamale | 1737        | 72.37        |

**EXAMINATION RESULTS**

| D. T. L.   |          |                |            |
|--|----------|----------------|------------|
| Heartiest Congratulations to All D. T. L. Students |          |                |            |
| Academic Year - 2019-20                            |          |                |            |
| No.  | Seat No. | Students Name  | Marks(500) |
| 1  | 2140     | Divya Kamat    | 426        |
| 2  | 2160     | Sachin Wadekar | 360        |
| 3  | 2804     | Utkarsh Kale   | 358        |

**CONGRATULATIONS**

**आंतर महाविद्यालय स्पर्धा २०१९-२०**

| खेळ       | विजेता संघ  | संघनायक                                      |
|-----------|---|--|
| खो-खो     | १. मुले : एस.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.) टी.वाय.बी.कॉम.<br>२. मुली : एफ.वाय.बी.ए. | सौरभ लोखंडे<br>ऋषीकेश लोखंडे<br>सृष्टी सस्ते |
| कबड्डी    | १. मुले : एस.वाय.बी.बी.ए.(सी.ए.)<br>२. मुली : टी.वाय.बी.कॉम.              | ओंकार कानडे<br>किरण म्हस्के                  |
| क्रिकेट   | १. मुले : एफ.वाय.बी.कॉम.<br>२. मुली : टी.वाय.बी.कॉम.                      | सागर वहिले<br>गीता कोठारे                    |
| व्हॉलीबॉल | १. मुले : टी.वाय.बी.कॉम.<br>२. मुली : टी.वाय.बी.कॉम.                      | पृथ्वीराज चौधरी<br>स्वाती सगरे               |



# 2018-2019 Toppers



**Nikita Gawade**  
F.Y. B.Com. (1)



**Namrata Thakur**  
F.Y. B.Com. (2)



**Yogita Gawade**  
F.Y. B.Com. (3)



**Kiran Mhaske**  
S.Y. B.com. (1)



**Arjun Alse**  
S.Y. B.com. (2)



**Pratiksha Shivarkar**  
S.Y. B.com. (3)



**Madhuri Pande**  
T.Y. B.com. (1)



**Anita Alhat**  
T.Y. B.com. (2)



**Shubhangi Salgar**  
T.Y. B.com. (3)



**Rutuja Sangve**  
F.Y. B.A. (1)



**Neha Kumari**  
F.Y. B.A. (2)



**Shivkanya Shelke**  
F.Y. B.A. (3)



**Shubham Sawant**  
S.Y. B.A. (1)



**Komal Pawar**  
S.Y. B.A. (2)



**Ashwini Kurhade**  
S.Y. B.A. (3)

# 2018-2019 Toppers



**Monika Potale**  
T.Y. B.A. (1)



**Vijaya Ingale**  
T.Y. B.A. (2)



**Pallavi Gaikwad**  
T.Y. B.A. (3)



**Umesh Dhamale**  
F.Y. B.C.A. (1)



**Gulshan Kumar**  
F.Y. B.C.A. (2)



**Omkar Kanade**  
F.Y. B.C.A. (3)



**Pranita Shinde**  
S.Y. B.C.A. (1)



**Savita Waldiya**  
S.Y. B.C.A. (2)



**Suvarna Dharmale**  
S.Y. B.C.A. (3)



**Geeta Yadav**  
T.Y. B.C.A. (1)



**Farana Shaikh**  
T.Y. B.C.A. (2)



**Megha Lokhande**  
T.Y. B.C.A. (3)



**Pratiksha Vahile**  
M.A. Eco. I (1)



**Aarti Thorave**  
M.A. Eco. I (2)



**Harsha Chimankar**  
M.A. Eco. I (3)



**Pallavi Jadhav**  
M.A. Eco. II (1)

# 2018-2019 Toppers



**Sampada Talekar**  
M.A. Eco. II (2)



**Sangita Kudi**  
M.A. Eco. II (3)



**Sonal Sonawane**  
M.A. Eng. I (1)



**Rohini Mahadik**  
M.A. Eng. I (2)



**Monika Bhagwat**  
M.A. Eng. I (3)



**Nana Bodade**  
M.A. Eng. II (1)



**Amit Patil**  
M.A. Eng. II (2)



**Neeta Yadav**  
M.A. Eng. II (3)



**Monika Gaikwad**  
M. Com. I (1)



**Arti Parande**  
M. Com. I (2)



**Nikita Ghundre**  
M. Com. I (3)



**Kiran Gaikwad**  
M. Com. II (1)



**Shweta Tapkir**  
M. Com. II (2)



**Priyanka Dumbre**  
M. Com. II (3)



**Santosh Bhambure**  
D.T.L. (1)



**Suman Anchal**  
D.T.L. (2)



**Swati Sarode**  
D.T.L. (3)

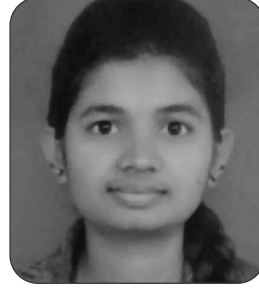
# 2019-2020 Toppers



**Yogita Bhadalkar**  
F.Y. B.Com. 1 (1)



**Sakshi Chaudhari**  
F.Y. B.Com. 1 (2)



**Prajakta Ghodke**  
F.Y. B.Com. (2)



**Sania Mulani**  
F.Y. B.Com. (3)



**Namrata Thakur**  
S.Y. B.Com. (1)



**Yogita Gawade**  
S.Y. B.Com. 2 (1)



**Dnyaneshwar Pagire**  
S.Y. B.Com. 2 (2)



**Nikita Gawade**  
S.Y. B.Com. (3)



**Kiran Mhaske**  
T.Y. B.Com. (1)



**Geeta Kothare**  
T.Y. B.Com. (2)



**Pratiksha Shivarkar**  
T.Y. B.Com. (3)



**Pooja Thakur**  
M. Com. I (1)



**Pratiksha Maske**  
M. Com. I (2)



**Swapnali Thorave**  
M. Com. I (3)



**Monika Gaikwad**  
M. Com. II (1)



**Arti Parande**  
M. Com. II (2)



# 2019-2020 Toppers



**Divya Kamat**  
M. Com. II (3), D.T.L. (1)



**Sachin Wadekar**  
D.T.L. (2)



**Utkarsh Kale**  
D.T.L. (3)



**Sangita Joshi**  
M.A. Eco. I (1)



**Supriya Gaikwad**  
M.A. Eco. I (2)



**Poonam Pawar**  
M.A. Eco. I (3)



**Aarti Thorave**  
M.A. Eco. II (1)



**Pratiksha Vahile**  
M.A. Eco. II (2)



**Megha Chaudhary**  
M.A. Eco. II (3)



**Gopal Ghuge**  
F.Y. B.A. 1 (1)



**Arpita Shivaneekar**  
F.Y. B.A. 1 (2)



**Akash Tegale**  
F.Y. B.A. 1 (3)



**Radhika Vahile**  
F.Y. B.A. 1 (4)



**Nikita Hole**  
F.Y. B.A. 2 (1)



**Sunita Shriram**  
F.Y. B.A. 2 (2)



**Simran Tamboli**  
F.Y. B.A. 2 (3)

# 2019-2020 Toppers



**Rutuja Thakur**  
F.Y. B.A. 2 (4)



**Sonali Thosar**  
F.Y. B.A. 2 (5)



**Shila Bidve**  
F.Y. B.A. 3 (1)



**Ramdas Karhale**  
F.Y. B.A. 3 (2)



**Shivkanya Shelke**  
S.Y. B.A. (1)



**Neha Kumari**  
S.Y. B.A. (2)



**Rutuja Sangve**  
S.Y. B.A. (3)



**Shubham Sawant**  
T.Y. B.A. (1)



**Komal Pawar**  
T.Y. B.A. (2)



**Ashwini Kurhade**  
T.Y. B.A. (3)



**Anagha Barde**  
M.A. Eng. I (1)



**Nitu Sharma**  
M.A. Eng. I (2)



**Vinod Dhengale**  
M.A. Eng. I (3)



**Sonal Sonawane**  
M.A. Eng. II (1)



**Rohini Mahadik**  
M.A. Eng. II (2)



**Monika Bhagwat**  
M.A. Eng. II (3)

# 2019-2020 Toppers



**Monusingh Rathod**  
F.Y. B.B.A. (1)



**Pooja Munde**  
F.Y. B.B.A. (2)



**Sahil Pathan**  
F.Y. B.B.A. (3)



**Umesh Dhamale**  
S.Y. B.B.A. (1)



**Gulshan Kumar**  
S.Y. B.B.A. (2)



**Roshani Pagar**  
S.Y. B.B.A. (3)



**Pranita Shinde**  
T.Y. B.B.A. (1)



**Savita Waldiya**  
T.Y. B.B.A. (2)



**Suvarna Dharmale**  
T.Y. B.B.A. (3)

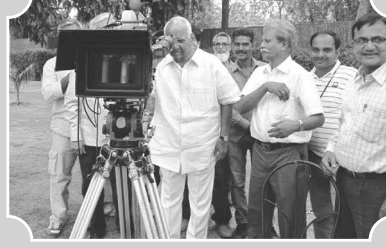
विद्यार्थी अभ्यासात जसे टॉपर... सामाजिक बांधिलकीतही तत्पर!!





आदरणीय लोकनेते खा. शरदचंद्रजी पवार  
यांच्या वाढदिवसाच्या निमित्ताने  
राष्ट्रीय सेवा योजना विभागातर्फे आयोजित, सर्व तरुणाईसाठी राज्यस्तरीय 'ऑनलाईन'  
**'ज्ञानविलास'**  
**वक्तृत्व स्पर्धा**





# याध्या @ 80

ज्ञानेश्वरी महसे - लोकशाहीचा चौथा स्तंभ दासळत आहे का?

आदरणीय लोकनेते खा. शरदचंद्रजी पवार यांच्या वाढदिवसाच्या निमित्ताने श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय बुद्रुकगाव (आळंदी), जि. पुणे राष्ट्रीय सेवा योजना विभागातर्फे आयोजित, सर्व तरुणाईसाठी.... राज्यस्तरीय... ONLINE 'ज्ञानविलास' वक्तृत्व स्पर्धा

ज्ञानेश्वरी महसे  
लोकशाहीचा चौथा स्तंभ दासळत आहे का...?

0:00 / 5:51

ज्ञानविलास राज्यस्तरीय Online वक्तृत्व स्पर्धा निकाल LIVE

मा. विश्वनाथ

याध्या @ 80

0:42 / 5:15

मयूर नरुटे - लोकशाहीचा चौथा स्तंभ दासळत आहे का?

आदरणीय लोकनेते खा. शरदचंद्रजी पवार यांच्या वाढदिवसाच्या निमित्ताने श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय बुद्रुकगाव (आळंदी), जि. पुणे राष्ट्रीय सेवा योजना विभागातर्फे आयोजित, सर्व तरुणाईसाठी.... राज्यस्तरीय... ONLINE 'ज्ञानविलास' वक्तृत्व स्पर्धा

मयूर नरुटे  
लोकशाहीचा चौथा स्तंभ दासळत आहे का?

0:01 / 4:37

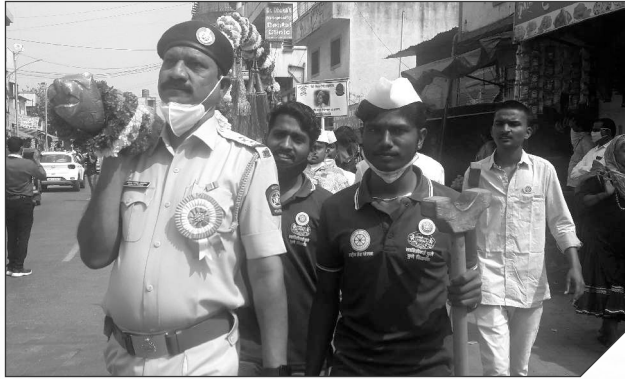
**राज्यस्तरीय 'ज्ञानविलास वक्तृत्व स्पर्धा'**

शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजना विभागातर्फे ऑनलाईन घेण्यात आलेली राज्यस्तरीय 'ज्ञानविलास वक्तृत्व स्पर्धा' महाराष्ट्रातून आलेल्या उदंड प्रतिसाद व सक्षम वैचारिक वक्तृत्वाने चांगलीच यशस्वी झाली.

कोरोनाच्या पार्श्वभूमीवर सुरक्षिततेच्या दृष्टीने स्पर्धकांनी आपल्या घरूनच भाषणाची चित्रफीत पाठवली. तज्ज्ञ परिक्षकांनी त्यातून विजेते घोषित केले. विजेत्यांना बक्षीस व प्रमाणपत्र घरपोच पाठवण्यात आले. राज्यभरातील विशेषतः अगदी ग्रामीण भागाच्या कानाकोपऱ्यातून सहभागी झाले होते.

# राष्ट्रीय सेवा योजनेअंतर्गत केलेली वाटचाल

विविध श्रमसंस्कार शिबिर, मान्यवरांचे मार्गदर्शनपर व्याख्यान इत्यादींचे हे प्रातिनिधीक प्रतिबिंब



# राष्ट्रीय सेवा योजनेअंतर्गत केलेली वाटचाल

एन.एस.एस.च्या विद्यार्थ्यांनी मिळविलेले पुरस्कार, मान्यवरांचे मार्गदर्शन इत्यादींचे हे प्रातिनिधीक प्रतिबिंब



## तीन दशकांचे शैक्षणिक योगदान देणाऱ्या संस्थेची

मागील वर्षातील कौतुकास्पद...

# वाटचाल



उत्साहात संपन्न झालेला पदवीदान समारंभ



स्पर्धा परीक्षा कार्यशाळेत विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करताना  
पो. उपायुक्त श्री. योगेश मदने



सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ (वाणिज्य शाखा) मा.अधिष्ठाता  
डॉ. सुधाकर जाधवर यांना 'ज्ञानदीप' अंक देताना



ज्ञानदीप व्याख्यानमाला प्रसंगी 'ज्ञानदीप' अंकाचे प्रकाशन



अंतिम वर्षातील उत्तीर्ण विद्यार्थ्यांचा 'निरोप समारंभ'



आधुनिक काळाशी सुसंगत अशी संस्थेतील संगणक लॅब



विद्यार्थ्यांच्या अंगभूत गुणांना वाव देणारे

वैशिष्ट्यपूर्ण वार्षिक स्नेहसंमेलन

# अंतरंग



प्रमुख पाहुणे गायक कौस्तुभ व कार्तिकी गायकवाड यांचे स्वागत करताना विद्यार्थिनी



संस्थेचे सचिव, श्री. वैभव तांबे यांचा सत्कार, शेजारी कोषाध्यक्ष श्री. मयूर ढमाले व श्री. नितीन अप्पा काळजे (नगरसेवक)



प्रमुख पाहुण्यांच्या उपस्थितीत श्रीफळ वाढवून 'अंतरंग' स्नेहसंमेलनाचे उद्घाटन



'अंतरंग'चे प्रमुख पाहुणे पो. निरीक्षक श्री. रवींद्र पन्हाळे



पारंपरिक लोकगीताच्या सादरकरणातून संस्कृती जपणारे विद्यार्थी



'अंतरंग' संमेलनास मिळणारा उत्स्फूर्त प्रतिसाद



# संस्थेच्या विविध उपक्रमांचे वृत्तपत्रीय

# प्रतिबिंब

**पवार महाविद्यालयात मान्यवरांचा सन्मान करताना प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ.**

**पवार महाविद्यालयाचे स्नेहसंमेलन**

**आळंदी : डुडूळगाव, आळंदी देवाची येथील गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित, शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयाचे वार्षिक स्नेहसंमेलन उत्साहात झाले. या प्रसंगी मंचावर राष्ट्रवादी युवक काँग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष रविकांत वर्पे, माजी महापौर नितान काळे, गायक कार्तिकी गायकवाड, कौरमुत गायकवाड, पोलिस उपनिरीक्षक रवींद्र पहाड, संस्थेचे सचिव वैभव तांबे, मयूर ढमाले, डॉ. राजीव पाटील, प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ, मुख्यध्यापिका शीतल पाटील, डॉ. प्रमोद इंगळे आदी उपस्थित होते. स्नेहसंमेलनासाठी प्रा. डॉ. विशाल गायकवाड, प्रा. शाहू येवते, प्रा. संजीव कांबळे, प्रा. दिलीप बारी, प्रा. कैलास अस्तंत प्रा. चांदपाशा मुल्ला, प्रा. परमेश्वर भतासे, प्रा. कृष्णा मिटक, उषा गायकवाड, प्रा. डॉ. छाया जोशी, अनिल आमले, प्रा. मा. कसाब यांनी विशेष परिश्रम घेतले. सूत्रसंचालन पल्लवी गायव व योगेश शिंदे यांनी केले, तर डॉ. रणजित कदम यांनी आभार मा**

## जीवनात यशस्वीतेसाठी नैतिकता महत्त्वाची : ज्ञानेश्वर मेश्राम

**पवार महाविद्यालयात पारितोषिक वितरण उत्साहात**

आळंदी : कर्तव्य आणि नैतिकतेचे पालन करणे हे जीवनाचे अत्यावश्यक घटक असल्याचे ज्ञानेश्वर मेश्राम यांनी यावेळी म्हटले. त्यांनी यावेळी विद्यार्थ्यांना नैतिकतेचे महत्त्व सांगितले. त्यांनी म्हटले की, नैतिकतेचा विकास केवळ शाळातच होऊ शकतो, तर जीवनात तो जिरणे हे प्रत्येकाचे कर्तव्य आहे. त्यांनी विद्यार्थ्यांना विचारले की, तुम्हाला नैतिकतेचा विकास कसा होऊ शकतो? त्यांच्या या प्रश्नांवर विद्यार्थ्यांनी उत्तरे दिली. त्यांच्या उत्तरांवर मेश्राम यांनी प्रतिक्रिया दिली. त्यांनी म्हटले की, नैतिकतेचा विकास केवळ शाळातच होऊ शकतो, तर जीवनात तो जिरणे हे प्रत्येकाचे कर्तव्य आहे. त्यांनी विद्यार्थ्यांना विचारले की, तुम्हाला नैतिकतेचा विकास कसा होऊ शकतो? त्यांच्या या प्रश्नांवर विद्यार्थ्यांनी उत्तरे दिली. त्यांच्या उत्तरांवर मेश्राम यांनी प्रतिक्रिया दिली.



पारितोषिक वितरण करताना ज्ञानेश्वर मेश्राम, अधिकाऱ्यांवर सन्मान, डॉ. शिवाजी कलामे व प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ.



## स्वच्छता अभियानात सहभागी विद्यार्थी आणि शिक्षक.

**पवार महाविद्यालयात स्वच्छता अभियान**

**आळंदी :** गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ, ओंठूर संचालित शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय, आळंदी येथे महात्मा गांधी जयंती व पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांच्या स्वच्छता अभियानांतर्गत स्वच्छता अभियान झाले. महाविद्यालयातील वार्ड, वाचनालय, ग्रंथालय, शौचालय, क्रीडांगण व महाविद्यालयातील परिसर विद्यार्थ्यांनी स्वच्छ करून स्वच्छता अभियान राबविण्यात आले. यामध्ये महाविद्यालयातील विद्यार्थी, प्राध्यापक व शिक्षकेतर कर्मचारी यांनी उत्स्फूर्तपणे सहभाग घेतला होता. याप्रसंगी धोण्यात आलेल्या कार्यक्रमात महाविद्यालयातील अनेक वर्षांपासून स्वच्छता करणाऱ्या श्रीयुग अशोक, विनोद मोगल, अतुल वैद्य या कर्मचाऱ्यांचा सत्कार करण्यात आला. उपक्रमाचे आयोजन संस्थेचे खाजिनार मयूर ढमाले, महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांच्या मार्गदर्शनाखाली राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग, सांस्कृतिक विभाग व विद्यार्थी कल्याण मंडळ यांनी संयुक्तपणे केले होते.

## सायबर सुरक्षेवरील व्याख्यान उत्साहात पडले पार

**पवार महाविद्यालयातर्फे राबविला उपक्रम**

**आळंदी :** १९ व्या जयंती दिनात ज्ञानदीप व्याख्यानमालेचे ४ वे पुणे पुस्तक सन्मानित आले. महाविद्यालयाच्या सांस्कृतिक विभागाच्यावतीने ज्ञानदीप व्याख्यानमालेचे आयोजन करण्यात आले होते. यावेळी विविध मान्यवरांनी यशस्वीपणे व्याख्यान दिले आणि त्यांचा पुढील आव्हान तसेच सायबर सुरक्षा व विषयवस्तू व्याख्यानमालेत विचार व्यक्त केले. अत्यवधानाने प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ होते.



**विविध विषयांवर केले मार्गदर्शन**

**आळंदी :** यावेळी प्रमुख अतिथी म्हणून डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले. गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाचे अध्यक्ष मयूर ढमाले, पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय यांच्या संयुक्त विद्यमान आयोजन करण्यात आले होते. यावेळी डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले. यावेळी डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले. यावेळी डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले. यावेळी डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले.

## ऑनलाईन वक्तृत्व स्पर्धेत ऋषिकेश पवार प्रथम

हर्षवर्धन आळसे, संजना बंडी यांचे यश

लोकमत न्यूज नेटवर्क  
पुणे : गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयाच्या (डुडूळगाव) राष्ट्रीय सेवा योजनेतर्फे ऑनलाईन वक्तृत्व स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले होते. या स्पर्धेत ऋषिकेश पवार यांनी प्रथम क्रमांक पटवडविला. शिंदे अनिल आळसे (द्वितीय), संजना बंडी (तृतीय), तर उत्तमवर्धन परितोषिक भास्कर विशे व अनुशा कोणारी यांना जाहीर करण्यात आले.



## मान्यवरांचा सन्मान करताना प्राचार्य पांडुरंग मिसाळ.

**पवार महाविद्यालयात युवा सप्ताह**

**आळंदी :** श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित, आळंदी देवाची येथील डुडूळगावचे शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात आयोजित युवा सप्ताह उत्साहात पार पडला. सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ व राष्ट्रीय सेवा योजना यांचे वतीने हा उपक्रम राबविला होता. यास भगवान महावीर शिक्षण संस्था, भोसरी, अध्यक्ष प्रा. डॉ. अशोक पणारीया, अध्यक्ष, प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ, अध्यक्ष प्रा. डॉ. अशोक पणारीया, अध्यक्ष, प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ, प्रा. कैलास अस्तंतकर, प्रा. चांदपाशा मुल्ला, प्रा. शाहूराज येवते, प्रा. कृष्ण मिटक, डॉ. विशाल गायकवाड, डॉ. रणजित कदम, प्रा. परमेश्वर भतासे, अनिल आमले, प्रा. माणिक कसाब, प्रा. कैलास अस्तंतकर आदी मान्यवर उपस्थित होते. डॉ. विशाल गायकवाड यांनी प्रास्ताविक केले. प्रा. कृष्णा शेळके व पुनम शिरोडकर यांनी सूत्रसंचालन केले. प्रा. कृष्णा मिटक यांनी आभार मानले.



## विविध कलागुणांमध्ये प्रावीण्य मिळविलेल्या विद्यार्थ्यांचा सन्मान करताना मान्यवर.

## 'रासेयो'तून मिळतात समाजसेवेचे धडे

**प्रा. तेज निवळीकर यांचे प्रतिपादन**

**आळंदी : वार्ताहर**

राष्ट्रीय सेवा योजनेचा विद्यार्थी आत्मभान विसरून एकता, एकात्मता, संघटन, समाजसेवा व समय सूचकता या मूल्यांकडे आकर्षित होतो. विचाराप्रामाणे निर्णय घेऊन कृती करते, असे मत प्रौढ निरंतर शिक्षण व विद्यार्थी विकास मंडळाचे निवृत्त संचालक प्रा. तेज निवळीकर यांनी व्यक्त केले.

विविध कलागुणात प्रावीण्य मिळविलेल्या विद्यार्थ्यांचा राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या वतीने गौरव करण्यात आला. डुडूळगाव (आळंदी देवाची) येथील श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात हा उपक्रम राबविण्यात आला. या वेळी प्रा. निवळीकर बोलत होते. राष्ट्रीय सेवा योजना जिल्हा समन्वयक डॉ. शिवाजी पाचारणे, डॉ. सविता कुलकर्णी, प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ, प्रा. संजीव कांबळे, डॉ. विशाल गायकवाड, प्रा. शाहूराज येवते, डॉ. रणजित कदम आदी उपस्थित होते. प्रास्ताविक डॉ. विशाल गायकवाड, तर सूत्रसंचालन राजवर्धन औताडे यांनी केले. प्रा. परमेश्वर

## निमागाव येथे विशेष श्रमसंस्कार शिबिर



**निमागाव खंडोबा (ता. खेड) येथे विशेष श्रमसंस्कार शिबिर कार्यक्रमामध्ये विद्यार्थ्यांनी शोषखंडे तयार केले.**

प्रा. शिंदे, मंहेरा शिंदे, संपत तांबे, सर्व प्राध्यापक, कार्यक्रम अधिकारी, विद्यार्थी आणि ग्रामस्थ उपस्थित होते. विद्यार्थ्यांनी उत्तुष्ट कार्य केवळ्यावून निमागाव ग्रामस्थ व ग्रामपंचायत पार मिनागाव खंडोबा हट्टीकरून समाजचिन्ह देऊन गौरविण्यात आले कार्यक्रमामध्ये उद्घाटन संपन्न यशस्वीराने पार पडले. यावेळी निमागाव खंडोबा हट्टीकरून समाजचिन्ह देऊन गौरविण्यात आले.

## वाडा येथे श्रमसंस्कार शिबिर उत्साहात

**शरदचंद्र पवार महाविद्यालयाच्या वन्यसेवकांनी ग्रामस्वच्छता करून बांधले वनाई बंधारे**

**आळंदी : वार्ताहर**

शरदचंद्र पवार महाविद्यालयाच्या वन्यसेवकांनी ग्रामस्वच्छता करून बांधले वनाई बंधारे. यावेळी प्रा. शिवाजी कलामे व प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले.

वाडा येथे श्रमसंस्कार शिबिर उत्साहात पार पडले. यावेळी प्रा. शिवाजी कलामे व प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले. यावेळी प्रा. शिवाजी कलामे व प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी मार्गदर्शन केले.



पवार डॉ. भवराजसह विविध विद्यार्थ्यांनी बांधले वनाई बंधारे. (समाज - निमागाव)

संस्थेच्या विविध उपक्रमांचे वृत्तपत्रीय

प्रतिबिंब

पवार महाविद्यालयात व्याख्यानमाला

उत्साहात

लोकमत न्यूज नेटवर्क

आळंदी : श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचलित शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयाचे संस्थापक शिक्षण महर्षी स्व. विलासराव तांबे यांच्या ७१व्या जयंती दिनी सांस्कृतिक विभागाच्या वतीने ज्ञानदीप व्याख्यानमाला उत्साहात पार पडली.

अध्यक्षस्थानी प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ अध्यक्षस्थानी होते. मंचावर 'लोकमत'चे पत्रकार हनुमंत पाटील, ज्ञानेश्वर शिक्षण संस्थेचे सचिव अजित वडगावकर, पोलीस निरीक्षक गुढे अन्वेषण शाखा पी. व्ही. जाधव, प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ, प्रा. डॉ. रंजित कदम, प्रा. माणिक कसाब आदी उपस्थित होते.

याप्रसंगी अश्विनी कुन्हाडे व मयूरी जुवारे यांनी स्वागत गीत गायले. प्रास्ताविक प्रा. डॉ. रणजित कदम यांनी केले. सूत्रसंचालन प्रा. दिलीप बारी यांनी केले. आभार प्रा. वसंत साळुंखे यांनी मानले. साप्ताहिक संपादनाने व्याख्यानमालेची सांगता झाली.

पवार महाविद्यालय 'उत्कृष्ट'

आळंदी : वार्ताहर

गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ संचलित शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयास उत्कृष्ट महाविद्यालयाचा मान मिळाला. यानिमित्त प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ, उत्कृष्ट कार्यक्रम अधिकारी म्हणून डॉ. विशाल गायकवाड, उत्कृष्ट संघनायक म्हणून प्रा. कृष्णा मिटकर आणि उत्कृष्ट स्वयंसेविका म्हणून प्रतीक्षा म्हस्के यांना गौरविण्यात आले.

पवार महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाने केलेल्या

उत्कृष्ट कामाबद्दल राज्य शासनाचा राज्य स्तरीय उत्कृष्ट महाविद्यालय व कार्यक्रम अधिकारी पुरस्कार जाहीर झाला आहे. याबद्दल सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ आयोजित युवा सन्मान वार्षिक पुरस्कार वितरण सोहळ्यात हा गौरव करण्यात आला. या वेळी प्र कुलगुरु डॉ. एन. एस. उमरानी, व्यवस्थापन सदस्य डॉ. राजेश पांडे, डॉ. संजय चाकने, डॉ. विलास उगले, डॉ. भाग्यश्री मनठालकर व राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचे संचालक डॉ. प्रभाकर देसाई उपस्थित होते.



सन्मान : आळंदीतील शरदचंद्र पवार महाविद्यालयात पदवीग्रहण समारंभात मान्यवरांचा सन्मान करण्यात आला.

पवार महाविद्यालयात पदवीग्रहण समारंभ

आळंदी : प्रमाणपत्रांचे वाटप

लोकमत न्यूज नेटवर्क

पिंपरी : आळंदी येथील शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात पदवीग्रहण झाला. कार्यक्रमामधी सुरुवात मिरवणूक, दीपप्रज्वलन व विद्यापीठ गीताने झाली. या वेळी सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाचे मराठी विभागाचे डॉ. नुकसाम गोंगटे, मान्य विद्याशाखा व मराठी अभ्यासमंडळ सदस्य डॉ. संदीप सांगळे, प्राचार्य पांडुरंग मिसाळ, सचिव धोरवे, संजय कांबळे आदी उपस्थित होते.

प्रतीक्षा म्हस्के हिने स्वागत गीतातून पाहण्याचे स्वागत केले. डॉ.

संदीप सांगळे यांनी सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाची पदवी ही सहजासहजी मिळत नसून, त्या पदवीचे महत्त्व लक्षात घेऊन राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रनिष्ठा, सेवाभाव व बांधिलकी उराशी घालून सतत प्रयत्नशील असावे, असे मार्गदर्शन केले. या वेळी सर्व विद्यार्थ्यांना पदवी प्रमाणपत्राचे वितरण करण्यात आले. पदवीग्रहण केलेल्या विद्यार्थ्यांनी या वेळी आनंद व्यक्त केला. मान्यवरांनी भावी आयुष्यासाठी शुभेच्छा दिल्या. प्रा. संजय कांबळे यांनी प्रास्ताविक केले. दिलीप बारी यांनी सूत्रसंचालन केले. केलास अस्तारक यांनी आभार मानले.

पवार महाविद्यालयात युवा सप्ताह

आळंदी : वार्ताहर

श्री गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळ, अंतर्गत सांस्कृतिक शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ व राष्ट्रीय सेवा यांना यांच्या संयुक्त विद्यमाने युवा विवेकनिष्ठ स्वयंसेविकांसाठी यशासाठी आनंदजन कार्यक्रमाले आले आहे.

हा सप्ताह होणार आहे. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक प्रा. डॉ. विशाल गायकवाड यांनी केले. स्वातंत्र्यप्रीति पुरीला सतत दिवसात घेण्याचा नवकृत्य रम्या, याद-विवाह रम्या, गीतगणन व कार्यवाहन रम्या, निबंध रम्या, पोस्टर रम्या, गोष्टी रम्या, पद्यरचना व मैत्रीचे केंद्र इत्यादी उपक्रमाने कार्यवाही दिली. त्यानंतर राधादास विनायक नाईपड व स्वामी विवेकानंद यांच्या जयंतीचे औचित्य साधत कृष्णा शळेकर व नू अनिकेत ठोंगे या विद्यार्थ्यांनी मनोगते व्यक्त केली. कार्यक्रमाचे आयोजन संस्थेचे



सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाचा सन्मान स्वीकारताना पवार महाविद्यालयाचे पदाधिकारी.

जिद्दी विद्यार्थी यशस्वी होतो : मिसाळ

च-होली, ता. १८ : नेहमी नवीन काहीतरी शिकण्याची जिद्द असणारा विद्यार्थी यशस्वी होतो, असा सल्ला शरदचंद्र पवार महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ यांनी विद्यार्थ्यांना दिला. वाणिज्य शाखेच्या पदव्युत्तर विद्यार्थ्यांच्या निरोप समारंभात ते बोलत होते. मिसाळ म्हणाले, "तुमचे ज्ञान गाळेले नाही. यानंतरही

यशासाठी प्रामाणिकपणा, कठोर परिश्रम महत्त्वाचे सहायक पोलिस आयुक्त मदनने; पवार महाविद्यालयात विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन

मोदी : वार्ताहर  
डुडुळगाव (ता. खेड) येथील गजानन महाराज शिक्षण प्रसारक मंडळाच्या शरदचंद्र पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालयात शिक्षण महर्षी स्व. विलासराव तांबे सर यांच्या जयंतीनिमित्त आयोजित ज्ञानदीप व्याख्यानमालेत स्वादल, मध्य प्रदेश येथील सहायक पोलिस आयुक्त, योगेश मदनने यांचे महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांसाठी व्याख्यानचे आयोजन केले होते. ते आगच्या विद्यार्थ्यां आणि व्यापक परिष्कार वाढविण्यावर बोलत होते. या प्रसंगी व्याख्यानकार महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. पांडुरंग मिसाळ, प्रा. रणजित कदम उपस्थित होते.



स्वादल, मध्य प्रदेश येथील सहायक पोलिस आयुक्त, योगेश मदनने यांचा सन्मान कर्तताना प्राचार्य पांडुरंग मिसाळ व इतर मान्यवरा.

वेळ, चांगल्याने मार्गदर्शन, त्या दिनाचे योग्य सतत प्रयत्न करणे मग यश आसण्या पायासाठी येईल. शिक्षण महर्षी स्व. विलासराव तांबे यांच्या जयंतीनिमित्त आयोजित ज्ञानदीप व्याख्यानमालेत स्वादल, मध्य प्रदेश येथील सहायक पोलिस आयुक्त, योगेश मदनने यांचा सन्मान कर्तताना प्राचार्य पांडुरंग मिसाळ व इतर मान्यवरा.

श्रम संस्कार शिबिर अंतर्गत महास्वच्छता अभियान

निर्माणवा दावडी येथे रासेयो स्वयंसेवकांचा उपक्रम; आणखी ३ दिवस चालणार शिबिर

निर्माणवा दावडी : वार्ताहर  
आजही ३ दिवस चालणार शिबिर अंतर्गत महास्वच्छता अभियान. या उपक्रमात स्वयंसेवकांनी शिबिरात सहभागी होऊन स्वच्छता अभियानात सहभाग घेतला आहे. या उपक्रमात स्वयंसेवकांनी शिबिरात सहभागी होऊन स्वच्छता अभियानात सहभाग घेतला आहे.



निर्माणवा दावडी (ता. खेड) येथे शरदचंद्र पवार महाविद्यालयात पार पडलेल्या ज्ञानदीप व्याख्यानमालेत स्वादल, मध्य प्रदेश येथील सहायक पोलिस आयुक्त, योगेश मदनने यांचा सन्मान कर्तताना प्राचार्य पांडुरंग मिसाळ व इतर मान्यवरा.

# पसायदान

## ॥ पसायदान ॥



आतां विश्वात्मकें देवें । येणें वाग्यज्ञें तोषावें।  
 तोषोनि मज द्यावे । पसायदान हें ॥१॥  
 जे खळांची व्यंकटी सांडो । तथा सत्कर्मी रती वाढो।  
 भुतां परस्परें जडो । मैत्र जीवांचे ॥२॥  
 दुरितांचें तिमिर जावो । विश्व स्वधर्मसूर्ये पाहो।  
 जो जे वांछील तो तें लाहो । प्राणिजात ॥३॥  
 वर्षत सकळमंगळीं । ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी ॥  
 अनवरत भूमंडळी । भेटतु भूतां ॥४॥  
 चला कल्पतरूंचे आरव ॥ चेतना चिंतामणीचे गांव।  
 बोलते जे अर्णव । पीयूषाचे ॥५॥  
 चंद्रमे जे अलांछन । मार्तंड ते तापहीन।  
 ते सर्वाही सदा सज्जन । सोयरे होतु ॥६॥  
 किंबहुना सर्वसुखीं । पुर्ण होवूनि तिहीं लोकीं।  
 भजिजो आदिपुरूखीं । अखंडित ॥७॥  
 आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषीं लोकीं इयें।  
 दृष्टादृष्टविजीयें । होआवें जी ॥८॥  
 येथ म्हणे श्री विश्वेशरावो । हा होईल दानपसावो।  
 येणे बरें ज्ञानदेवो । सुखिया झाला ॥९॥

